(Reg. No. : 2024/RAN/4257/BK4/383)

जोसारू स्पंदन-3

Journalism Old Students Association of Ranchi University, Ranchi (JOSARU)
स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय, राँची
School of Mass Communication, Ranchi University, Morabadi Campus, Ranchi-834008
ourjosaru@gmail.com https : //twitter.com/JOSARU01

SARALA BIRLA UNIVERSITY

ADITYA BIRLA GROUP

B K BIRLA GROUP OF COMPANIES

ADMISSION OPEN 2025-26

UNLOCKING MEDIA OPPORTUNITIES

BJMC

Bachelor of Journalism & Mass Communication

MJMC

Master of Journalism & Mass Communication

Attraction	Career Prospects
✓ Modern Studio	✓ Journalist (Reporter/News Anchor/Editor
✓ Smart Classes	✓ Public Relations officer
✓ Individual Lab for TV,	✓ Digital Marketing Event Manager
✓ Radio & Photography	✓ Social Media Influencer ✓ Film Maker
✓ Hi-tech Computer Lab	✓ Graphic Designer
✓ Mini Theater	✓ Communication Strategist
✓ Amphitheater	✓ Blogger I Media Planner

SARALA BIRLA UNIVERSITY, RANCHI

Birla Knowledge City, P.O. Mahilong, Purulia Road, Ranchi, Jharkhand-835103

Admission Helpline : 1800 890 6077 admissions@sbu.ac.in www.sbu.ac.in

(Reg. No. : 2024/RAN/4257/BK4/383)

जोसारू स्पंदन-3

जोसारू के सभी सदस्यों को समर्पित

सम्पादकीय मंडल

डॉ. राज श्रीवास्तव
बी.जे.एम.सी. 1990-91

सुधीर पाल
बी.जे.एम.सी. 1992-93
एम.जे.एम.सी. 2009-11

डॉ. भीम प्रभाकर
बी.जे.एम.सी. 2004-05

संजय खंडेलवाल
बी.जे.एम.सी. 2005-06
एम.जे.एम.सी. 2009-11

अजय कुमार
बी.जे.एम.सी. 1996-97

स्कूल ऑफ मॉस कम्युनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय, राँची

2025 – विभागीय सदस्य

Dr. Basant Kr. Jha
Director

Dr. V. C. Mahato
Dy. Director

Santosh Oraon
Faculty

P.S. Tiwari

Manoj Kr.Sharma

Dahru Toppo

Rekha Baxla

संतोष कुमार गंगवार
राज्यपाल, झारखण्ड

सत्यमेव जयते

राज भवन, रांची-८३४००१
झारखण्ड
दूरभाष : 0651-2283465

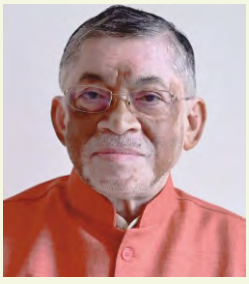

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि रांची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग (स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन) के पूर्ववर्ती विद्यार्थियों के संगठन '**जोसारू**' द्वारा दिनांक 26 जुलाई 2025 को '**वार्षिक मिलन समारोह**' का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर स्मारिका ''**स्पंदन**'' का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

पत्रकारिता केवल सूचना प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को जागरूक, सशक्त और जिम्मेदार बनाने का एक सशक्त माध्यम है। इस दृष्टि से पत्रकारिता विभाग के पूर्ववर्ती विद्यार्थियों का यह समागम न केवल स्मृतियों का आदान–प्रदान है, बल्कि एक साझा उद्देश्य के प्रति संकल्पबद्ध होने का अवसर भी है।

मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका '**स्पंदन**' न केवल '**जोसारू**' की गतिविधियों का सजीव दस्तावेज होगी, बल्कि युवा पत्रकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनेगी।

मैं '**जोसारू**' के सभी पदाधिकारियों, पूर्ववर्ती विद्यार्थियों और आयोजन से जुड़े सभी व्यक्तियों को इस सफल आयोजन एवं स्मारिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

संतोष कुमार गंगवार

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री
झारखण्ड प्रदेश

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राँची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग (स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन) के पूर्ववर्ती छात्रों का एसोसिएशन (जोसारू) आगामी 26 जुलाई 2025 को अपना वार्षिक मिलन समारोह आयोजित कर रहा है तथा इस अवसर पर स्मारिका **'स्पंदन'** प्रकाशित की जा रही है।

लोकतंत्र के सशक्त स्तंभ होने के साथ–साथ पत्रकारिता समाज का दर्पण भी है। इस विभाग के छात्र–छात्राओं ने देश भर में पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट पहचान बनाई है, यह हम सभी के लिए गर्व की बात है।

'स्पंदन' जैसी स्मारिकाएं न केवल विद्यार्थियों के रचनात्मक प्रयासों को मंच प्रदान करती हैं, बल्कि विभाग की गौरवशाली परंपराओं और उपलब्धियों को संरक्षित करने का एक प्रभावी माध्यम भी हैं।

मैं इस वार्षिक मिलन समारोह की सफलता और **'स्पंदन'** के सफल प्रकाशन हेतु हृदय से शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और आने वाली पीढ़ियों को सकारात्मक योगदान के लिए उत्साहित करेगी।

जोसारू के वार्षिक समारोह के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जोहार!

(हेमन्त सोरेन)

हरिवंश
Harivansh

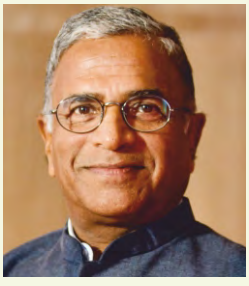

32, **संसद भवन, नई दिल्ली**
32, Parliament House, New Delhi
दूरभाष/Tel. : 23017371, 23034658
फैक्स/Fax. : 23012559

उप सभापति, राज्य सभा
Deputy Chairman, Rajya Sabha

शुभकामना संदेश

जानकर प्रसन्नता हुई कि राँची विश्वविद्यालय के प्रत्रकारिता विभाग (स्कूल ऑफ मास कम्यूनिकेशन) के पूर्ववर्ती छात्रों के एसोसिएशन 'जोसारू' का वार्षिक मिलन समारोह 26 जुलाई, 2025 को हो रहा है। इस अवसर विशेष पर स्मारिका प्रकाशन की पहल सार्थक प्रयास है। स्मारिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं।

इस संस्थान से पढ़कर या प्रशिक्षण प्राप्त कर छात्र आज देश के कोने–कोने में पत्रकारिता कर रहे हैं। सबका एक साथ मिलना, अनुभवों का साझा करना, न सिर्फ पुराने दिनों की याद दिलाएगा, बल्कि एक–दूसरे से संवाद कर, अनुभवों से सभी पत्रकार साथी समृद्ध भी होंगे। इस अवसर पर नये छात्रों की सहभागिता होगी, तो उन्हें बहुत कुछ सीखने, जानने का भी अवसर मिलेगा।

आयोजन की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

(हरिवंश)

संजय सेठ
SANJAY SETH

सत्यमेव जयते

रक्षा राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State for Defence
Government of India

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि रांची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के पूर्ववर्ती छात्रों का संगठन **जोसारू** (Journalism Old Students Association, Ranchi University) दिनांक **26 जुलाई, 2025** को पत्रकारिता विभाग में **पूर्व छात्र मिलन समारोह** का आयोजन कर रहा है।

1987 में स्थापित यह विभाग पिछले 38 वर्षों में जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। इस संस्थान से निकलकर कई पीढ़ियों के पत्रकारों ने राज्य, समाज और देश की सेवा की है। यह न केवल रांची विश्वविद्यालय बल्कि पूरे झारखंड के लिए गर्व का विषय है। इस उपलब्धि में जोसारू के सभी सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

पूर्व छात्र मिलन समारोह जैसे आयोजन केवल भूतपूर्व छात्रों का मिलन नहीं होते, बल्कि ये संस्थान की स्मृतियों, योगदानों और भविष्य की प्रेरणाओं का उत्सव होते हैं। पुराने साथियों से मिलना, अपने अनुभव साझा करना और नई पीढ़ी को मार्गदर्शन देना एक सुखद एवं प्रेरणादायक क्षण होता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने विकसित भारत@2047 की जो परिकल्पना रखी है, उसमें पत्रकारिता की भूमिका बेहद अहम है। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने स्पष्ट कहा है – ''अगले 25 वर्षों में विकसित भारत की यात्रा में समाचार पत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।''

प्रधानमंत्री जी के इस आह्वान को जोसारू जैसे संगठन साकार करने में समर्थ हैं। मुझे विश्वास है कि नये परिसर में नयी ऊर्जा और उमंगों के साथ जोसारू की यह यात्रा निरंतर प्रगति करती रहेगी।

मेरी ओर से **जोसारू** तथा **स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, रांची विश्वविद्यालय** को ढेरों शुभकामनाएँ और भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

(संजय सेठ)

रबीन्द्र नाथ महतो
अध्यक्ष
झारखण्ड विधान सभा
राँची

सत्यमेव जयते

RABINDRA NATH MAHATO
SPEAKER
JHARKHAND LEGISLATIVE ASSEMBLY
RANCHI

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार खुशी हुई कि राँची विश्वविद्यालय के प्रत्रकारिता विभाग के पूर्ववर्ती छात्रों का एसोसिएशन (JOSARU) का वार्षिक मिलन समारोह के अवसर पर स्मारिका 'स्पंदन' प्रकाशित की जा रही है।

पत्रकारिता समाज में दायित्वपूर्ण कार्य है, जो रोमांच और चुनौतियों से पूर्ण होता है। आप में समाज को दिशा देने और लोगों को सूचित और जागरूक रखने की क्षमता निहित है। सच्चाई और निष्पक्षता पत्रकारिता की नींव होती है। ऐसे में पत्रकारिता से जुड़े लोगों पर यह गुरूत्तरदायित्व होता है कि सूचनाओं की विश्वसनीयता को प्रसारित एवं प्रकाशित होने से पूर्व विषय–वस्तु का तटस्तथापूर्ण विश्लेषण किया जाए। सच्चाई को जानने के लिए उत्सुक रहें और तथ्यों को सत्यापित करने के लिए कड़ी मेहनत करें। ऐसा करके पत्रकारिता को हम और अधिक जनसरोकार से जोड़ सकते हैं।

मैं JOSARU द्वारा स्मारिका 'स्पंदन' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ, तथा समारोह के व्यवस्थापक, पत्रकार, छात्र एवं स्मारिका 'स्पंदन' के समस्त पाठकों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

15.07.25

(रबीन्द्र नाथ महतो)

शिल्पी नेहा तिर्की
मंत्री - कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड सरकार

कार्यालय: नेपाल हाऊस मंत्रालय, डोरण्डा,
राँची-834002
दूरभाष : 0651-2490518 (का0)
ई-मेल : jhar-agricultureminister@gmail.com

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राँची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग (स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन) के पूर्ववर्ती विद्यार्थियों के संगठन ''जोसारु'' द्वारा दिनांक 26 जुलाई, 2025 को ''वार्षिक मिलन समारोह" का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ''स्पंदन'' स्मारिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। स्मारिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल के सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ।

मीडिया और पत्रकारिता देश का चौथा स्तंभ है। भारत में स्थापित लोकतंत्र के प्रति जनता के विश्वास को मजबूती प्रदान करने में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। यही नहीं, देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित करने में सदियों से मीडिया अपनी अहम भूमिका निभाती चली आ रही है। विशेष कर झारखण्ड के परिपेक्ष्य में देखें तो राज्य के कई बड़े आंदोलन को आवाज देने का काम मीडिया ने बखूबी किया है। वर्तमान समय में बदलते हुए मीडिया के नये स्वरुप में ख़बरों की निष्पक्षता और तथ्यों की प्रमाणिकता जरुरी है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि झारखण्ड की मीडिया अपने दायित्व निर्वहन के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ने में जरूर कामयाब होगी।

मैं ''जोसारु'' के सभी पदाधिकारियों, पूर्ववर्ती विद्यार्थियों और आयोजन से जुड़े सभी व्यक्तियों को इस सफल आयोजन एवं स्मारिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

Shilpi N. Tirkey
17.07.2025

(शिल्पी नेहा तिर्की)

बाबूलाल मराण्डी
नेता प्रतिपक्ष (पूर्व मुख्यमंत्री)
झारखण्ड

पता : बी.पी. डी. पी. गेस्ट हाउस, मोरहाबादी,
राँची - 834008
दूरभाष : 06512960966
मोबाईल : 7004173300
ई-मेल : yourbabulal@gmai.com

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राँची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के पूर्ववर्त्ती छात्रों के एसोसिएशन (JOSARU) का मिलन समारोह का आयोजन 26 जुलाई, 2025 को राँची में आयोजित होना है। राँची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग से पढ़ाई सम्पन्न करने के बाद सैकड़ों छात्र देशभर के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों एवं विजुअल मीडिया में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं एवं पत्रकार के रूप में देश व राज्य की ज्वलन्त समस्याओं के साथ–साथ समसामयिक विषयों से आमजनों को रूबरू करा रहे हैं, जिनसे हम सभी प्रतिदिन देश के प्रमुख समाचारों एवं आलेखों से अवगत होते हैं साथ ही साथ नई जानकारियाँ प्राप्त करते है। राँची में JOSARU का यह प्रस्तावित मिलन समारोह निश्चित रूप से एक दूसरे को जानने एवं समझने का सुअवसर प्रदान करेगा और मुझे उम्मीद है कि लोकतंत्र का यह चौथा स्तम्भ और प्रखरता से देश के प्रहरी के रूप में कार्य करते रहेगा ।

मुझे यह भी जानकर प्रसन्नता हो रही है कि इस मिलन समारोह के अवसर पर एक स्मारिका ''स्पन्दन'' का प्रकाशन किया जाएगा।

मैं, इस मिलन समारोह की सफलता की कामना करते हुए इसके आयोजकों को अग्रिम बधाई देता हूँ साथ ही इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका ''स्पन्दन'' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

धन्यवाद !

आपका

(बाबूलाल मराण्डी)
15.8.2025

Prof. (Dr.) Dinesh Kumar Singh
Vice-Chancellor
प्रो० (डॉ.) दिनेश कुमार सिंह
कुलपति

RANCHI UNIVERSITY, RANCHI
Ph. :0651-2214077 (O), Mob. : +91-9412931556
Website : www.ranchiuniversity.ac.in
E-mail : dks1233@gmail.com
vc@ranchiuniversity.ac.in
vc.ranchiuniversity@gmail.ocm

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि स्कूल ऑफ मॉस कॉम्यूनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय, राँची द्वारा पूर्ववर्त्ती छात्रों का एक मिलन समारोह (Alumni Meet) '**स्पंदन–2025**' का आयोजन दिनांक 26 जुलाई 2025 को हो रहा है, जिसमें देश–विदेश में कार्यरत इस विभाग के पूर्ववर्ती छात्र–छात्राएं जुड़ रहे हैं।

यहां के विद्यार्थी अनेक प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं और अपने विभाग के साथ–साथ राँची विश्वविद्यालय की गरिमा को भी बनाये हुए हैं। इन्हीं पूर्ववती छात्रों द्वारा '**स्पंदन–2025**' नामक एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। जो अत्यंत प्रशंसनीय है।

मैं '**स्पंदन–2025**' की सफलता एवं विभाग के सभी छात्र–छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

22/07/25

प्रो० (डॉ.) दिनेश कुमार सिंह

स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन
राँची विश्वविद्यालय, राँची
मोराबादी परिसर, राँची-834008

School of Mass Communication
Ranchi University, Ranchi
Morabadi Campus, Ranchi-834008

शुभकामना संदेश

बेहद हर्ष का विषय है कि स्कूल ऑफ मॉस कॉम्यूनिकेशन (राँची विश्वविद्यालय) के गौरवशाली अतीत के साक्षी पूर्ववर्त्ती विद्यार्थियों का एक सम्मेलन 26 जुलाई 2025 को आयोजित किया जा रहा है।

पिछले 38 वर्ष से स्कूल ऑफ मॉस कॉम्यूनिकेशन के पूर्ववर्त्ती छात्र आदिवासी, पिछड़े और ग्रामीण बाहुल्य झारखंड के साथ–साथ देश दुनिया में पत्रकारिता व अन्य क्षेत्रों में कार्य करते हुए सामाजिक उन्नयन और आमजनों के बीच चेतना का प्रकाश फैलाने का अनुकरणीय और सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

यहाँ से शिक्षा ग्रहण कर विद्यार्थी प्रदेश और देश के विकास में उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं।

ऐसे में पूर्ववर्ती विद्यार्थियों का यह सम्मेलन न सिर्फ विद्यार्थियों बल्कि संस्थान से जुड़े सभी व्यक्ति के लिये अविस्मरणीय और हर्ष का क्षण उपलब्ध कराने वाला है।

इस अवसर पर मेरी ओर से ''जोसारू'' को हार्दिक–हार्दिक वंदन, अभिनन्दन और शुभकामनाएँ।

डॉ. बसंत कुमार झा
निदेशक
स्कूल ऑफ मॉस कॉम्यूनिकेशन, रांची विश्वविद्यालय
रेडियो खाँची, 90.4एफ.एम.

स्कूल ऑफ मॉस कम्युनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय, राँची
निदेशक कार्यकाल विवरणी

1.	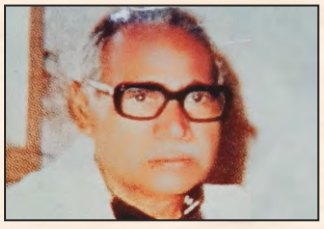	**प्रो० (डॉ.) बी. एन. त्रिपाठी** फरवरी 1987 से 30.09.1988
2.		**प्रो० (डॉ.) एस. डी. सिंह** 01.10.1988 से 31.07.1991
3.		**प्रो० (डॉ.) बी. एन. सिंह** 01.08.1991 से 12.02.1997
4.		**प्रो० जगधारी सिंह** 12.02.1997 से 17.01.1999
5.		**प्रो० (डॉ.) ऋता शुक्ल** 18.01.1999 से 30.11.2011
6.		**प्रो० (डॉ.) जे. पी. सिंह** 20.12.2011 से 30.04.2012
7.		**प्रो० सुशील कुमार 'अंकन'** 01.05.2012 से 25.04.2013

8.		**प्रो० (डॉ.) सरसवती मिश्रा** 26.04.2013 से 25.06.2013
9.		**प्रो० (डॉ.) एस.एम.पी.एन. सिंह साही** 26.06.2013 से 31.01.2018
10.		**प्रो० (डॉ.) अशोक कुमार चौधरी** 10.03.2018 से 31.03.2020
11.		**डॉ. मुकुन्द चन्द्र मेहता** 19.05.2022 से 28.09.2022
12.		**प्रो० (डॉ.) बी.पी. सिन्हा** 29.09.2022 से 17.01.2025 तक
13.		**डॉ. विष्णु चरण महतो (उपनिदेशक)** 09.12.2020 से वर्तमान तक
14.		**डॉ. बसंत कुमार झा (निदेशक)** 18.01.2025 से वर्तमान तक

JOSARU COMMITTEE MEMBERS
2023-25

Chandan Mishra
President

Sudhir Kumar
Secretary

Ajay Kukrety
Treasurer

Dr. Bhim Prabhakar
Vice President

Avinash Kumar
Vice President

Bhupesh Sharma
Joint Secretary

Abhishek Kr. Shastry
Joint Secretary

Shashi B. Kumar
Co-Treasurer

Dr. Pranaw Kr. Pd.
Member

Sanjay Khandelwal
Member

Ajay Kumar
Member

Kumar Sambhav
Member

Pankaj Kr. Pathak
Member

Moumita Banerjee
Member

Gauri Rani
Member

सफरनामा

स्पंदन-3 की तैयारी को लेकर समिति का गठन

रांची. जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी (जोसारू) का तृतीय समागम स्पंदन-3 आगामी 26 जुलाई को होगा. इसकी तैयारी को लेकर रविवार को रांची विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन सभागार में बैठक हुई. अध्यक्षता जोसारू के अध्यक्ष चंदन मिश्रा ने की. कार्यक्रम के प्रारूप के साथ-साथ अन्य विषयों पर चर्चा हुई. स्मारिका स्पंदन-3 प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया. समिति का गठन किया गया. पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के सभी पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं से जोसारू ने अपील की कि वे अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क ऑनलाइन जमा कराकर स्पंदन-3 कार्यक्रम में स्थान सुरक्षित करा लें. मौके पर संस्था के उपाध्यक्ष अविनाश कुमार, अजय कुमार, प्रणव कुमार बब्बू, संजय खंडेलवाल, अभिषेक शास्त्री उपस्थित थे.

स्टूडेंट्स को साइबर क्राइम से संबंधित कानूनी और उपयोगी जानकारियां दी गईं

रांची | जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी (जोसारू) ने संत जेवियर कॉलेज रांची के सहयोग से गुरुवार को कॉलेज के सभागार में साइबर अपराध से बचाव के लिए जागरूकता पर कार्यशाला आयोजित की। विशेषज्ञ के तौर पर साइबर अपराध ब्रांच रांची के डीएसपी श्रीनिवास सिंह और पत्रकार अखिलेश सिंह ने साइबर अपराध के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। बचाव को लेकर कानूनी और अन्य व्यवहारिक उपयोगी जानकारियां भी साझा कीं। कॉलेज के विभिन्न विभाग के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। जोसारू के उपाध्यक्ष अविनाश कुमार, वाइस प्रिंसिपल फादर प्रदीप, अध्यक्ष चंदन मिश्र, मौमिता बनर्जी, कुमार संभव आदि मौजूद रहे।

देश में पत्रकारिता के कारण लोकतंत्र सुरक्षित है: संजय सेठ

जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी की बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन विभाग में जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी (जोसारू) में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र के प्रहरी हैं। उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। देश में पत्रकारिता के कारण लोकतंत्र सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि यह जानकर काफी खुशी हुई कि रांची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के छात्र- छात्रा देश भर के कई ख्याति प्राप्त मीडिया संस्थानों से जुड़कर पत्रकारिता की अलख जगा रहे हैं। रांची विश्वविद्यालय के साथ-साथ झारखंड का रोशन कर रहे हैं। श्री सेठ ने साइट का उद्घाटन भी किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण जोसारू के अध्यक्ष चंदन मिश्र और धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष भीम प्रभाकर ने किया। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री ने स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के प्रांगण में जोसारू द्वारा पौधा रोपण कार्यक्रम में शामिल होकर पौधा रोपण किया। कार्यक्रम में कांके विधायक समरी लाल स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के निदेशक डॉ बीपी सिन्हा, स्टडीज ऑफ लॉ केंद्र निदेशक डॉ एसएन मिश्र, जोसारू के अध्यक्ष चंदन मिश्र, उपाध्यक्ष डॉ भीम प्रभाकर, अविनाश कुमार, डॉ प्रणव कुमार बब्बू, कोषाध्यक्ष अजय कुकरेती, संजय खंडेलवाल, अजय कुमार, कुमार संभव, शशि भूषण, मौमिता बनर्जी, गौरी रानी सहित अन्य मौजूद थे।

न्यूज ब्रीफ

जुलाई के आखिरी सप्ताह में मास कॉम में होगा जोसारू का दूसरा मिलन समारोह

रांची | स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, रांची विश्वविद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं का संगठन जोसारू (जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी) का निबंधन 9 मई को ट्रस्ट के तौर पर हो चुका है। जोसारू की कार्यकारी समिति के सदस्य अध्यक्ष चंदन मिश्र के नेतृत्व में रांची विवि के स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के निदेशक डॉ. बीपी सिन्हा से मिले और उन्हें जोसारू के निबंधन की जानकारी दी। बैठक में उपाध्यक्ष डॉ. भीम प्रभाकर और अविनाश कुमार, कोषाध्यक्ष अजय कुकरेती और सह कोषाध्यक्ष शशि भूषण, संयुक्त सचिव भूपेश शर्मा और अभिषेक शास्त्री, कार्यकारी समिति के सदस्य डॉ. प्रणव, कुमार संभव, पंकज पाठक उपस्थित थे। जून में सदस्यता अभियान और जुलाई के आखिरी सप्ताह में जोसारू का दूसरा मिलन समारोह आयोजित करने पर विचार किया गया।

जोसारू का हुआ निबंधन

रांची. रांची विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मास कम्यूनिकेशन के पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं का संगठन जोसारू (जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट एसोसिएशन) का निबंधन नौ मई को ट्रस्ट के तौर पर हो चुका है. जोसारू की कार्यकारी समिति के सदस्य रविवार को अध्यक्ष चंदन मिश्र के नेतृत्व में विभाग के निदेशक डॉ बीपी सिन्हा से मिले और उन्हें जोसारू के निबंधन की जानकारी दी. निदेशक ने कार्यकारिणी समिति को इसके लिए बधाई दी. उन्होंने कहा कि जोसारू रांची विवि के पूर्ववर्ती विद्यार्थियों का पहला ऐसा संगठन है, जिसने अपना निबंधन करा लिया है जिसके बाद काम करने की असीम संभावनाएं हैं.

जोसारू का सदस्यता अभियान जून से शुरू होगा

रांची। रांची विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मास कॉम के पूर्ववर्ती छात्रों का संगठन-जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी (जोसारू) का निबंधन ट्रस्ट के तौर पर हो गया है। समिति के सदस्य रविवार को अध्यक्ष चंदन मिश्र के नेतृत्व में स्कूल ऑफ मास कॉम के निदेशक डॉ बीपी सिन्हा से मिले और निबंधन की जानकारी दी। बताया, जोसारू का सदस्यता अभियान जून में शुरू होगा।

चंदन मिश्र

जोहार !

'स्पंदन' का तीसरा अंक आपके हाथों में देते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। मेरे लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि झारखंड के प्रीमियर शैक्षणिक उच्च संस्थान रांची विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग का छात्र रहा हूं। आज पूर्ववर्ती छात्रों के संगठन से जुड़कर पत्रकारिता की सेवा से जुड़ा हुआ हूं।

पत्रकारिता का जब 'क ख ग' सीख रहा था, तब से इस संस्थान से मेरा नाता जुड़ा। कालांतर में यह नाता और गहरा होता गया। पहले स्नातक और फिर तीन दशक बाद स्नातकोत्तर की पढ़ाई यहीं से पूरी की।

पत्रकारिता विभाग रांची विश्विद्यालय (अब स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन) के पूर्व छात्र छात्राओं को एक मंच पर लाने के प्रयासों का प्रतिफल है जोसारू (जर्नलिज्म ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन ऑफ रांची यूनिवर्सिटी)। आज स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के छात्र छात्रायें देश विदेश में पत्रकारिता ही नहीं, समाज और देश सेवा के बहुआयामी क्षेत्रों में भी अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। लेकिन जोसारू के तहत सभी का भावनात्मक जुड़ाव अपने संस्थान और एक दूसरे के साथ निरंतर बना हुआ है ।

शुरुआत में जोसारू अनौपचारिक तौर पर ही पूर्व छात्र–छात्राओं को जोड़ने का काम करता रहा और कार्यक्रम आयोजित करता रहा। वर्ष 2024 में जोसारू का औपचारिक पंजीकरण हो गया जिसमें 15 सदस्य कार्यकारी समिति के सदस्य के तौर पर जुड़े। जोसारू संस्था का अब अपना पेन नम्बर एवं बैंक में बचत खाता भी है।

पंजीकरण के बाद से अब तक जोसारू ने सामाजिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए। इसकी शुरुआत पिछले वर्ष जोसारू के वेब साईट के उद्घाटन (www.josaru.org) से हुई। उसी दिन स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन परिसर में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री और रांची के सांसद माननीय श्री संजय सेठ ने वृक्षारोपण कर शुभ शुरुआत की। सामाजिक सरोकार, जोसारू के उद्देश्यों में से एक है। इसी के तहत साइबर अपराध की रोकथाम की जागरुकता के लिए पिछले वर्ष 2024 में जोसारू द्वारा संत जेवियर कॉलेज रांची के सहयोग से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कॉलेज के

तकरीबन 350 विद्यार्थी शामिल हुए। कार्यक्रम में साइबर अपराध अनुसंधान विभाग के वरीय पुलिस अधिकारी और अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं ।

जोसारू संस्थान के पूर्व छात्र छात्राओं के समागम का आयोजन "स्पन्दन" के नाम से करता आया है जिसमें देश भर से उत्साहपूर्ण भागीदारी होती है। इसी कड़ी में इस वर्ष स्पंदन –3 का आयोजन 26 जुलाई 2025 को स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन परिसर में किया जा रहा है ।

'स्पन्दन–3' जोसारू के सदस्यों को न सिर्फ स्पंदित करता है, बल्कि संस्थान से जुड़ी पुरानी यादों को समेटते हुए अपने पुराने सखा से मिलने का सुअवसर प्रदान करता है। स्पंदन के इस आयोजन को यादगार बनाने के लिए स्पंदन का तीसरा अंक एक स्मारिका के स्वरूप में आपकी स्मृतियों को संजोने का प्रयास है। स्पंदन–3 के सफल प्रकाशन में सहयोग करने वाले सभी सुधिजनों का हृदयतल से आभार व्यक्त करता हूं।

'स्पंदन–3' के सफल आयोजन और स्मारिका के प्रकाशन के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएं। मुझे पूर्ण विश्वास है, जोसारू की यह यात्रा स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के पूर्ववर्ती छात्र– छात्राओं के सहयोग और नेतृत्व से अनवरत जारी रहेगी।

धन्यवाद!

संपादकीय

स्पंदन 2025,आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। हर्ष इसलिए कि यह अंक पत्रकारों की ओर से पत्रकारों के लिए है। इसमें अनुभवों का साझा है, संघर्ष की कहानी है और एक नए लोकतंत्र के दस्तक की आहट है।

पत्रकारिता अपने बदलाव के दौरे में है। जोसारू के सदस्य भी इस बदलाव के अहम हिस्से हैं। पत्रकारिता के साथ विश्वसनीयता का प्रगाढ़ संबंध है और इसी विश्वास को कायम रखने के लिए हमारे सभी साथी दिन–रात संघर्ष कर रहे हैं। मिशन से प्रोफेशन के सफर पर गतिशील पत्रकारिता अनेक प्रयोगों के दौर से गुजर रही है और कामयाब भी हो रही है।

अपने अनुभवी साथियों से अनुरोध है कि वर्त्तमान को नवजागरण के बोध से परिचित कराये एवं सत्य, साहस और संकल्प के मूल–मंत्र से भी अवगत करायें। वहीं वर्त्तमान छात्रों के लिए भी आवश्यक है कि अपने वरीय अनुभव पुंज से सादगी के साथ उचित मार्गदर्शन प्राप्त करें।

जोसारू के जोशीले पत्रकारों का जमावड़ा, 'स्पन्दन–2025' युवा एवं तपे–तपाये सदस्यों का वर्त्तमान से मिलन। समारोह में गिले–शिकवे भी होंगे और अनुभव भी सम्प्रेषित होंगे। इस रोमांचक अनुभूति के हम सभी साक्षी होंगे।

'स्पन्दन–2025' देश–विदेश से एकत्रित ऊर्जावान पूर्ववत्ती एवं वर्त्तमान विद्यार्थियों का अभिनंदन करता है, जो पत्रकारिता विभाग (स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन), राँची विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं।

स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, राँची विश्वविद्यालय के सभी पीढ़ी के विद्यार्थियों से आशा है कि विभाग एवं पत्रकारिता की गरिमा को बनाये रखते हुए, इसके उत्तरोत्तर विकास में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

संपादक मंडल

Threats of CYBER CRIME
An Awareness Workshop
Organized by JOSARU in coordination with
St. Xavier's College, Ranchi
(Affiliated to Ranchi University, Ranchi)
24th October 2024 I St. Xavier's College Auditorium I 12:30 - 2:00 PM

स्पन्दन 2023

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	प्रस्तुति	पृष्ठ सं.
1	तय कीजिए आप जर्नलिस्ट हैं या एक्टीविस्ट!	प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी	01
2	भारतीय जीवन में सनातन की खोज	डॉ मयंक मुरारी	04
3	मुख्यधारा की दीवारों को तोड़ती यूट्यूब पत्रकारिता	सुधीर पाल	09
4	आपदा से सचेत रखने की पत्रकारिता	संजय खंडेलवाल	12
5	हिंदी भाषा विकास और पत्रकारिता	नीरज कुमार पाण्डेय	16
6	चार दशक के इतिहास की आंखों देखी	अभिषेक शास्त्री	17
7	महिला पत्रकारों से समृद्ध होता चौथा स्तंभ	डॉ. अनुपमा प्रसाद	21
8	झा सर की वसीयत...!	छंदश्री	24
9	अतीत तो उज्जवल लेकिन भविष्य...!	डॉ. प्रणव कुमार 'बब्बू'	27
10	देसी लोकतंत्र को सशक्त करने का उपक्रम	डॉ. भीम प्रभाकर	29
11	राजकीय महोत्सवों में पारंपरिकता की अनुगूंज	प्रणय प्रबोध पाठक	30
12	जीवन चक्र	प्रणय प्रबोध पाठक	32
13	भूलने लगी हूँ	सुमिता सिन्हा	32
14	रांची विश्वविद्यालय में पत्रकारिता पाठ्यक्रम की स्थापना - संस्मरण एवं सुझाव	चन्द्र किशोर	33
15	झारखंड में फिल्म निर्माण की अपार संभावनाएं	परवेज कुरैशी	36
16	एकल उपयोग प्लास्टिक के नुकसान और संभावित समाधान	अविनाश कुमार	39
17	भ्रष्टाचार का विरोध, हर नागरिक का कर्त्तव्य	भाई गोकुल चन्द	41
18	अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में साख बनाये रखने की चुनौती	पंकज कुमार पाठक	42

19	डिजिटलाइजेशन से सशक्त होता पारंपरिक मीडिया	प्रियंका तिवारी	45
20	मीडिया में इन्फ्लुएंसर का प्रभाव कहाँ तक ?	शशी भूषण कुमार	47
21	मां-बाप	फैजान खान	49
22	मीडिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - फायदा या नुकसान	कनक राज पाठक	50
23	आँखों को यकीन दिलाना पड़ता है	केशव कश्यप	53
24	लेखनी की चुप्पी	मीरा किशोर	54
25	डायन	अजय कुमार	55
26	अपनी कहानी तुम स्वयं कहना	अुनप्रिया शशि तिर्की	56
27	अधूरी कविता	निवेदिता मिश्र	59
28	डिजिटल दुनिया, सोशल मीडिया और मानव पहचान संकट	प्रभात कुमार सिंह	60
29	जीवन का राग	उज्जवल कुमार	61
30	डिजिटल डगर पर सभ्यता की चाल	सुमित रोहित	62
31	द्वापर युग से कलयुग तक ट्रांसजेंडर्स की चमकती पहचान	स्वाति सिंह (किकी)	63
32	भारतीय ज्ञान परंपरा : अमूल्य धरोधर	डॉ. रूपक राग	65
33	स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन		67

मीडिया एथिक्स

तय कीजिए आप जर्नलिस्ट हैं या एक्टीविस्ट!

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

भारतीय मीडिया अपने पारंपरिक अधिष्ठान में भले ही राष्ट्रभक्ति, जनसेवा और लोकमंगल के मूल्यों से अनुप्राणित होती रही हो, किंतु ताजा समय में उस पर सवालिया निशान बहुत हैं। 'एजेंडा आधारित पत्रकारिता' के चलते समूची मीडिया की नैतिकता और समझदारी कसौटी पर है। सही मायने में पत्रकारिता में अब 'गैरपत्रकारीय शक्तियां' ज्यादा प्रभावी होती हुयी दिखती हैं। जो कहने को तो मीडिया में उपस्थित हैं, किंतु मीडिया की नैतिक शक्ति और उसकी सीमाओं का अतिक्रमण करना उनका स्वभाव बन गया है। इस कठिन समय में टीवी मीडिया के शोर और कोलाहल ने जहां उसे 'न्यूज चैनल' के बजाए 'व्यूज चैनल' बना दिया है। वहीं सोशल मीडिया में आ रही अधकचरी और तथ्यहीन सूचनाओं की बाढ़ ने नए तरह के संकट खड़े कर दिए हैं।

जर्नलिस्ट या एक्टिविस्ट

पत्रकार और एक्टिविस्ट का बहुत दूर का फासला है। किंतु हम देख रहे हैं कि हमारे बीच पत्रकार अब सूचना देने वाले कम, एक्टिविस्ट की तरह ज्यादा व्यवहार कर रहे हैं। एक्टिविस्ट के मायने साफ हैं, वह किसी उद्देश्य या मिशन से अपने विचार के साथ आंदोलनकारी भूमिका में खड़ा होता है। किंतु एक पत्रकार के लिए यह आजादी नहीं है कि वह सूचना देने की शक्ति का अतिक्रमण करे और उसके पक्ष में वातावरण भी बनाए। इसमें कोई दो राय नहीं कि कोई भी व्यक्ति विचारधारा या राजनैतिक सोच से मुक्त नहीं हो सकता। हर व्यक्ति का अपना राजनीतिक चिंतन है, जिसके आधार पर वह दुनिया की बेहतरी के सपने देखता है। यहां हमारे समय के महान संपादक स्व. श्री प्रभाष जोशी हमें रास्ता दिखाते हैं। वे कहते थे "पत्रकार की पोलिटिकल लाइन तो हो, किंतु उसकी पार्टी लाइन नहीं होनी चाहिए।" यह एक ऐसा सूत्र वाक्य है, जिसे लेकर हम हमारी पत्रकारीय जिम्मेदारियों का पूरी निष्ठा से निर्वहन कर सकते हैं।

मीडिया में प्रकट पक्षधरता का ऐसा चलन उसकी विश्वसनीयता और प्रामणिकता के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। हमारे संपादकों, मीडिया समूहों के मालिकों और शेष पत्रकारों को इस पर विचार करना होगा कि वे मीडिया के पवित्र मंच का इस्तेमाल भावनाओं को भड़काने, राजनीतिक दुरभिसंधियों, एजेंडा सेटिंग अथवा 'नैरेटिव' बनाने के लिए न होने दें। हम विचार करें तो पाएंगें कि बहुत कम प्रतिशत पत्रकार इस रोग से ग्रस्त हैं। किंतु इतने लोग ही समूची मीडिया को पक्षधर मीडिया बनाने और लांछित करने के लिए काफी हैं। हम जानते हैं कि औसत पत्रकार अपनी सेवाओं को बहुत ईमानदारी से कर रहा है। पूरी नैतिकता के साथ, सत्य के साथ खड़े होकर अपनी खबरों से मीडिया को समृद्ध कर रहा है। देश में आज लोकतंत्र की जीवंतता का सबसे बड़ा कारण मीडियाकर्मियों की सक्रियता ही है। मीडिया ने हर स्तर पर नागरिकों को जागरूक किया है तो राजनेता और नौकरशाहों को चौकन्ना भी किया है। इसी कारण समाज आज भी मीडिया की ओर बहुत उम्मीदों से देखता है। किंतु कुछ मुठ्ठी भर लोग जो मीडिया में

किन्हीं अन्य कारणों से हैं और वे इस मंच का राजनीतिक कारणों और नरेटिव सेट के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, उन्हें पहचानना जरुरी है। क्योंकि ये थोड़े से ही लोग लाखों–लाख ईमानदार पत्रकारों की तपस्या पर भारी पड़ रहे हैं। बेहतर हो कि एक्टिविस्ट का मन रखनेवाले पत्रकार इस दुनिया को नमस्कार कह दें ताकि मीडिया का क्षेत्र पवित्र बना रहे। हमें यह मानना होगा कि मीडिया का काम सत्यान्वेषण है, नरेटिव सेट करना,एजेंडा तय करना उसका काम नहीं है। पत्रकारिता को एक 'टूल' की तरह इस्तेमाल करने वाले लोग अपना और मीडिया दोनों का भला नहीं कर रहे हैं। क्योंकि उनकी पत्रकारिता स्वार्थों के लिए है, इसलिए वे तथ्यों की मनमानी व्याख्या कर समाज में तनाव और वैमनस्य फैलाते हैं।

तकनीक से पैदा हुए संकट

सूचना प्रौद्योगिकी ने पत्रकारिता के पूरे स्वरूप को बदल दिया है।अब सूचनाएं सिर्फ संवाददाताओं की चीज नहीं रहीं। विचार अब संपादकों के बंधक नहीं रहे। सूचनाएं अब उड़ रही हैं इंटरनेट के पंखों पर। सोशल मीडिया और वेब मीडिया ने हर व्यक्ति को पत्रकार तो नहीं पर संचारक या कम्युनिकेटर तो बना ही दिया है। वह फोटोग्राफर भी है। उसके पास विचारों, सूचनाओं और चित्रों की जैसी भी पूंजी है, वह उसे शेयर कर रहा है। इस होड़ में संपादन के मायने बेमानी हैं, तथ्यों की पड़ताल बेमतलब है, जिम्मेदारी का भाव तो कहीं है ही नहीं। सूचना की इस लोकतांत्रिकता ने आम आदमी को आवाज दी है, शक्ति भी दी है। किंतु नए तरह के संकट खड़े कर दिए हैं।

सूचना देना अब जिम्मेदारी और सावधानी का काम नहीं रहा। स्मार्ट होते मोबाइल ने सूचनाओं को लाइव देना संभव किया है। समाज के तमाम रूप इससे सामने आ रहे हैं। इसके अच्छे और बुरे दोनों तरह के प्रयोग सामने आने लगे हैं। सरकारें आज साइबर ला के बारे में काम रही हैं। साइबर के माध्यम से आर्थिक अपराध तो बढ़े ही हैं, सूचना और संवाद की दुनिया में भी कम अपराध नहीं हो रहे। संवाद और सूचना से लोंगो को भ्रमित करना, उन्हें भड़काना आसान हुआ है। कंटेट को सृजित करनेवाले प्रशिक्षित लोग नहीं है, इसलिए दुर्घटना स्वाभाविक है। ऐसे में तथ्यहीन, अप्रामणिक, आधारहीन सामग्री की भरमार है, जिसके लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। यहां साधारण बात को बड़ा बनाने की छोड़ दें, बिना बात के बात बनाने की भी होड़ है। फेक न्यूज का पूरा उद्योग यहां पल रहा है। यह भी ठीक है कि परंपरागत मीडिया के दौर में भी फेक न्यूज होती थी, किंतु इसकी इतनी विपुलता कभी नहीं देखी गई। 'वाट्सअप यूनिर्वसिटी' जैसे शब्द बताते हैं कि सूचनाएं किस स्तर पर संदिग्ध हो गयी हैं। सोशल मीडिया के इस दौर में सच कहीं सहमा सा खड़ा है। इसलिए सोशल मीडिया अपनी अपार लोकप्रियता के बाद भी भरोसा हासिल करने में विफल है।

सबसे ताकतवर हैं फेसबुक और यूट्यूब

आज बड़े से बड़े मीडिया हाउस से ताकतवर फेसबुक और यू–ट्यूब हैं, जो कोई कंटेट निर्माण नहीं करते। आपकी खबरों, आपके फोटो और आपकी सांस्कृतिक, कलात्मक अभिरुचियों को प्लेटफार्म प्रदान कर ये सर्वाधिक पैसे कमा रहे हैं। गूगल, फेसबुक, यू–ट्यूब, ट्विटर जैसे संगठन आज किसी भी मीडिया हाउस के लिए चुनौती की तरह हैं। बिना कोई कंटेट क्रियेट किए भी ये प्लेटफार्म आपकी सूचनाओं और आपके कंटेट के दम पर बाजार में छाए हुए हैं और बड़ी कमाई कर रहे हैं। बड़े से बड़े

मीडिया हाउस को इन प्लेटफार्म पर आकर अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए जतन करने पड़ रहे हैं। यह एक अद्भुत समय है। जब भरोसा, प्रामणिकता, विश्वसनीयता जैसे शब्द बेमानी लगने लगे हैं। माध्यम बड़ा हो गया है, विचार और सूचनाएं उसके सामने सहमी हुयी हैं। सूचनाओं को इतना बेबस कभी नहीं देखा गया, सूचना तो शक्ति थी। किंतु सूचना के साथ हो रहे प्रयोगों और मिलावट ने सूचनाओं की पवित्रता पर भी ग्रहण लगा दिए हैं। व्यक्ति की रूचि रही है कि वह सर्वश्रेष्ठ को ही प्राप्त करे। उसे सूचनाओं में मिलावट नहीं चाहिए। वह भ्रमित है कि कौन सा माध्यम उसे सही रूप में सूचनाओं को प्रदान करेगा। बिना मिलावट और बिना एजेंडा सेंटिग के।

विकल्पों पर भी हो बात

ऐसे कठिन समय में अपने माध्यमों को बेलगाम छोड़ देना ठीक नहीं है। नागरिक पत्रकारिता के उन्नयन के लिए हमें इसे शक्ति देने की जरुरत है। एजेंडा के आधार पर चलने वाली पत्रकारिता के बजाए सत्य पर आधारित पत्रकारिता समय की मांग है। पत्रकारिता का एक ऐसा माडल सामने आना चाहिए जहां सत्य अपने वास्तविक स्वरूप में स्थान पा सके। मूल्य आधारित पत्रकारिता या मूल्यानुगत पत्रकारिता ही किसी भी समाज का लक्ष्य है। पत्रकारिता का एक ऐसा माडल भी प्रतीक्षित है, जहां सूचनाओं के लिए समाज स्वयं खर्च वहन करे। समाज पर आधारित होने से मीडिया ज्यादा स्वतंत्र और ज्यादा लोकतांत्रिक हो सकेगा। अफसोस है कि ऐसे अनेक माडल हमारे बीच आए किंतु वे जनता के साथ न होकर 'एजेंडा पत्रकारिता' में लग गए, इससे वो लोगों का भरोसा तो नहीं जीत सके, साथ ही वैकल्पिक माध्यमों से भी लोगों का भरोसा जाता रहा। इस भरोसे को जोड़ने की जिम्मेदारी भी मीडिया के प्रबंधकों और संपादकों की है। क्योंकि कोई भी मीडिया प्रामणिकता और विश्वसनीयता के आधार पर ही लोकप्रिय बनता है। प्रामणिकता उसकी पहली शर्त है। आज संकट यह है कि अखबारों के स्तंभों में छपे हुए नामों और उनके लेखकों के चित्रों से ही पता चल जाता है कि इन साहब ने आज क्या लिखा होगा। बहसों(डिबेट) के बीच टीवी न्यूज चैनलों की आवाज को बंद कर दें और चेहरे देखकर आप बता सकते हैं कि यह व्यक्ति क्या बोल रहा होगा। ऐसे समय में मीडिया को अपनी छवि पर विचार करने की जरुरत है। सब पर सवाल उठाने वाले माध्यम ही जब सवालों के घेरे में हों तो हमें सोचना होगा कि रास्ता सरल नहीं है। इन सवालों पर सोचना, इनके ठोस और वाजिब हल निकालना पत्रकारिता से प्यार करने वाले हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। हमारी, आपकी, सबकी।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के आचार्य और अध्यक्ष हैं।)

भारतीय जीवन में सनातन की खोज

डॉ मयंक मुरारी

सनातन का अर्थ है जो शाश्वत हो, सदा के लिए सत्य हो और जिन बातों का शाश्वत महत्व हो। सत्य सनातन है। ईश्वर, आत्मा और मोक्ष रूपी सत्य भी अनादि काल से चला आ रहा है, जिसका कभी अंत नहीं होगा, अतएव वह भी सनातन है। इसपर भारतीय सभ्यता की मूल प्रकृति आधारित होने के कारण ही वैदिक चिंतन की शाश्वत प्रवाह को सनातन कहा गया। ऋग्वेद (3.18.1) में प्रार्थना है कि हमारा यह पथ सनातन है। समस्त देवता और मनुष्य इसी मार्ग से पैदा हुए हैं, तथा प्रगति की है। हे मनुष्यों आप अपने उत्पन्न होने की आधार रूपा अपनी माता को विनष्ट न करें। भारतवर्ष चेतना की भूमि है। यहां न धन, न पद, न प्रतिष्ठा और न ही यश और कीर्ति का चाह रही। जीवन में सत्य और धर्म के लिए सबकुछ समर्पित कर दिया गया। सत्य के लिए राजपद छोड़ा, समाज के लिए प्रतिष्ठा। उपनिषद और वैदिक साहित्य के रचनाकारों ने विश्व में सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ ऋचाओं को उदभाषित किया, बिना नाम और यश के। भारत और अध्यात्म में समानता है। भारत और सनातन धर्म पर्यायवाची है। भारत एक सनातन यात्रा है, एक अमृत पथ है, जो अनंत से अनंत तक फैला है।

विराट कभी वामन बन जाते है, कभी वही वामन रूपी कृष्ण विराट बन जाते है। यहां ऐसे अनगिनत आख्यान मिलेंगे, जहां अतिक्रमण होता दिखेगा। यहां समय की भी कमी नहीं है। जनम–जनम के बाद पुनर्जन्म है। आम भारतीय के लिए जीवन का अर्थ अनंतकाल होता है। जब जीवन अनंत है तो उस भारतीय समाज में विविधता और विभिन्नता सहज है। जीवन के बाद मृत्यु और पुनः पुनर्जन्म है तो कर्म की सतत धारा है। कर्ममय ही जीवन है। जीवन में ईश्वर है, ईश्वर के हम अंश है। एक ध्यानस्थ योगी के लिए क्षण में महाकाल एवं विराट की अनुभूति है। समाधि में व्यष्टि खुद को समष्टि और अनंत सृष्टि यानी खुद को ब्रह्म से जोड़ लेता है। पुनः वह उस विराट का सहभागी यात्री बन जाता है। खंड काल के बोध से धर्म, भाषा, संस्कृति या रचनात्मक समाज का निर्माण नहीं होता। इसके निर्माण काव्य, दर्शन और मिथकीय घटना, व्यक्ति और जीवन का प्रभाव होता है। जनमानस को इस फर्क नहीं होता कि गांधी के राम, दशरथी पुत्र है या नहीं। द्वापर में श्रीकृष्ण हुए या नहीं। इसपर बौद्धिक वर्ग विचार करता रहे। हमारा मन तो वर्तमान में श्रीकृष्ण को खोजता है। हमारा चौतन्य मन मुरली के धुन में, मीरा के भजन में, चौतन्य के कीर्तन में श्रीकृष्ण के पदचाप को सुनना चाहता है और उसे सुनकर संतुष्टि मिलती है, तो इस शाश्वत सुख में ही सनातन का पदचाप है।

सनातन के प्रवाह अनंत और अमिट है। जब हम शिवालय में जाते हैं, तो उस अव्यक्त और अविनाशी के शरीर को धोते हैं, मांजते हैं, चमकाते हैं, बार बार उसको दूध, जल, घी, मधु और फल तथा मिष्ठान से भरते हैं। ईश्वर के विग्रह को जहां अपने समर्पण भाव से भरते है, वहीं दूसरी ओर अपने जीवन के अनंत प्रवाह को रस से आप्लावित करते हैं। जब इससे मन नहीं भरता है तो घर में कर्मकांड के समय गोबर, मिट्टी और कसैली से गौर–गणेश और शिव का निर्माण करते हैं, एक निराकार को आकार देते हैं। यहां तो हम संकल्प मंत्र के साथ विग्रह बनाकर भगवान का सृजन करते हैं, उसमें प्राण–प्रतिष्ठा कर देवत्व प्रदान करते हैं। उसके बाद खुद ही उससे अपने प्राण में रस और रंग के लिए भक्ति निवेदित करते

हैं। देवत्व के साथ उत्सव और अर्चन का अछोर साधना होती है, जिसमें जनमानस अपनी चेतना को भी डूबो देता है। फिर उस विग्रह को मंत्रोच्चारण के साथ देवत्व से मुक्त करते हैं और उसे जल में विसर्जन कर देते हैं। आदि शंकर का मंत्र है– पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम इह संसारे बहुदुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे। जब उस परमात्मा के साथ ही गति और ठहराव है तो सनातन का प्रवाह आखिर रूकेगा भी तो कैसे ?

भारतीय चिंतनधारा में जीवन का सदैव शाश्वत रूप खोजने का प्रयास चलता है। दुख में और सुख में भी। जब जीवन में भ्रम आ जाता है, समय के चक्र से दिशाभ्रम की स्थिति हो जाती है, कष्ट और थकान से हमारा कर्म लक्ष्यहीन बन जाता है, तब कुछ नहीं सुझता है। अंतर्मन की यह व्याकुलता केवल मानव नहीं देवों को भी होता है। भगवती माता पार्वती ऐसी ही दुख के पलों में जब अपने को पाती है, तो महादेव से आग्रह करती है कि कोई ऐसी कथा सुनाएं, जो हमारे संताप को हर ले, जीवन में सांत्वना दें। तब भगवान शिव अपनी पत्नी को पहली बार रामकथा सुनाते हैं। यह रामकथा का कथन और श्रवण विभिन्न देश–काल और लोक में विविध भावों, विभिन्न रूपों एवं विविध भेदों के साथ सदैव प्रवाहित होती रही है। लौकिक जीवन (आगम चिंतन) में कौन कहे, शास्त्रीय (निगम चिंतन) समाज में भी रामकथा के अनंत और अमिट रूप एवं भेद मिलते हैं। राम कथा के एक साथ कई कथावाचक है और कई श्रोता है। यह सनातन में शाश्वत की धारा है।

भारत की चिंरतन यात्रा में सदैव ही अमृत की खोज को लक्ष्या बनाया गया। यह खोज कला, शिल्प, चित्र, मंत्र, दर्शन, ध्यान और मनन आदि सभी क्षेत्रों में चला। हरेक जगह धुआं धुआं की तरह कुछ करने के बदले शाश्वत की खोज को प्रमुखता दी गयी। भारतीय वाड्मय, रामायण, महाभारत और पुराण हो या कोई और उत्कृष्ट साहित्य रचना। बस एक ही भाव केंद्र में रहा। सांची, अंकोरवट, महाबलीपुरम, मथुरा और कांची हो या वाराणसी और सारनाथ या सोमनाथ। इन सबमें एक बात समान है। सब जगह की रचनाओं या कलाओं में रूप बदले है, भेद भिन्न हैं, भाषा अलग है, शब्द भी एक नहीं है, लेकिन प्रवाह में समरूपता है और उसके भावों में एकरूपता है। ऐसा लगता है मानो सारी साहित्यक रचनाएं एक सूत्र में जुड़ी है। कलाओं के विविध रूपों में देश–काल के साथ गति, तो कभी देश काल की सीमा का अतिक्रमण है। किसी भी महाकाव्य को देखिये। एक साथ कई कथावाचक है, कई श्रोता है और कहानी भी कई पटों में खुलती है। इसके बावजूद कहानियों में काल का अतिक्रमण होता है। देश से परे चिंतन होता है। किसी भी शिल्प और स्थापत्य कला को देखिए। विराट में लधुता और उसी लघुता में विराट का दर्शन होगा। भारत में सनातन की आत्मा वास करती है।

भारत में सनातन की आत्मा की खोज के लिए खूब यात्राएं हुईं। कहा भी जाता है कि भारत को जानना है, तो ग्रंथों का अध्ययन करों। सनातन को जानना है तो इस भू–भाग की यात्रा करों। इस मिट्टी के महापुरुषों को जानो। भारत की शाश्वत आत्मा से साक्षात्मकार हो जायेगा। इसकी राष्ट्रीयता का इतिहास समझ में आ जायेगा। पिछली सदी में गांधीजी ने अपने राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गाोखले से यही सवाल किये थे। जवाब मिला, भारत भ्रमण करो। कहते है, सूट–बूट में भारत भ्रमण करने निकले, और जब लौटे तो उनके पास एक लंगोटी बची थी। इस राष्ट्र को समझने के लिए ही गांधी भ्रमण को निकले। उनको राष्ट्र की चौहदी और परिभाषा को लेकर कोई भ्रम नहीं था। क्योंकि वे वहीं कर रहे थे, जो उनके पूर्व विवेकानंद, शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध, चाणक्य, श्रीकृष्ण और महर्षि विश्वामित्र–अगस्त्य कर

चुके थे। भगवान राम को भी इस सनातन प्रवाह को लेकर संदेह था, तब वशिष्ट ने कहा था कि भारत का भ्रमण करों। श्री राम ने राजगद्दी पर बैठने के पूर्व समूचे भारत की यात्राएं कीं। जब वापस आए तो वह बदल चुके थे।

भारत की आत्मा ही सनातन है। इसलिए भारतीयता यहां की भौगोलिक प्रकृति नहीं बल्कि एक विशिष्ट आध्यात्मिक गुण है। अज्ञेय अपने आलेख भारतीयता में कहते है कि भारतीय का पहला लक्षण ही सनातन की भावना, काल की भावना, काल की अंतहीन प्रवाह की भावना। यह केवल वैज्ञानिक दृष्टि से समय की सरणी नहीं है, बल्कि काल हम से, भारतीय जाति से, संबंद्ध विशिष्ट और निजी क्षणों की सरणी के रूप में है। काल गणना हमारे यहां ज्योतिष बताते है। शास्त्र से समय को पहचाना जाता है कि यह कलियुग है। इस प्रकार जब हम विभिन्न युगों, मंनवन्तर एवं कल्प की गणना करते है, तो हमारा चिंतना की सीमा से यह कालगति बाहर हो जाती है। दूसरे ही पल हम कहते है कि यह ब्रह्मा का महज एक क्षण है। फिर उस क्षण में यह युग और कल्प आदि आता है। अज्ञेय कहते है कि सनातन की परंपरा काल परंपरा की भावना नहीं, काल की अयर्थाथता की भावना है। इसका अपना गुण और विशिष्टता है। जैसे ही हम काल की यर्थाथता को स्वीकार कर लेते है, हम अकिंचन और दीन हो जाते हैं, जहां हमारी नगण्यता से हम जीवन में स्वीकार करने की मूलभाव को सीखते हैं। भारतीय जीवन में सनातन के भाव के कारण ही हम मानवीय अस्तित्व की नगण्यता और जीवन के प्रति अवज्ञा के पाठ को स्वीकार करते हैं।

भारती समाज ने अनगिनत प्रहारों एवं असंख्य दबावों के बावजूद भी न केवल जीवित रहा है, बल्कि गतिमान भी रहा है, तो इसका सूत्र दर्शन की पोथियों में नहीं मिलेगा। अक्षय उतरजीविता के महीन और मजबूत सूत्र भारती स्मृति में प्रवहमान है। उस सूत्र की सरिता का दर्शन वैदिक ऋचाओं में, पौराणिक कथाओं में और महाकाव्य की रचना पाठ में अनुभूत किया जा सकता है। भारतीय सभ्यता का यह बोध कोई बीते समय की स्मृति नहीं है, बल्कि यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी निरंतर गतिमान रही है। आज भी भारतीय मन संदेह में, खोज में, शांति में और युद्ध में अपना संबंध ऋग्वेद के ऋचाओं से जितना बना लेता है, उतना ही प्रेरण गीता के उपदेश और रामायण की कथाओं से मिलती है। हमारे लिए इस भूलोक में एक ही द्वीप है जंबूद्वीप। इसमें भी कई खंड है, लेकिन हमारे लिए भारतवर्ष ही एकमात्र खंड है। यह खंड पुण्य के लिए है, बाकि भोग के लिए है।

भोग इस खंड की विशेषता नहीं रही। यहां योग और आत्मिक विकास को प्रश्रय दिया गया। हिंदू मन लौकिक विजय से उतना तृप्त या प्रसन्न नहीं होता है, जितना आध्यात्मिक उन्नति से। हिंदुओं के संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन को नियमन और विकसित करते हैं। इसके सोपान चार पुरुषार्थ से होकर जाता है। पुरुषार्थ में धर्म को प्रारंभ में और मोक्ष को अंत में रखा गया। बीच में काम और अर्थ है।

अर्थ को धर्ममूलक और मुक्तिसाधक बनाने की बात कही गयी। इसी प्रकार काम को भी धर्मानुकूल होना चाहिए। ताकि वह मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर सके। यह भारतीय जीवन का सनातन भाव है। भारतीय जीवन धर्म और दर्शन को ज्ञान का विभिन्न सोपान मानता है। तैतिरयी उपनिषद की भृगुवल्ली में वरुण के पुत्र भृगु की मनोरंजक कथा है। भृगु ने अपने पिता वरुण के पास जाकर कहा कि मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूं। पिता ने तप करने को कहा। कठिन तपस्या के बाद भृगु ने समझा– अन्न ही ब्रह्म है। पिता ने पुनः तप करने को कहा। इस बार थोड़ी गहराई के बाद भृगु को समझ आया कि प्राण ही ब्रह्म है। पिता को अभी भी स्वीकार नहीं था। अतएव उन्होंने भृगु को कहा कि अपने तप को आगे जारी रखे। तप के अगले सोपान पर भृगु को अनुभूति मिली कि मन ही ब्रह्म है। पिता अभी भी संतुष्ट नहीं हुए। इसके बाद यह तप जारी रहा। अगले सोपान पर भृगु ने कहा कि विज्ञान ही ब्रह्म है। पिता अभी भी असंतुष्ट थे। भृगु ने पिता के आदेश पर अपना तप जारी रखा। अब भृगु को एहसास हुआ कि आनंद ही ब्रह्म है। इस प्रकार यह ज्ञान के विभिन्न सोपान पर अन्न यानी भौतिक पदार्थ, प्राण–मन–विज्ञान यानी बुद्धि और विवेक, आनंद यानी अध्यात्मक के तत्व। जीवन में यात्रा के ये पांच सोपान हैं। ये उत्तरोत्तर सूक्ष्म होता जाता है। इन सोपान के माध्यम से भारतीय सभ्यता ने सामान्य मानवीय संस्कृति को संपूर्ण एवं व्यापक बनाने का जो विन्यास एवं व्यवस्था बनायी है, उसका स्वरूप और साधन के साथ साध्य पक्ष भी सनातन के साथ शाश्वत है।

यहां सब कुछ जुड़ा हुआ है। यहां टूटा कुछ भी नहीं है। यहां पत्थर से आदमी जुड़ा है ? जमीन से चांद तारे जुड़े हैं, चांद तारों से हमारो हृदय की घड़कनें जुड़ी हैं। हमारे विचार सागर की लहरों से जुड़ी है। पहाड़ों के उपर चमकने वाले बर्फ हमारे मन को उद्वेलित करते है। सपनों को बुनते हैं। यहां टूटा हुआ कुछ भी नहीं है, सबकुछ संयुक्त है। यहां अलग होने का कोई उपाय ही नहीं है, क्योंकि बीच में कहीं भी गैप नहीं है जहां से चीजें टूट जाए। भारतीय जीवन में प्रकृति, पशु–पक्षी, रीति–रिवाज, जीवन–मृत्यु, पर्व–त्योहार और नाते रिश्तों से हमारा विविध रूप रंग–रस व गंध का सरोकार रहता है। हमारी प्रकृति और संस्कृति परस्पर पूरक हैं, परस्पर निर्भरता ही इनका जीवन सूत्र है। हम उनके साथ रिश्तों के सरोकार से विलग नहीं रह सकते, हालांकि बदलते दौर में यह ऊष्मा लगातार कम हो रही है। भारतीय जीवन में पेड़–पौधे, नदी–पहाड़, जीव–जंतू,, ग्रह–नक्षत्रों को ईश्वर के रूप में स्वीकार किया गया। यह प्रकृति के साथ अपनापन का नाता है कि हम कहते हैं– धरतीमाता, गौमाता, तुलसीमाता, गंगामाता, वनदेवी, कुलदेवी। हम पीपल को पूजते है, सांपों को दूध पिलाते हैं, चिड़ियां को पानी पिलाते हैं और चीटियों को चीनी। यह पूज्य भाव ही हमें शोषण करने से रोकता है। इनसे जब सामाजिक जीवन में निकटता के भाव से मन नहीं भरा, तो अनंत दूर के ग्रह–नक्षत्रों को रिश्तेदार बना लिया गया। यह भारतीय जीवन का स्वभाव रहा है। विराटता के साथ सहचार्य की सीख बच्चों को मां से ही मिल जाती है। बच्चा खाना नहीं खाता, तो मां

कहती है– खाना खा लो, चंदा मामा मिठाई लेकर आयेंगे। कई पीढ़ियां बीत गयी, लेकिन हर पीढ़ियों के लिए चांद उसका मामा ही होता है। बरगद उसका बाबा, तुलसी उसकी माता, आकाश पिता और तारे उसके रिश्तेदार। प्रकृति के साथ सनातन का अवयव ही भारतीय जीवन के विविध क्षेत्र में प्रकट हुए।

सनातन संस्कृति में मनाये जानेवाले विभिन्न पर्व, त्योहार और उत्सवों के पीछे भारतीयता को मजबूत बनाने का भाव था। यह पृथ्वी का सनातन भाव था, जिसे ऋषियों ने उत्सवों के माध्यम से हमारे जीवन में उतारा था। यह सभ्यता और संस्कृति को जीवंत रखने, परंपरा को सदैव आधुनिक बनाने का माध्यम रहा है। नवरात्रि में स्त्री के विभिन्न नौ रूपों का स्मरण, इस नवरात्रा के दौरान कन्या पूजा के माध्यम से समाज में बेटियों की श्रेष्टता को रेखांकित किया गया। आंवला नवमी, तुलसी विवाह जैसे उत्सवों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रसारित किया गया। व्यक्ति को अपनी सोच को अखंड एवं असीम करना होगा, तभी जीवन का आनंद प्राप्त होगा। लेकिन यह आज दिखता नहीं है। ग्लोबल गांव में भी आज का मनुष्य छोटा हो गया है। एक काल था, जब हमारे बागीचा में बरगद, पीपल और आम जैसे बड़े–बड़े दरख्तों का हस्ताक्षर होता था, आज युग है–बोन्जाई का। गमलों का। समय एवं विचार के साथ मनुष्य जब छोटा हो जाए, तो उसका काल चिंतन बड़ा कैसे हो सकता है ? यह छोटापन का भाव खानपान से लेकर रहन–सहन और दैनिक जीवन में दखल दे चुका है। दैनिक जीवन जब दूर आकाश में स्थापित उपग्रह से संचालित हो रहा है, तब भी समय के बोध के लिए एक घड़ी जरूरी है। यह कैसा मनुष्य है, जो यांत्रिक उपकरण के बिना अपने समय का बोध नहीं कर सकता। ऐसे समय में कालबोध! अनंत की यात्रा। एक उदाहरण। 12 साल पर कुंभ मेला मनाया जाता है। इस 12 साल का निर्धारण वृहस्पति ग्रह के परिभ्रमण के आधार पर होता है। वृहस्पति ग्रह 12 साल में एक चक्कर पूरा कर अपने पुरानी राशि में आता है। उत्सव और ऋतु के साथ संवत्सर, ग्रह, तारे के साथ समन्वय एवं सामंजस्य का यह अनोखा मेल भारतीय समाज ने दिया। हजारों साल तक भारतीय जीवन में ऐसे खगोलशास्त्र का अंगीकरण हुआ। जिसने ब्रह्मांड से तादात्म्य स्थापित करने के उपाय सुझाये और काल निर्धारण के लिए समाधान भी। भारत में समय की कमी नहीं रही। यहां एक जन्म नहीं है। जन्म और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म। मृत्यु के पूर्व अगले जन्म की तैयारी। कोई हड़बड़ी नहीं। मानव की जीवनलीला। अनंतकाल तक। मुक्ति तक। मुक्ति यानी कालबोध। परमसत्य का साक्षात्कार। इसलिए चिंतन में विराटता का समावेश हुआ। अतएव जरूरी है, मनुष्य फिर से अखंड हो। असीम हो। नाभिकीय नहीं संयुक्त। खुद को 'वसुधैव कुटुबंकम' में समाहित कर।

जब भी कोई फूल खिलता या मुरझाता है। किसी पेड़ पर सुंदर कोमल पत्ता आता है और सूख का नीचे गिर जाता है, तब केवल यह पौधे की बात नहीं होती है। फूल का मुरझाना या पत्ते का सूखना समूचे उपवन के उत्सव और संताप से जुड़ा होता है। जब एक फूल को तोड़ा जाता है या पत्ते को, तो उसके कंपन के साथ सुख और दुख की अनुभूति पूरे जंगल में पसर जाती है। समूचे पर्यावरण तंत्र में दुख और सुख का अनुभव होता है। यह केवल रक्त के संबंध की बात नहीं है, बल्कि यह अस्तित्व में एक साथ अनंत काल से सहयात्रा का संबंध है। ब्रह्मांड में सक्रियता और निष्क्रियता का भाव रहता है और उसकी अभिव्यक्ति प्रकृति की सभी घटनाओं में होती है। हमारे सांसों के उतार–चढ़ाव, हृदय के आरोह–अवरोह, ऋतुओं के आगमन और प्रस्थान, दिन और रात, पूर्णिमा से घटते और अमावस्या से बढ़ते चंद्रमा की कलाओं में जड़ता और गतिशीलता का वही भाव कार्य करता है। यह अस्तित्व का शाश्वत नियम है, जो अविनाशी है।

BJMC - 1994-95

मुख्यधारा की दीवारों को तोड़ती यूट्यूब पत्रकारिता

सुधीर पाल

पत्रकारिता अब सिर्फ अखबारों के पन्नों और टीवी चैनलों की स्क्रिप्ट में सीमित नहीं है। जहाँ मुख्यधारा मीडिया (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) बड़े कॉर्पोरेट घरानों, राजनीतिक गठजोड़ों और शहरी दर्शकों के प्रभाव में सिमटता जा रहा है, वहीं यूट्यूब पत्रकारिता एक नई परंपरा, नई भाषा और नई दिशा के रूप में उभर रही है। यूट्यूब अब केवल मनोरंजन या शॉर्ट वीडियो का मंच नहीं, बल्कि जन–सरोकार और वैकल्पिक पत्रकारिता की सबसे ताकतवर जमीन बन चुका है। यह पत्रकारिता उन आवाजों को स्पेस दे रही है, जो वर्षों से उपेक्षित थीं। यह मंच न केवल एक स्वतंत्र आवाज बना है, बल्कि उसने मुख्यधारा मीडिया की एकछत्र सत्ता को भी चुनौती दी है। झारखंड जैसे राज्य, जहाँ स्थानीय मुद्दों की अक्सर उपेक्षा होती रही, वहाँ यूट्यूब पत्रकारिता ने लोकतंत्र की असल जड़ों तक पहुँच बनाई है।

बीते तीन वर्षों यानि कोरोना काल के बाद डिजिटल प्लेटफॉर्म खासकर यूट्यूब ने पत्रकारिता को नया परिप्रेक्ष्य, नई पहुंच और नई पहचान दी है। दैनिक सन्मार्ग के संपादक ज्ञान रंजन कहते हैं कि लगभग हर पंचायत में ऐसे युवा मिल जाएंगे जो गाँव, आदिवासी समाज, महिला पंचायत प्रतिनिधि, विस्थापन,खनन, किसान, मजदूर आदि के मसले पर लगातार यूट्यूब पर रिपोर्ट बना रहे हैं। स्थानीय बोलिए में अपनी बात रख रहे हैं, लोगों से संवाद कर रहे हैं। इनका अपना दर्शक वर्ग है। इनका अपना रेविन्यू मॉडल है। गाँव के युवक–युवतियाँ स्मार्टफोन और सस्ते इंटरनेट से रिपोर्टर बने हैं। ऐसे पत्रकार जिनके पास न तो कोई मीडिया हाउस है, न ट्रेनिंग लेकिन जिनकी संवेदना और जमीनी समझ बहुत गहरी है। संपादक, प्रोड्यूसर, मालिक सब वही पत्रकार होता है। अखबार या टीवी समूहों जैसे व्यवस्थित संस्थान और व्यवस्था नहीं होने के बाद भी यूट्यूब पत्रकारिता का असर कम नहीं है। बल्कि कई बार सरकार और नीति नियन्तकों की नींद यूट्यूब रिपोर्ट की वजह से खुलती है।

झारखंड के वरिष्ठ पत्रकार और राज्य के एक प्रमुख यूट्यूब संस्थान के सह–संचालक सन्नी शरद बताते है कि गोड्डा जिला के अमरपुर पंचायत में एक गांव है बड़ा केरलो। यह गांव पहाड़ी पर है। ज्यादातर लोग सप्ताह में एक या दो दिन पहाड़ से कई किलोमीटर पैदल चलकर नीचे उतरते थे और रतनपुर हाट में जाते थे। द' फॉलोअप ने बताया कि कैसे गाँव देश और दुनिया से कट गया है। खबर चलने पर तुरंत सरकार ने संज्ञान लिया और चौबीस घंटे के अंदर जिला के डीसी, एसपी और सभी बड़े अधिकारी पहाड़ पर पहुंचे और गाँव वालों की समस्या का समाधान हुआ। आजादी के बाद पहली बार अभी पहाड़ी पर चढ़ने के लिए सड़क भी बन रही है। यह क्षेत्र मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के विधानसभा क्षेत्र बरहेट का हिस्सा है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जहां यूट्यूब पत्रकारिता ने अपनी सार्थकता साबित की है।

यूट्यूब का बाजार

यूट्यूब इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार 2021 से 2023 के बीच यूट्यूब ने भारत में कंटेंट क्रिएटर्स को ₹24,000 करोड़ से अधिक का भुगतान किया है। भारत में यूट्यूब के 45 करोड़ से अधिक मासिक

उपयोगकर्ता हैं, जो इसे देश का सबसे बड़ा वीडियो प्लेटफॉर्म बनाते हैं। यूट्यूब भारत में 400,000 से अधिक चैनलों को होस्ट करता है, जिनमें से एक बड़ा हिस्सा पत्रकारिता और जनसरोकार से जुड़े विषयों को कवर करता है। ज्यादातर अखबार के खुद के यूट्यूब चैनल हैं। 15,000 से ज्यादा यूट्यूब चैनल पत्रकारिता, सामाजिक संवाद, सूचना और समाचारों पर केंद्रित हैं, जिनमें से कई झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और पूर्वोत्तर राज्यों से संचालित होते हैं। 2023 तक, यूट्यूब पत्रकारिता की 750 से अधिक क्षेत्रीय भाषाओं में रिपोर्टिंग होने लगी – इनमें हिंदी, बंगाली, मैथिली, संथाली, नागपुरी, खड़िया, कुडुख भी शामिल हैं।

एक अनुमान के मुताबिक झारखंड में छोटे–बड़े 500 से ज्यादा यूट्यूब न्यूज चैनल हैं। 50–60 करोड़ का सालाना कारोबार है। ज्यादातर यूट्यूब को कोई सरकारी सहायता नहीं है। लगभग दो हजार लोगों के लिए यह उनकी आजीविका का साधन है। जानकर आश्चर्य होगा कि झारखंड की लगभग एक तिहाई आबादी तक यूट्यूब न्यूज चैनल की पहुँच है। झारखंड में दर्जनों चैनल हैं जिनके सब्सक्राइबर की संख्या लाखों में है। भौकाल टीवी (1.13 मिलियन), द फॉलोअप (7 लाख), बाइसकोप 22 Scope (5 लाख 55 हजार), झारखंड लाइव (2 लाख 59 हजार), लोकतंत्र 19 (2 लाख 2 हजार), समाचार वाला (2 लाख 11 हजार), द फोर्थ फिलर (1 लाख 59 हजार), न्यूज झारखंड (7 लाख 33 हजार), एसएमपी झारखंड (6 लाख 89 हजार), जोहार हजारीबाग (1 लाख 76 हजार), सिटी न्यूज गिरिडीह (1 लाख 1 हजार), द पंचायत न्यूज(1 लाख 43 हजार), सोशल संवाद (94 हजार), लाइव 7 भारत(94.4 हजार), लोकल खबर (99 हजार), आदि हैं। ऐसे सैकड़ों चैनल और हैं जिनकी सब्सक्राइबर की संख्या भले लाख में नहीं है लेकिन सामाजिक सरोकार के मसले पर वे भी अच्छा काम कर रहे हैं।

आर्थिक मॉडल

वीडियो पर चलने वाले विज्ञापनों से चैनल को आय होती है। राज्य सरकार का सूचना जन संपर्क विभाग भी आर्थिक सहायता करती है लेकिन यह बड़े चैनल तक सीमित है। यूट्यूब की नीति के अनुसार, यदि चैनल 1000 सब्सक्राइबर और 4000 घंटे का वॉच टाइम क्रॉस कर जाए, तो मोनेटाइजेशन शुरू हो सकता है। स्पॉन्सरशिप और डोनेशन तथा लोकल व्यापारी, सामाजिक संगठन और सीएसआर फंडिंग यूट्यूब चैनलों को मदद करते हैं। कुछ चैनल सदस्यता या यूपीआई माध्यम से दर्शकों से सीधी आर्थिक सहायता लेते हैं।

क्यों खास है यूट्यूब पत्रकारिता?

यह जनता का कैमरा और जनता के मुद्दे की पत्रकारिता का माध्यम है। यह पत्रकारिता गाँव के चबूतरों, खेत की मेड़ों, पंचायत भवनों और बाजारों से निकल रही है – जहाँ अब तक ना तो टीवी कैमरे पहुंचते थे और ना ही अखबार। कम लागत और कम खर्च में ज्यादा पहुँच का मॉडल इसे अन्य से ज्यादा विशिष्ट बना देता है। बस एक स्मार्टफोन, इंटरनेट और संकल्प की जरूरत होती है। कोई भारी भरकम सेटअप, ओबी वैन या न्यूज रूम की जरूरत नहीं। सबसे खास है, दोतरफा संवाद का होना। दर्शक अब केवल खबरें सुनने वाले नहीं, वे प्रतिक्रिया देने वाले, सवाल पूछने वाले और सहयोग करने वाले भी हैं।

तथ्यात्मक गुणवत्ता की चुनौती

इसमें दो राय नहीं कि यूट्यूब से जनपक्षधर पत्रकारिता को बल मिला है। लेकिन लाखों लोगों तक पहुँच के बाद भी अखबार की तुलना में यूट्यूब पत्रकारिता में गंभीरता, तथ्यों की जांच, विषयों की विविधता, संवेदी भाषा की कमी पत्रकारिता के मापदंड और मानदंड पर खरे नहीं उतरते हैं। कई बार बिना पुष्टि के खबरें चलाई जाती हैं। व्हाट्सएप आधारित रिपोर्टिंग की बढ़ती प्रवृत्ति चिंता का विषय है। ट्रोलिंग और रिपोर्टिंग का डर आम लोगों को भी है और पत्रकारों को भी। स्वतंत्र पत्रकारों को सत्ता पक्ष से धमकियाँ, रिपोर्टिंग पर एफआईआर या यूट्यूब चैनल बंद करने जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सत्ता की सख्त निगाहें

सरकारें यह मान रही हैं कि नियंत्रित मीडिया के बाहर की आवाजें अब जनमत को प्रभावित कर रही हैं। यूट्यूब पत्रकारिता सत्ता विरोधी होती जा रही है। झारखंड, छत्तीसगढ़, यूपी, बंगाल जैसे राज्यों में यूट्यूब चैनलों ने जमीन हड़पने, खनन माफिया, वन अधिकार हनन, और घोटालों को उजागर किया है। खासकर पंचायत स्तर की भ्रष्टाचार रिपोर्टिंग, योजनाओं की जमीनी हकीकत और पुलिसिया अत्याचार को जनता अब यूट्यूब से जान रही है और यही बात सरकार को असहज कर रही है।

सरकार डिजिटल मीडिया को नियमबद्ध करने की बात कह रही है, पर असल में यह नियंत्रण का प्रयास बनता जा रहा है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने संकेत दिया है कि डिजिटल न्यूज पोर्टलों और यूट्यूब चैनलों को रजिस्ट्रेशन में लाना आवश्यक होगा। यह कदम 2021 के आई टी रुल्स के तहत आगे बढ़ाया जा रहा है। सरकार चाहती है कि यूट्यूब न्यूज चैनलों पर प्रसारित कंटेंट की निगरानी एक फैक्ट चेक यूनिट या नोडल अथॉरिटी करे, जो तय करे कि कौन–सी खबर सही है और कौन–सी नहीं। फैक्ट चेक यूनिट को हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में चुनौती भी मिली है। स्व–नियमन की नीति की जरूरत यूट्यूब पत्रकारों का एक साझा मंच बनना चाहिए जो नैतिकता और तथ्य की पुष्टि के लिए आचार संहिता बनाए। सरकार से संवाद जरूरी है ताकि वह सबको एक ही लाठी से न हाँके। पत्रकार और अफवाह फैलाने वाले के बीच फर्क जरूरी है। दर्शकों को भी जागरूक करना होगा कि वे असत्य, भड़काऊ और सनसनीखेज यूट्यूब चैनलों को बढ़ावा न दें।

MJMC - 2009-11

ब्रेकिंग न्यूज

आपदा से सचेत रखने की पत्रकारिता

संजय खंडेलवाल

आज के युग में हम जैसे ही अपने मोबाइल फोन या टेलीविजन स्क्रीन की ओर देखते हैं, अक्सर एक लाल रंग की पट्टी पर हमारी नजर जाती है जिसमें मोटे अक्षरों में लिखा होता है – "ब्रेकिंग न्यूज!" यह शब्द हमें सावधान करता है, उत्सुक बनाता है और कभी–कभी व्यथित भी करता है। पर क्या आपने कभी गहराई से सोचा है कि यह ब्रेकिंग न्यूज वास्तव में क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? इसका विकास कैसे हुआ और यह हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

ब्रेकिंग न्यूज की परिभाषा

"ब्रेकिंग न्यूज" एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग पत्रकारिता और समाचार प्रसारण के क्षेत्र में किसी ताजा, अप्रत्याशित और तात्कालिक घटना की सूचना देने के लिए किया जाता है। यह खबर इतनी महत्वपूर्ण और तात्कालिक होती है कि यह अन्य सभी पूर्व निर्धारित समाचारों या कार्यक्रमों को रोककर तुरंत प्रसारित की जाती है। ब्रेकिंग न्यूज का मूल उद्देश्य जनता को त्वरित सूचना देना होता है ताकि वे समय पर निर्णय ले सकें या सचेत हो सकें।

ब्रेकिंग न्यूज का इतिहास

"ब्रेकिंग न्यूज" शब्द का उपयोग पारंपरिक रूप से टेलीविजन प्रसारण में किया गया। पहले जब टेलीविजन नया था, उस समय समाचार दिन में केवल कुछ निश्चित समय पर प्रसारित होते थे। लेकिन जब भी कोई अचानक या अत्यंत महत्वपूर्ण घटना घटती, तो उस समाचार को तत्काल "ब्रेकिंग" के रूप में पेश किया जाता।

ऐतिहासिक घटनाएँ जहाँ ब्रेकिंग न्यूज का इस्तेमाल हुआ :

1. **1963 – अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी की हत्या :** यह खबर जैसे ही सामने आई, अमेरिकी टेलीविजन पर पहले बार ब्रेकिंग न्यूज की पट्टी दिखी और कार्यक्रम रोके गए।
2. **1984 – इंदिरा गांधी की हत्या :** भारत में दूरदर्शन ने पहली बार किसी ब्रेकिंग न्यूज की तर्ज पर राष्ट्रीय शोक की घोषणा की।
3. **2001 – 9/11 आतंकवादी हमला :** यह आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी ब्रेकिंग न्यूज में से एक था।

ब्रेकिंग न्यूज और मीडिया का बदलता स्वरूप

पहले केवल रेडियो और टीवी चौनल ब्रेकिंग न्यूज देने का साधन हुआ करते थे, लेकिन अब डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने इस अवधारणा को पूरी तरह से बदल दिया है –

डिजिटल युग में ब्रेकिंग न्यूज :

- कोई भी घटना के कुछ ही मिनटों के भीतर पूरी दुनिया में वायरल हो जाती है।

- समाचार ऐप्स, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर तुरंत सूचना फैलाई जाती है।
- पत्रकारिता का यह रूप अब केवल "बड़े पत्रकार" तक सीमित नहीं रहा। आम जनता भी वीडियो, फोटो, ट्वीट्स के माध्यम से ब्रेकिंग न्यूज का हिस्सा बनती जा रही है।

ब्रेकिंग न्यूज की विशेषताएँ

1. तात्कालिकता (Immediacy) : यह खबर हाल ही में हुई घटना से जुड़ी होती है, जो तत्काल लोगों को बताई जाती है।
2. प्राथमिकता (Priority) : यह खबर अन्य सभी सामान्य खबरों या कार्यक्रमों को रोककर दिखाई जाती है।
3. आकस्मिकता (Unexpectedness) : ब्रेकिंग न्यूज सामान्यतः बिना किसी पूर्व सूचना के आती है। यह आश्चर्यचकित करने वाली होती है।
4. प्रभावशीलता (Impact) : यह किसी व्यक्ति, समाज, राज्य या देश को गहराई से प्रभावित कर सकती है।
5. सूचना की अपूर्णता (Incomplete Information) : चूंकि यह खबर ताजा होती है, इसलिए कई बार इसके सभी तथ्य सामने नहीं होते।

ब्रेकिंग न्यूज का उद्देश्य

ब्रेकिंग न्यूज का सबसे प्रमुख उद्देश्य है – जनता को तेजी से और सटीक सूचना देना ताकि वे सतर्क रह सकें, सचेत निर्णय ले सकें और सामाजिक जिम्मेदारी निभा सकें।

अन्य उद्देश्य :

- सूचना को प्राथमिकता देना
- लोगों को जागरूक करना
- लोकतंत्र में पारदर्शिता को बढ़ाना
- आपदा या संकट के समय जन–चेतना को बढ़ाना

ब्रेकिंग न्यूज एक सशक्त माध्यम है जो मीडिया को आम जनता से तत्काल जोड़ता है किन्तु ब्रेकिंग न्यूज के पीछे कई बार बाजारवाद, टीआरपी की होड़ और अफवाहों की दुनिया भी छिपी होती है, जिसके कारण कई मायनों में ब्रेकिंग न्यूज अपना प्रभाव खो रही है – और इसके कई कारण हैं, जैसे :

1. **शब्द का अति प्रयोग**

''ब्रेकिंग न्यूज'' शब्द का इस्तेमाल आजकल बहुत ज्यादा हो रहा है, यहाँ तक कि छोटी–छोटी खबरों के लिए भी। लगातार चेतावनी देने से इसकी तात्कालिकता और महत्ता कम हो जाती है। समाचार माध्यम इसका इस्तेमाल ध्यान खींचने और लोगों से जुड़ने की होड़ में करते हैं, तब भी जब खबर समय की दृष्टि से महत्वपूर्ण न हो या वास्तव में ''ब्रेकिंग'' न हो।

2. **सूचना का अतिभार**

हम चौबीसों घंटे अलर्ट, अपडेट और सूचनाओं से घिरे रहते हैं। इससे लोग किसी भी सूचना की तात्कालिकता के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं। सोशल मीडिया अपडेट की इस बाढ़ को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करता है, अक्सर बिना किसी संदर्भ या सत्यापन के।

3. **मीडिया में विश्वास में कमी**

बढ़ते संशयवाद और राजनीतिक ध्रुवीकरण के कारण पारंपरिक मीडिया में विश्वास कम हो रहा है। कई लोग सवाल करते हैं कि क्या ''ब्रेकिंग न्यूज'' सटीक है, हेरफेर की गई है, या सिर्फ लोगों का ध्यान खींचने की एक रणनीति है।

4. **निरंतर समाचार चक्रों की ओर बदलाव**

समाचार चक्र अब एपिसोडिक न होकर निरंतर हो गया है। चिंतन के लिए शायद ही कोई विराम मिलता है, इसलिए ब्रेकिंग न्यूज लगातार अपडेट की धारा में घुल–मिल जाती है।

5. **उपयोगकर्ता–संयोजित समाचार उपभोग**

अब लोग अपनी फीड स्वयं तैयार करते हैं और सोशल प्लेटफॉर्म, प्रभावशाली लोगों या विशिष्ट स्रोतों के माध्यम से समाचारों का अनुसरण करते हैं। परिणामस्वरूप, जो ''ब्रेकिंग'' होता है, वह शायद उस चीज से मेल नहीं खाता जिसकी उन्हें परवाह है या जिस पर वे भरोसा करते हैं।

आज ब्रेकिंग न्यूज जिस तरह से काम करती है, उसका पत्रकारिता, दर्शकों और सार्वजनिक निर्णय लेने की प्रक्रिया पर भी गहरा असर पड़ता है – और ये सभी सकारात्मक नहीं होते। यहाँ हर क्षेत्र का गहन विश्लेषण प्रस्तुत है :

1. **पत्रकारिता पर प्रभाव**

- **सटीकता से पहले गति पर जोर**

पत्रकारों पर तुरंत रिपोर्ट करने का भारी दबाव होता है, जिसका मतलब अक्सर सत्यापन से पहले ही प्रकाशित करना होता है। सुधार बाद में होते हैं (अगर होते भी हैं), जिससे विश्वसनीयता कम होती है।

- **सतही कवरेज**

ख़बर को ''ब्रेक'' करने की हड़बड़ी में, कवरेज में अक्सर गहराई, विश्लेषण और संदर्भ का अभाव होता है। खोजी पत्रकारिता और लंबी रिपोर्टिंग को दरकिनार किया जा सकता है क्योंकि वे तुरंत ट्रैफिक नहीं देते।

- **व्यावसायिक प्रोत्साहन**

मीडिया संस्थान क्लिक और जुड़ाव पर निर्भर करते हैं। ''ब्रेकिंग न्यूज'' पर क्लिक मिलते हैं, इसलिए इसे क्लिकबेट के रूप में जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। इससे नीचे की ओर दौड़ शुरू हो सकती है, जहाँ भावनात्मक या सनसनीखेज सामग्री को प्राथमिकता दी जाती है।

2. **दर्शकों पर प्रभाव**

- **संवेदनहीनता**

  लगातार अलर्ट और सनसनीखेज सुर्खियाँ दर्शकों को जरूरी खबरों के प्रति उदासीन बना देती हैं। यहाँ तक कि वास्तविक संकटों का सामना भी उदासीनता या थकान से हो सकता है।

- **चिंता और संज्ञानात्मक अतिभार**

  सूचनाओं की बाढ़ – खासकर नकारात्मक या भय से प्रेरित कहानियाँ – चिंता, भविष्यसूचक स्क्रॉलिंग और मानसिक थकान का कारण बन सकती हैं। क्या महत्वपूर्ण है और क्या शोर है, इसे अलग करना मुश्किल हो जाता है।

- **प्रतिध्वनि कक्ष और पुष्टिकरण पूर्वाग्रह**

  दर्शक अब ब्रेकिंग न्यूज को पक्षपातपूर्ण या फिल्टर्ड लेंस से देखते हैं। लोग केवल वही ''ब्रेकिंग'' कहानियाँ देखते हैं जो उनके मौजूदा विश्वासों को पुष्ट करती हैं, जिससे ध्रुवीकरण बढ़ता है।

3. **सार्वजनिक निर्णय लेने पर प्रभाव**

- **प्रतिक्रियावादी सोच**

  राजनेता, अधिकारी और संस्थान कभी–कभी बिना सभी तथ्यों के, तुरंत प्रतिक्रिया देने का दबाव महसूस कर सकते हैं। इससे खराब या प्रदर्शनकारी निर्णय लेने की प्रवृत्ति हो सकती है (उदाहरण के लिए, नीतियों की जगह सोशल मीडिया पर दिए गए बयान)।

- **महत्वपूर्ण मुद्दों पर कम ध्यान**

  ब्रेकिंग न्यूज जलवायु परिवर्तन, असमानता या शिक्षा जैसे दीर्घकालिक मुद्दों से ध्यान भटकाती है। समाधान विकसित होने से पहले ही कार्रवाई करने का जनता का दबाव खत्म हो सकता है।

- **अविश्वास और गलत सूचना**

  जब ब्रेकिंग न्यूज गलत या हेरफेर की हुई साबित होती है, तो इससे संस्थानों और मीडिया में जनता का विश्वास कम हो जाता है। यह अविश्वास गलत सूचना और षड्यंत्र के सिद्धांतों को पनपने के लिए उपजाऊ जमीन तैयार करता है।

निष्कर्ष :

इन सभी क्षेत्रों में, ब्रेकिंग न्यूज का दुरुपयोग पत्रकारिता को एक सार्वजनिक सेवा से एक तेज–तर्रार सूचना कैसीनो में बदल देता है। लोकतंत्र, जन स्वास्थ्य और सामाजिक विश्वास को मजबूत करने के लिए, मीडिया और जनता दोनों को धैर्य रखना होगा, गंभीरता से विचार करना होगा और कम सनसनी करनी होगी।

ब्रेकिंग न्यूज अब भी मायने रखते हैं, खासकर वास्तविक आपात स्थितियों (प्राकृतिक आपदाएँ, प्रमुख भू–राजनीतिक घटनाएँ, जन सुरक्षा के खतरे) के दौरान। लेकिन इसकी विश्वसनीयता व प्रभाव को फिर से हासिल करने के लिए, मीडिया संस्थानों को केवल गति पर नहीं, बल्कि संदर्भ पर ध्यान देंना होगा। साथ ही पारदर्शिता के माध्यम से विश्वास का पुनर्निर्माण करना होगा।

MJMC 2009-11

हिंदी भाषा विकास और पत्रकारिता

नीरज कुमार पाण्डेय

लेखक मधुमक्खी हैं, पुस्तक उसका मधुकोष और रचनाएं उसका शहद। वह घटनाओं से गुजरता है, मित्रों–अमित्रों से मिलता है, बहुत कुछ देखता है,पढ़ता है, सुनता–सुनाता है। इस क्रम में उसके मन में मथने लगते हैं अनेक प्रश्न और उठने लगते हैं भाव। इसी मन–मंथन से फूटने लगते हैं विचार। इन्हीं विविध विचारों को प्रस्तुत करने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है,एक ऐसी भाषा जिसमें हम अपने मन–मंथन से फूटते विचारों का दृश्य प्रस्तुत कर सकें। इसी में हमारी अपनी भाषा सामने आती है और वह है 'हिंदी'।

हिंदी गद्य का प्रारंभ हिंदी पत्रकारिता के साथ–साथ ही हुआ है। इस गद्य काल का प्रारंभ संवत 1857 माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र इसके प्रथम विशेषज्ञ और विद्वान माने जाते हैं। उस समय के जनमानस की लोकभाषा को ही हिंदी पत्रकारिता ने अपनाया था। परिमार्जित हिंदी का प्रयोग 1900 ईस्वी से प्रारंभ हुआ।

हिंदी को परिमार्जित कर नई दिशा देने वाले आचार्य 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' के काल में ही पत्रकारिता और साहित्य का अभिवर्धन हुआ एवं मानक व्याकरण प्रस्तुत किया गया। इसके फलस्वरूप पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी के विकास के लिए क्रांतिकारी प्रयोग किए।

हिंदी को जन भाषा बनाने में पत्रकारिता की प्राथमिक एवं अहम भूमिका रही। हिंदी के विकास का काल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का काल था। किसी आंदोलन या क्रांति के समय भाषा एवं साहित्य का सर्वाधिक विकास होता है क्योंकि आंदोलन के संचालन की वाहिका होती है 'भाषा'।

वाक्यों के गठन में सबसे पहले पत्रकारिता और साहित्य की भाषा में साफ अंतर हो जाता है। पत्रकारिता की भाषा सीधी और सपाट बयानी जैसी होती है। पत्रकारिता में प्रचलित और लोक शब्दों का प्रयोग अधिक होता है,जबकि साहित्य में प्रयोग की संभावना अधिक होती है। उसके वाक्यों का गठन लच्छेदार और बिंबसहित होता है। पत्रकारिता के वाक्य छोटे–छोटे होते हैं। पत्रकारिता के भाषा की सामान्य समझ रखने वाले पाठक भी होते हैं पर साहित्य के कुछ खास पाठक होते हैं। साहित्य के एक अलग पाठक वर्ग होते हैं। पत्रकारिता का पाठक–वर्ग साहित्य के पाठक–वर्ग से बहुत बड़ा होता है। पत्रकारिता के पाठक समाचार जानने के उद्देश्य से समाचार पत्र खरीदते हैं पर साहित्य के पाठक आत्मसंतुष्टि और ज्ञान वृद्धि के लिए पुस्तकें खरीदते हैं। अब तो अधिकांश अखबारों के समाचारों,फीचर या संपादकीय में बोधगम्य,सरल भाषा और छोटे–छोटे वाक्यों वाली भाषा का ही प्रयोग किया जाता है ।

इस तरह 'हिंदी' शब्द भाषा के रूप में आया और फिर हिंदी के साहित्यकारों और पत्रकारों ने मिलकर इसे सजाया संवारा। नए–नए शब्दों से इसे विभूषित किया और इसे आधुनिक बनाए रखने के लिए अनेक प्रावधान किए। हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में आज पत्रकारिता अग्रणी भूमिका में है ।

पत्रकारिता विभाग

चार दशक के इतिहास की आंखों देखी

अभिषेक शास्त्री

90 के दशक के उतरार्द्ध का समय भारत में आर्थिक संकट का दौर था। बिहार में कांग्रेस शासन का अंत और जनता दल की राजनीति का उभार हो रहा था। झारखण्ड, बिहार का ही हिस्सा था और यहाँ लगाातार अलग राज्य के निर्माण की मांग तेज हो रही थी। इन राजनीतिक–सामाजिक परिस्थितियों का सीधा असर पत्रकारिता में भी था। तब झारखण्ड में मुख्य रूप से राँची एक्सप्रेस, प्रभात खबर और आज दैनिक नियमित अखबार थे। कुछ अन्य अखबारों जैसे– हिन्दूस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया और सर्च लाईट सहित नवभारत टाईम्स के ब्यूरो आफिस होते थे।

इन्हीं परिस्थितियों के बीच 1987 में तात्कालीन प्रखर पत्रकारों पद्मश्री बलवीर दत्त और आरएन झा के साथ प्रथम निदेशक डॉ. बीएन त्रिपाठी ने अपने संयुक्त प्रयास से राँची विश्वविद्यालय, राँची के अन्तर्गत पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की नींव रखी। यह बुनियाद सिर्फ एक विषय की पढ़ाई का नहीं बल्कि राज–समाज को दिशा देने वाले युवा पत्रकारों को तैयार करने का भी था। उस समय संयुक्त बिहार का यह एक मात्र पत्रकारिता प्रशिक्षण संस्थान होता था। संस्थान के बुनियाद से अपने भवन तक के चार दशकीय इतिहास में कई उतार–चढ़ाव आए। एक शख्सियत ने बड़े शिद्दत से इसके इतिहास को बनते हुए अपनी आंखों से देखा। 1987 से अब तक विभाग के सहायक रहे पूर्णेन्दु शेखर तिवारी, इस विभाग के बनते इतिहास के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। यही उनका हासिल भी है कि पहले बैच के विद्यार्थियों से लेकर वर्तमान विद्यार्थियों तक सभी को नाम और चेहरे से बखूबी पहचान लेते हैं। तिवारी जी से बातचीत पर आधारित यह आलेख चार दशकों के मीडिया परिदृश्य के साथ संस्थान के इतिहास की भी है।

बुनियाद और प्रगति का दशक

तिवारी जी बताते हैं कि 1987 में पत्रकारिता विभाग सेन्ट्रल लाइब्रेरी के एक कमरे से शुरु हुआ था। बेहद सीमित संसाधन के साथ कक्षाएँ आरम्भ हुई। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने पर इसे स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में एक कमरे में स्थानांतरित किया गया। पहले बैच में कुल 50 विद्यार्थी थे। इनमें 35 विद्यार्थियों ने बीजेएमसी की फाइनल परीक्षा दी थी। तिवारी जी बताते हैं कि पहले बैच के सभी विद्यार्थियों का मीडिया संस्थानों में शत प्रतिशत प्लेसमेंट हुआ। इससे विभाग की लोकप्रियता बढ़ी और नामांकन लेने के लिए आवेदनों की सूची लम्बी होती चली गई।

डॉ. बीएन त्रिपाठी जी के बाद डॉ. एसडी सिंह 1988 में विभाग के निदेशक बने। वे विश्वविद्यालय में सीसीडीसी और स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान के अध्यक्ष भी थे। उन्होने पत्रकारिता विभाग को स्नातकोत्तर इतिहास विभाग से स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग के एक हिस्से में स्थानांतरित किया। प्रथम तल में पत्रकारिता विभाग को एक हॉल और दो कमरे मिले। यह पता, आने वाले समय में विभाग की पहचान बन गई। इसके साथ ही डॉ. एसडी सिंह ने अपने तीन साल के (1988–1991) कार्यकाल में विभाग के पुस्कालय को भी दूरुस्त कराया।

1991 में डॉ. बीएन सिंह विभाग के निदेशक बने। इनका कार्यकाल छह साल का रहा, 1997 तक। तिवारी जी बताते हैं कि इन्होने संसाधनों को बढ़ाने और बेहतर करने की कोशिश की। इनके कार्यकाल में वित्तीय स्थिति में व्यापक सुधार हुआ। इनके बाद प्रोफेसर जगधारी सिंह निदेशक बने। अपने दो साल के कार्यकाल में कई सेमिनार कराए। अपने प्रयास से यूजीसी का अनुदान लिया। इस अनुदान से ही विभाग में आफिस के लिए कम्प्युटर की व्यवस्था की गई थी।

नई सदी का वह स्वर्णिम दशक

उम्मीदों भरी नई सदी में सम्भावनाओं ने दस्तक दी। नए राज्य के रूप में झारखंड का गठन हुआ। इसके साथ ही एक नए सामाजिक, राजनीतिक, और पत्रकारीय युग की शुरुआत हुई। अलग राज्य आंदोलन में अपने हिस्से की आहूति दे रहे पत्र–पत्रिकाओं और पत्रकारों की भूमिकाएँ बदल गई। इनका ध्यान अब राज्य के नवनिर्माण पर केन्द्रित हुआ। आंदोलन की खबरों की जगह अब विकासात्मक खबरें अखबारों की सुर्खियां बनने लगी। पत्रकारिता ने राज्य निर्माण की प्रक्रिया, विकास, प्रशासन और जनसरोकारों को प्रमुखता दी। नक्सलवाद के गहराते प्रभाव ने राजनीतिक–सामाजिक अस्थिरता को बढ़ाया जिससे पत्रकारों को पेशेवर असुरक्षा से भी जूझना पड़ा। इस बीच दैनिक हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, आई नेक्स्ट, दैनिक भास्कर जैसे राष्ट्रीय अखबारों का प्रकाशन राँची से आरम्भ हुआ। कई क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समाचार चैनलों ने भी अपने प्रसारण शुरु किए। पत्रकारिता का स्वरूप अब मीडिया में बदल रहा था। इन बदलावों से युवा पत्रकारों के लिए नए अवसर भी सृजित हुए।

ऐसे समय में डॉ. ऋता शुक्ल ने पत्रकारिता विभाग के निदेशक का पद सम्भाला (18 जनवरी 1999)। उनके विशिष्ट व्यक्तित्व का प्रभाव विद्यार्थियों और विभाग पर पड़ने लगा। अपने प्रभुत्व से उन्होने अलग राज्य बनते ही प्रदेश सरकार से विभाग के लिए अनुदान प्राप्त किया। इससे दो बड़े काम हुए – पहला, विद्यार्थियों के लिए कम्प्युटर लैब और स्टुडियो का निर्माण हुआ। दूसरा, देश के कई बड़े प्रकाशकों और लेखकों के पत्रकारिता से सम्बंधित पुस्तकों से विभाग का पुस्तकालय समृद्ध किया गया।

तिवारी जी बताते हैं कि डॉ. शुक्ल ने विभाग में ढांचागत संसाधनों को दूरुस्त करने के साथ–साथ अकादमिक उन्नति पर भी ध्यान दिया। उन्होने राँची के मीडिया संस्थानों से बेहतर फैकल्टी को अध्यापन के लिए विभाग से जोड़ा। देश के कई मीडिया एक्सपर्ट को सेमिनार और वर्कशॉप के लिए विभाग में आमंत्रित किया। कम्प्युटर लैब और स्टुडियो के बनने से टीवी पत्रकारिता के प्रशिक्षुओं को ज्यादा व्यवहारिक प्रशिक्षण मिलने लगा। उन्होने विभाग की वार्षिक पत्रिका 'जनश्रुत' का प्रकाशन आरम्भ किया। 2001 में इसका विमोचन तत्कालीन राज्यपाल ने किया था। यह पत्रिका विद्यार्थियों को लिखने और छपने का एक बड़ा मंच बना।

उन्होने अपने प्रयास से 2007–08 में प्रदेश की मीडिया परिदृश्य के शोध के लिए एक 'पीठिका' का सृजन विभाग में ही कराया। बिहार के पुरोधा पत्रकार 'रामजी मिश्र मनोहर' के नाम पर इस पीठिका में डॉ. अर्जुन तिवारी ने योगदान दिया। डॉ. तिवारी ने उस सत्र के विद्यार्थियों की कक्षाएँ भी लीं और शोध कार्य भी किया। इसी वर्ष डॉ. शुक्ल के निर्देशन में विद्यार्थियों ने पहल करते हुए स्टुडेन्ट जर्नल 'स्वतंत्र अभिव्यक्ति' का प्रकाशन शुरु किया। इसमें विद्यार्थी ही पत्रकार, मुद्रक और संपादक थे। इस पत्रिका का विमोचन माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति डॉ. अच्युतानन्द मिश्र ने किया था।

डॉ. ऋता शुक्ल के प्रयास से विभाग में 2009–2011 सत्र से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर की पढ़ाई आरम्भ हुई। विभाग में बीजेएमसी और एमजेएमसी दो कोर्स हो गए। विभाग के 22 वर्षों में पासआउट विद्याार्थियों का संगठन (जोसारु) बनाना भी डॉ. शुक्ल के प्रयास का नतीजा था। अपने कार्यकाल के अंतिम वर्ष में उन्होने पुर्ववर्ती विद्यार्थियों का दो दिवसीय सम्मेलन (स्पंदन) कराया। इस सम्मेलन में देश भर के विभिन्न मीडिया संस्थानों में कार्यरत बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए। डॉ. ऋता शुक्ल के 12 वर्षों का कार्यकाल (1999–2011) विभाग को मीडिया प्रशिक्षण में राष्ट्रीय पहचान देने वाला साबित हुआ।

कुछ अस्थिरता का दौर

नई सदी का दूसरा दशक झारखंड में पत्रकारिता के लिए एक जटिल और विषम समय रहा। जहाँ सूचना क्रांति, डिजिटल मीडिया और जनसंचार की पहुँच बढ़ी, वहीं पत्रकारों की सुरक्षा, निष्पक्षता और स्वतंत्रता पर भारी दबाव भी बना रहा। अखबार उत्पाद हो रहे थे। खबरों को मूल्यवर्द्धकता के पैमाने में परखा जा रहा था। तब मीडिया संस्थानों में मजबूत होते प्रबंधन के लकदक कार्यालय, संपादकों के कमरे को हाशिए में सरका रहे थे। संपादक जैसे पद को भी प्रबंधन के नीचे के 'प्रबंधक' में सीमित किया जा रहा था। जिन्हें बस 'पीआरबी एक्ट की धारा 7 के तहत खबरों के संपादन और चयन की जिम्मेवारी दी जा रही थी।' इन सब ने पत्रकारिता की दिशा और दृष्टि को गहराई से प्रभावित किया।

टीवी न्यूज की चमक–दमक ने बीते दशक में युवा पत्रकारों को चकाचौंध की दुनिया दिखायी। पत्रकारिता प्रशिक्षण का ढांचा भी बदल रहा था। ऐसे समय में प्रोफेसर जेपी सिंह के छह माह के कार्यकाल (2011–2012) के बाद डॉ. सुशील 'अंकन' का एक साल का समय (2012–2013) विभाग में टीवी प्रशिक्षण के नाम रहा। इसके तुरंत बाद डॉ. सरस्वती मिश्रा के दो माह के छोटे कार्यकाल के बाद पांच सालों (2013–2018) के लिए डॉ. एसएमपीएन सिंह शाही विभाग के निदेशक बने। तिवारी जी

बताते हैं इनके कार्यकाल में भी एक एलुमिनाई मीट का आयोजन किया गया था। इसके बाद डॉ. अशोक कुमार चौधरी ने दो साल (2018–2020) के लिए निदेशक का पद सम्भाला।

नाम और काम के बदलाव से कायम उम्मीदें

2020 के महामारी के बाद का समय स्थापित मीडिया संस्थानों के लिए अस्तित्व का संघर्ष लेकर आया। सोशल मीडिया 'वायरल' की तरह लोगों के बीच तेजी से न सिर्फ लोकप्रिय हुआ, बल्कि सभी को अभ्यस्त और आदि भी बनाया। हस्तगत हो चुके मोबाइल ने पत्रकारिता और मीडिया को बेहद आम बना दिया। गांव–गांव और मुहल्ले के मुहल्ले मीडिया की पहुँच घर–घर हो गई। अनियंत्रित इस 'मीडियागिरी' से नुकसान पत्रकारिता का ही हुआ। मीडिया में नैतिकता, स्वनियंत्रण, तटस्थता, आदि को तिरोहित करते हुए पत्रकारिता में भरोसे और विश्वास की तिलांजलि दे दी।

इस प्रतिकूल समय में ही डॉ. मुकुन्द चन्द मेहता ने विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के साथ–साथ विभाग के निदेशक का पद सम्भाला। साथ डॉ. विष्णु चरण महतो को उपनिदेशक बनाया गया। 34 वर्षों के बाद 2021 में विभाग को अपना भवन मिला। इस भवन में कंप्यूटर लैब, ऑडियो–विजुअल उपकरण, कैमरे, रिकॉर्डिंग स्टूडियो आदि संसाधन विकसित किए गए। इन संसाधनों की उपलब्धता के साथ ही अब विभाग में तीन कोर्स संचालित होने लगे– बीए इन मास कम्युनिकेशन, एमए इन मास कम्युनिकेशन और एमए इन फिल्म स्टडीज। 2022 में डॉ. बीपी सिन्हा विभाग के निदेशक बने। इसी साल विभाग नाम बदल कर 'स्कूल ऑफ मास कॉम्युनिकेशन' कर दिया गया।

इस वर्ष (2025) के आरम्भ में डॉ. बसंत कुमार झा को स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन का निदेशक बनाया गया। विभाग के 38 वर्षों के इतिहास में पहली बार मीडिया बैक ग्राउंड के किसी प्रोफशनल को निदेशक का पद मिला। विश्वविद्यालय के इस नये और बड़े बदलाव से बेहतरी की उम्मीद जगती है। नाम और व्यवस्था का बदलाव यह उम्मीद भी जगाता है कि मीडिया इन्फ्लुएंसर बनकर 'वायरल' होने की भेड़चाल में भटके युवा पत्रकारों को नई दिशा, एवं दृष्टि मिलेगी।

BJMC - 2007-08

भारतीय पत्रकारिता

महिला पत्रकारों से समृद्ध होता चौथा स्तंभ

डॉ. अनुपमा प्रसाद

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने तथा सत्य को उजागर करने का कार्य पत्रकारिता करती है। ऐसी न केवल मान्यता या धारणा है बल्कि वास्तविकता भी यही है। भारतीय पत्रकारिता का इतिहास गौरवशाली रहा है और इसमें महिलाओं का योगदान प्रारंभ से ही उल्लेखनीय रहा है।. हालांकि, पहले यह योगदान सीमित था, लेकिन समय के साथ महिलाओं ने पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करायी है। आज महिलायें सिर्फ रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि संपादक, न्यूज एंकर, संवाददाता, फोटो जर्नलिस्ट, सोशल मीडिया मैनेजर और मीडिया उद्यमी के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

आज के दौर की बात करने से पहले ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय पत्रकारिता में महिलाओं की भूमिका पर एक नजर डालना जरूरी है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौर में पत्रकारिता एक आंदोलन के रूप में विकसित हो रही थी और उस समय भी महिलाओं ने अपने लेखों व विचारों के माध्यम से समाज को जागरूक करने का कार्य किया। 19वीं और 20वीं सदी में भारत की कुछ प्रख्यात महिला पत्रकारों में कमलादेवी चट्टोपाध्याय, रामा बाई रानाडे, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली जैसी महिलाओं का नाम प्रमुखता से लिया जाता है. इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने लेखन और संपादन कार्य के माध्यम से समाज में क्रांति की लहर पैदा की थी।

महिलाओं ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाने, महिलाओं की शिक्षा, अधिकारों और स्वतंत्रता के पक्ष में लेखन करके सामाजिक जागरूकता बढ़ाई। उस दौर में जब महिलाओं को घर की चारदीवारी में सीमित रहने को कहा जाता था तब इन महिलाओं ने पत्रकारिता के माध्यम से समाज में महिलाओं के अधिकारों की पैरवी की और कई सामाजिक सुधार आंदोलनों की अगुवाई की।

वर्तमान समय में भारतीय महिला पत्रकारों का योगदान महत्वपूर्ण है। आज भारतीय मीडिया में महिलायें अग्रणी भूमिका निभा रही है। वे केवल महिला मुद्दों तक सीमित नहीं हैं बल्कि राजनीति, खेल, व्यापार, विज्ञान, तकनीक, अपराध, युद्ध रिपोर्टिंग और अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्टिंग जैसे कठिन क्षेत्रों में भी बेहतरीन कार्य कर रही हैं। न्यूज रिपोर्टिंग में महिला पत्रकारों ने अपना परचम फहराकर अपनी योग्यता साबित की है। भारतीय टेलीविजन चौनलों, अखबारों और ऑनलाइन मीडिया में कई महिला पत्रकार रिपोर्टिंग के क्षेत्र में अपनी योग्यता और ईमानदारी से कार्य कर रही हैं।

संपादन और मीडिया संस्थान प्रबंधन में भी आज महिलाओं का बोलबाला है। महिलायें कई प्रमुख अखबारों और न्यूज चौनलों में संपादक और प्रबंध संपादक जैसे उच्च पदों पर कार्यरत हैं। संपादन जैसे जिम्मेदारीपूर्ण कार्य में उनकी नेतृत्व क्षमता और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण पत्रकारिता को नई दिशा दे रही है।

डिजिटल पत्रकारिता में भी महिलाओं की बढ़ती भागीदारी एक सकारात्मक संकेत एवं संदेश भी है। डिजिटल मीडिया के आगमन ने पत्रकारिता के स्वरूप को काफी हद तक बदल दिया है। ब्लॉग्स, वेब

पोर्टल्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स आदि के माध्यम से महिलायें स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता कर रही हैं।

अनेक महिला पत्रकार फ्रीलांस रिपोर्टर, यूट्यूब कंटेंट क्रिएटर और पॉडकास्ट होस्ट के रूप में सक्रिय हैं। डिजिटल मीडिया के कारण अब महिलायें बिना संस्थागत बंधनों के अपनी आवाज पूरी दुनिया तक पहुँचा रही हैं।

महिला पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण बात यह भी है कि वे सामाजिक मुद्दों की सजग प्रहरी हैं। महिलाओं ने सामाजिक मुद्दों जैसे महिला सशक्तिकरण, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, यौन उत्पीड़न, लैंगिक समानता आदि पर विशेष रूप से कलम चलायी है। उन्होंने ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर रिपोर्टिंग कर समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया है।

पत्रकारिता को विशेष रूप से जोखिम और चुनौतिपूर्ण क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है, लेकिन पत्रकारिता में महिलाओं के आने के कारण और इस क्षेत्र में उनकी बढ़ती रूचि की पृष्ठभूमि में पहुँचना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

1. **शिक्षा और जागरूकता में वृद्धि** : आज लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और पत्रकारिता के बढ़ते आकर्षण के कारण इस क्षेत्र को कैरियर के रूप में चुन रही हैं।
2. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना** : महिलायें अपनी पहचान और आत्मनिर्भरता के लिये पत्रकारिता जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में कदम रख रही हैं।
3. **सामाजिक जिम्मेदारी का भाव** : समाज में व्याप्त अन्याय और असमानताओं को दूर करने के लिये महिलाओं ने पत्रकारिता को एक प्रभावशाली माध्यम मान लिया हैं।
4. **तकनीकी विकास** : डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और सोशल मीडिया ने महिलाओं के लिये इस क्षेत्र में प्रवेश आसान कर दिया है।

हालांकि महिलाओं के लिये पत्रकारिता में चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ बरकरार है, पर फिर भी उन्होंने पत्रकारिता में उल्लेखनीय प्रगति की है। पत्रकारिता क्षेत्र में महिलाओं के सामने मौजूद महत्वपूर्ण चुनौतियों की फेहरिस्त में से कुछेक पर गौर करना बहुत जरूरी है।

1. **लैंगिक भेदभाव** : कई बार महिला पत्रकारों को उनकी योग्यता के बजाय उनके महिला होने के आधार पर आँका जाता है। उन्हें "सॉफ्ट बीट्स" जैसे सामाजिक मुद्दों या मनोरंजन तक सीमित रखने का प्रयास किया जाता है।
2. **सुरक्षा संबंधी जोखिम** : युद्ध क्षेत्र, अपराध क्षेत्र, राजनीतिक उथल–पुथल वाले इलाकों में रिपोर्टिंग के दौरान महिला पत्रकारों को सुरक्षा संबंधी गंभीर खतरे होते हैं। यौन उत्पीड़न, धमकी और साइबर बुलिंग जैसी समस्यायें आम हो गई हैं।
3. **कार्यस्थल पर असमानता** : हालांकि महिलाएं नेतृत्व पदों तक पहुँच रही हैं, फिर भी निर्णय लेने की भूमिका में पुरुषों का वर्चस्व बना हुआ है। वेतन में असमानता, प्रमोशन में भेदभाव जैसी समस्यायें अब भी बनी हुई है।
4. **सामाजिक और पारिवारिक दबाव** : भारतीय समाज में महिलाओं पर पारिवारिक जिम्मेदारियों

का अधिक बोझ होता है, जिससे वे पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। इस मामले में मेरे विचारों के अनुसार महत्वपूर्ण समाधान और सुझाव निम्न हैं –

1. **महिलाओं के लिए सुरक्षित कार्यस्थल** : मीडिया संस्थानों को महिला पत्रकारों के लिये सुरक्षित कार्यस्थल और फील्ड में सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहिये। यौन उत्पीड़न के मामलों में सख्त कार्रवाई करनी चाहिये।

2. **नेतृत्व में बराबरी का अवसर** : महिलाओं को संपादन और प्रबंधन के उच्च पदों तक पहुँचाने के लिए संस्थागत स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिये, उन्हें नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिये प्रशिक्षण और अवसर दिया जाना चाहिये।

3. **लैंगिक संवेदनशीलता** : मीडिया संगठनों और पाठकों–दर्शकों में लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करनी चाहिये ताकि महिला पत्रकारों के कार्य को उनके लिंग के बजाय उनकी योग्यता से आँका जाये।

4. **सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन** : महिलाओं के लिये करियर और परिवार दोनों को महत्व देनेवाली सामाजिक मानसिकता को बढ़ावा देना चाहिये, ताकि वे बिना किसी दबाव के अपने पेशेवर जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।

भारतीय पत्रकारिता में महिलाओं के लिये भविष्य में अनगिनत संभावनायें हैं। तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के इस युग में पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और भी अधिक व्यापक होने जा रही है। डिजिटल मीडिया, डेटा जर्नलिज्म, साइबर पत्रकारिता, पॉडकास्टिंग, एआई आधारित न्यूज रिपोर्टिंग जैसे नये क्षेत्रों में महिलायें अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। आनेवाले समय में महिलाओं की भागीदारी पत्रकारिता को अधिक संवेदनशील, सशक्त और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनायेगी और आज के सारे संकेत इसका स्पष्ट इशारे करते हैं।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यही है कि भारतीय पत्रकारिता में महिलाओं की भूमिका केवल संख्या तक ही सीमित नहीं है, बल्कि गुणवत्ता और दृष्टिकोण में भी उनकी मौजूदगी ने इस क्षेत्र को समृद्ध किया है। वे सजग पत्रकार, निष्पक्ष संपादक, संवेदनशील संवाददाता और उत्कृष्ट विचारक के रूप में कार्य कर रही हैं। हालांकि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं परंतु उनके संघर्ष, प्रतिभा और दृढ़ संकल्प के कारण वे इन चुनौतियों का सामना कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य निरंतर कर रही हैं। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने भारतीय पत्रकारिता को अधिक मानवीय, संवेदनशील और समावेशी बना दिया है। यदि महिलाओं को समान अवसर और सुरक्षित वातावरण दिया जाये तो वे भारतीय पत्रकारिता को वैश्विक स्तर पर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्षम हैं।

MJMC - 1989-90

कहानी

झा सर की वसीयत...!

छंदश्री

मुक्ति धाम में 11 चिताएं एक साथ जल रही थी। ग्यारह शवों के साथ अंतिम यात्रा के पीछे चलने वालों की तादाद लगभग ढाई सौ थी जो मुक्ति धाम तक पहुँचते– पहुँचते करीब पांच सौ हो गया। अंतिम यात्रा का ऐसा मंजर सिर्फ महान नेताओं या शहीद जवानों के समय ही देखने को मिलता है। पर एक ही घर से एक साथ ग्यारह शवों का निकलना घोर आश्चर्य और कौतूहल का विषय था।

अंतिम यात्रा के पीछे पीछे नम आंखे और सन्नाटे को चीरती पदचाप थी।

अमूमन शव यात्रा के मुक्तिधाम पहुँचते ही परिजनों को छोड़कर हल्की रस्म अदायगी के बाद ज्यादातर पास पड़ोस के लोग तुरन्त ही वापस लौट जाते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात इस अंतिम यात्रा में जुटे पड़ोस–पड़ोस तथा दूर–दराज के लोग भी परिजनों के साथ चिताओं के बुझने तक वहीं रुकने का मन बना चुकें थे।

आखिर वहीं तो खुलने वाला था, झा सर का वसीयतनामा। झा सर उर्फ रघुनंदन झा, एम ए, एल एल बी, और पेशे से पत्रकार। छोटे से शहर में जहां से छः राष्ट्रीय अखबार हिंदी में तथा चार अंग्रेजी में और 30 से भी ज्यादा लोकल अखबार प्रकाशित होते हैं, वहां हर अखबार के एडिटोरियल के सदस्यों के जीवन में कभी न कभी झा सर की कोई न कोई छाप रही ही है।

मुक्ति धाम में हर अखबार के सदस्य थे, साथ थे विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के सारे छात्र। ठसाठस भीड़ के बीच लोगों की नजर विशाल पीपल पेड़ के एक टहनी में शांत बैठे एक तोते पर पड़ी जो एक टक उन 11 शोलों की तरफ नजरें टिकाये हुए थी।

इसी बीच 'दैनिक बातें' अखबार के सुब्रत के मन में बार–बार आ रहा था, ''कल के लिए हैडलाइन क्या होना चाहिए। सभी तो सर के निधन को फ्रंट पेज पर लेंगे। पर मेरा न्यूज सबसे बेहतर और बाकी से अलग कैसे होगा''?

याद आया, सर कहते थे, ऑब्जरवेशन प्रोड्यूस बेस्ट न्यूज, देखो–सुनो, देखो –सुनो और खबर को सूँघो। सर कोई दार्शनिक नही थे, पर वो जो भी बोलते थे, जो भी कहते थे, वह किसी महापुरुष की वाणी से कम की नही होती थी।

एक बार एक सिटींग एम पी के निधन को कवर करके लौटने के बाद, विश्वविद्यालय में क्लास ले रहे थे। बोले, ''उसके बडे बेटा को जल्दी सलटा दिया जाएगा और छोटा बेटा और पत्नी पार्टी से टिकट लेकर एल्वेक्शन लड़ेंगे। ड्रामा के लिए तैयार रहना।'' आश्चर्य की बात, सात दिनों के भीतर वही हुआ। उस एम पी के बड़े बेटे का देहांत हो गया। फॉरेंसिक रिपोर्ट में मृत्यु का कारण हार्ट अटैक बताया गया पर लोगों को अब भी संदेह है कि हत्या की गयी थी। हमलोग उसी दिन सर को पूछे सर आपका सोर्स क्या था। उन्होंने बोला 'ऑब्जरवेशन'।

''नेता का बड़ा बेटा मुखाग्नि देते वक्त बहुत सीरियस था। पत्नी और छोटा बेटा आंसू बहा रहे थे, कह रहे थे उनके जीने का अब कोई मतलब नहीं बचा, खूब याद कर रहे थे नेताजी को! वहीं दूसरी तरफ

बड़ा बेटा, निःशब्द था, चुपचाप.... हर काम कर रहा था। असल में यह चुप हो जाना दर्शाता है सख्त हो जाना। जो इंसान चुपचाप हर काम करते जाए, आपका विरोध न करे, उसको समझना कठिन हो जाता है। ऐसे में उनकी पत्नी को बड़े बेटे से खतरा था, क्योंकि उसका राजनीति में इंटरेस्ट बड़ा घातक होता।''

सर ठीक बोले थे। ऐसा ही हुआ था। पर आज सुब्रत क्या लिखेगा? सब लोगों की आंखे नम। कोई किसी से कोई बात नही कर रहा था। आराम से चार मरे पांच घायल लिखने वाले समुदाय को सामयिक लकवा मार गया था।

सम्वेदना हीन समुदाय, जो किसी के एक्सीडेंट की खबर मिलने पर कोई मरा की नही सबसे पहले पूछता है बिना किसी संकोच के, और चार प्याली चाय धकेल कर रिपोर्ट लिख कर दुबारा कन्फर्म करता हैं कि कोई मरा, नही तो रिपोर्ट अंदर के पन्ने पर जाएगी। लेकिन आज सब सोच में थे।

'नवीन पत्र' की तेज पत्रकार' पायल.. सर को विश्विद्यालय के दिनों से जानती है। उसे बार–बार सर याद आ रहे थे.. खासकर उस दिन की याद जब ..... सर वांटेड फिल्म देख कर आए थे। क्लास घुसते ही सर कहे, 'एक बार कमिटमेंट कर दी तो मैं खुद की भी नही सुनता'। पूछने पर सर ने बताया था कि उनको वो डायलाग 15 साल पहले मिलना चाहिए था।

''मैं तो शादी ही नही करना चाहता था, पर ठहरा मैथिल ब्राम्हण। बाबूजी ने लिख भेजा, लड़की तय हो गयी है, हमने वचन दे दिया है, तुम्हे शादी करनी पड़ेगी। मैंने भी सोच लिया कि शादी करूँगा तो पत्नी को गांव में हरगिज नही छोरूँगा। फिर क्या था, शर्त सुना दिया पिताजी को! बहुत ऐंठन था उनको पर मान गए। पर मुझे क्या पता था उन्होंने इस एलएलबी के लिए अत्यंत सुंदरी सातवीं फेल लड़की खोजी है।''

'खैर, सुंदर पत्नी हो तो शिक्षा जाये तेल बेचने, यह सोच कर उसको अपने साथ शहर ले आया। अच्छी जिंदगी थी हमारी। एक पुत्र हुआ, वह शिक्षा की दृष्टि से बहुत होनहार हुआ, पर निकला नालायक। 15 वर्ष पहले, मेरी पत्नी को पहला हार्ट अटैक आया। बेटा कनाडा में था। मैं बोला तुरन्त आ। उसने आने के बजाय 5 लाख रुपये भेज दिए। पत्नी दूसरे हार्ट अटैक में मर गयी बिना बेटे को देखे। मैंने सोचा, जो तुझे जनी है, वही देखे बिना चली गयी, तो मुझे और देखने आने की जरूरत नही। मैंने अपने ही अखबार में निकलवा दिया कि..... इस जीवन में मेरा कोई नही है, अतः मेरे अंतिम सांस लेने के बाद समाज ही अंतिम क्रिया कर्म करे। आज भी लोग मुझे पूछते हैं कि बेटा कैसा है तो मैं कहता हूं, मेरा तो कोई बेटा नही। अब से कहूंगा, एक बार कमिटमेंट कर दी तो खुद की भी नही सुनता, और ठहाका मार कर हंस उठे थे।

उस क्लास के बीते अब 15 साल से ज्यादा हो गये। उस समय सर थे 65 साल के। अब तो वे 80 पार थे। कुछ ऐसा ही प्रणय भी सोच रहा था। सर का बड़ा चहेता था। हमेशा उनके घर जाना, कुछ न कुछ खरीद कर देना। सर को पहला मोबाइल भी प्रणय ने ही दिया था। तब सर बोले थे, खत्म कर देना चाहते हो मेरी जिन्दगी? इससे तो लोग मिलेंगे कम और खुदगर्ज हो जाएंगे ज्यादा। प्रणय बोला था, दूसरों का तो पता नही पर मै हमेशा फोन करूँगा। अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है आपसे।

पहला स्मार्ट फोन विथ एडवांस्ड कैमरा भी प्रणय ने ही दिया था। तब सर बहुत खुश हुए थे। बोले थे, यह मेरे जीवन का बेस्ट गिफ्ट है। मेरे बच्चों के बेस्ट पिक्चर्स इसमे कैप्चर होंगे। तुम्हे भेजूंगा। प्रणय भी औरों की तरह इंतजार कर रहा है, सर के वसीयत के खुलने की!

सर को नजदीक से जानने वाले तक उनकी जिंदगी को कम ही जानते थे। पर जिन लोगों ने उनकी कही बातों को एक साथ पिरोया, वही जानते थे कि वह इंसान नही सीख के अभिदान थे।

समय हो चला था अंतिम कार्यों को समेटने का। पण्डित जी ने पूछा सभी कोई राख लीजियेगा क्या? रोहित ने कहा 'बिल्कुल'। रोहित, प्रणय, पायल, सुब्रत सब आगे आये। अब धीमी पाँवों से आगे आयी पीछे खड़ी अन्नू। अन्नू के आगे आते ही पेड़ पर बैठा तोता उसके कंधे पर आ बैठा। ग्यारह कलशों में बंधे थे सर और उनकी ....उनके आत्माओं के शेष अंश।

अब लोगों के आंसू टपक ही गये। अधिवक्ता सजल रॉय झा सर की वसीयत खोले। लिखा था, मेरे पास कुछ भी नही किसी को देने के लिए। फिर भी वसीयत बना रहा हूँ। मेरा एक 50 हजार का फिक्स्ड डिपाजिट है, वो पत्रकारिता विभाग को पुस्तक खरीदने के लिए दिया जाये। अगर अंतिम महीना का रेंट दिए बिना मैं चला गया तो शर्मा जी को मेरे सेविंग एकाउंट से रुपए दे दिए जाए। घर के वस्तुओं को किसी जरूरतमन्द को दिया जाए।

मेरा कैमरा और स्मार्ट फोन प्रणय को दिया जाय। अब सबसे जरूरी बात, मेरे जाने के बाद मेरे 11 बच्चे छः बिल्लियां, कोची,पोची, लव, कुश, इना, मिना, तथा चार कुत्ते भोलू, मोलू, बिनु, जानू, तथा तोता मीनू को अन्नू से मशवरा करके रखने का बंदोबस्त किया जाये। मुझे पता नही क्यों ऐसा लगता है कि ये लोग मेरे बगैर नही जियेंगे, अगर उनका देहांत मेरे साथ ही हो जाये तो उनका अंतिम क्रिया मेरे साथ ही किया जाये।

अब सब आश्चर्य चकित हो गये। वसीयत तो अब खुली तो अंतिम यात्रा एक साथ कैसे सम्भव हुआ। 'क्योंकि मीनू ऐसा चाहती थी और सुबह बोली थी', अन्नू ने धीमे स्वर में बोला। मीनू जो अन्नू के कंधे पर बैठी थी अब उड़ कर वापस बैठी पेड़ पर और फिर उड़ गई नीले आसमान में।

MJMC - 2010-12

भारतीय पत्रकारिता

अतीत तो उज्जवल लेकिन भविष्य...!

डॉ. प्रणव कुमार 'बब्बू'

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास अत्यंत गौरवशाली और प्रेरणादायक रहा है। यह केवल सूचना के आदान–प्रदान का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक जागरूकता, स्वतंत्रता संग्राम और देश में लोकतंत्र के विकास का भी प्रमुख स्तंभ रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में पत्रकारिता का आधार या फिर यूँ कहें कि पत्रकारिता का उफान, सामाजिक सुधारों, राजनीतिक जागरूकता और औपनिवेशिक शासन के विरोध में जनता की आवाज उठाने के उद्देश्य से हुआ था। समय के साथ इसमें तकनीकी प्रगति, कार्यशैली में बदलाव और विषय–वस्तु की विविधता आयी जिसने इसे और भी प्रभावशाली और व्यापक बना दिया।

भारतीय पत्रकारिता का उज्जवल अतीत रहा है। भारतीय पत्रकारिता का इतिहास 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रारंभ होता है। 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा प्रकाशित 'हिकीज बंगाल गजट' भारत का पहला समाचार पत्र माना जाता है। इसके बाद राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने अपने समाचार पत्रों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठायी। उन्होंने पत्रकारिता को केवल सूचना का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का हथियार बनाया।

19वीं सदी में इंडियन मिरर, अमृत बाजार पत्रिका, द' हिंदू, केसरी और मराठा जैसे पत्रों ने राजनीतिक चेतना फैलाने का काम किया। विशेष रूप से बाल गंगाधर तिलक के केसरी और महात्मा गांधी के यंग इंडिया, हरिजन एवं नवजीवन जैसे पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम को गति दी। गांधीजी ने पत्रकारिता को 'सत्य की खोज' का माध्यम बताया और इसे जन जागरण का एक आवश्यक उपकरण माना।

भारतीय पत्रकारिता का यह स्वर्ण युग आदर्शवाद, साहस और सामाजिक जिम्मेदारी से परिपूर्ण था। पत्रकार सत्ता के खिलाफ सच बोलने से डरते नहीं थे और अपने लेखों से जनता को जागरूक करने का कार्य करते थे. इसे वे अपना धर्म मानते थे।

अब बहुत महत्वपूर्ण है स्वतंत्र भारत में पत्रकारिता के विकास का स्वरूप देखना। स्वतंत्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता ने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी भूमिका निभायी। प्रिंट मीडिया के साथ–साथ रेडियो, टेलीविजन और बाद में डिजिटल मीडिया का विकास हुआ। 1950–1980 के दशक में टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, द हिन्दू, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स जैसे बड़े समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषयों पर संतुलित और गहन रिपोर्टिंग की।

1975 के आपातकाल के दौरान प्रेस पर प्रतिबंधों के बावजूद कई पत्रकारों और मीडिया संस्थानों ने लोकतंत्र की रक्षा के लिये अपने कलम का प्रयोग किया। इस दौर में पत्रकारिता ने फिर से अपने आदर्शवादी स्वरूप को सिद्ध किया। आपातकाल के बाद भारतीय मीडिया और भी मुखर और स्वतंत्र होकर उभरा।

लेकिन हमारा उज्जवल इतिहास एक पक्ष है जबकि वर्तमान दूसरा. वर्तमान समय में पत्रकारिता

का स्वरूप काफी बदल गया है। तकनीक ने पत्रकारिता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। 24X7 वाले न्यूज चैनलस, सोशल मीडिया और ऑनलाइन पोर्टल्स के कारण समाचार तेजी से फैलते हैं। हालांकि, इसके साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी आयी है। टीआरपी और क्लिकबेट संस्कृति के चलते कभी–कभी पत्रकारिता की गुणवत्ता प्रभावित होती है। फेक न्यूज, पेड न्यूज, पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग और संवेदनशील विषयों के गलत प्रस्तुतीकरण से पाठकों, दर्शकों, सोशल मीडिया यूजर्स और कुल मिलाकर जनता का विश्वास डगमगाया है।

विज्ञापनों की निर्भरता के कारण कुछ मीडिया हाउस अपने संपादकीय स्वतंत्रता से समझौता कर रहे हैं। राजनीतिक और कॉर्पोरेट दबावों के कारण निष्पक्ष पत्रकारिता करना कठिन होता जा रहा है। हालांकि आज भी कई पत्रकार और मीडिया संस्थान हैं जो ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

भविष्य में भारतीय पत्रकारिता के समक्ष बहुत सारी संभावनायें हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के बढ़ते प्रभाव से पत्रकारिता का दायरा विस्तृत हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों तक इंटरनेट की पहुँच बढ़ने से अब वहां के मुद्दे भी प्रमुखता से उठाये जा रहे हैं। डेटा जर्नलिज्म, सॉल्यूशन जर्नलिज्म और खोजी पत्रकारिता के नये आयाम खुल रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), बिग डेटा, और ऑटोमेशन जैसे तकनीकी उपकरण पत्रकारों के काम को अधिक प्रभावशाली बना रहे हैं। इसके साथ ही मीडिया लिटरेसी, फैक्ट–चेकिंग और सत्यापन के नए प्लेटफॉर्म फेक न्यूज के खिलाफ एक मजबूत हथियार बनकर उभर रहे हैं।

युवाओं में पत्रकारिता के प्रति रुचि बढ़ रही है और वे नये दृष्टिकोण व नवीन तकनीकों के साथ इस क्षेत्र में आ रहे हैं। इससे पत्रकारिता में नयापन, विविधता और संवेदनशीलता बढ़ रही है। अब के दौर में स्वतंत्र, जिम्मेदार और नवाचारी पत्रकारिता के कारण भारतीय मीडिया दुनिया में अपनी अलग पहचान बना सकता है।

भारतीय पत्रकारिता को भविष्य में अपनी विश्वसनीयता बनाये रखना सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिये कुछ मूलभूत बातों का पालन करना बहुत अधिक आवश्यक होगा। निष्पक्ष और सत्य समाचार प्रस्तुत करने के साथ ही जन सरोकारों के मुद्दों को सर्वोच्च प्राथमिकता देना, सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना, डिजिटल माध्यमों का बेहतर उपयोग करते हुए ग्रामीण और वंचित तबकों तक पहुँचना, युवाओं को सशक्त और जागरूक बनाना जैसे क्षेत्रों को आधार मानकर आगे बढ़ना बहुत अधिक महत्वपूर्ण साबित होगा। अगर मीडिया इन बातों को ध्यान में रखे तो वह न केवल सूचना का साधन रहेगा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का प्रमुख स्तंभ भी बना रहेगा।

कुल मिलाकर भारतीय पत्रकारिता का अतीत प्रेरणादायक रहा है और भविष्य में भी यह समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा, इस बात का पूरा विश्वास है। तकनीकी प्रगति, नयी सोच और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ भारतीय पत्रकारिता का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल और सुनहरा प्रतीत होता है। यदि पत्रकारिता अपने मूल मूल्यों, सत्य, निष्पक्षता और जनहित, पर टिकी रही, तो यह न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी महत्ता सिद्ध करेगी।

BJMC 1990-91

ग्रामीण पत्रकारिता

देसी लोकतंत्र को सशक्त बनाने का उपक्रम

डॉ. भीम प्रभाकर

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और गांव में बसते हैं किसान और मजदूर, जो देश की असली ताकत हैं। ग्रामीण पत्रकारिता इन्हीं गाँव में बसे किसानों के संघर्ष, बेरोजगारी की पीड़ा, विकास की उम्मीदें और संसाधनों की कमी को समाज और सत्ता तक पहुँचाने–दिखाने का जिम्मा निभाती है। लेकिन आज यह पत्रकारिता खुद गहरे संकटों और चुनौतियों के दौर से गुजर रही है।

ग्रामीण पत्रकारिता उन बेबश मजलूमों की आवाज है जिनकी कोई सुनवाई नहीं करता है। ग्रामीण पत्रकारिता गाँव–गाँव की समस्याओं, आंदोलनों और विकास योजनाओं की जमीनी सच्चाई को सामने लाती है। यह लोकतंत्र के उस हिस्से को सशक्त करती है, जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जमीनी हकीकत का मूल्यांकन केवल ग्रामीण पत्रकार ही कर सकते हैं। पंचायत से लेकर खेत–खलिहान तक की सच्चाई वह सामने रखता है। ग्रामीण पत्रकारों को न उचित मानदेय मिलता है, न तकनीकी साधन। कैमरा, इंटरनेट, ट्रांसपोर्ट जैसी बुनियादी सुविधाएँ भी कई बार नसीब नहीं होतीं है।

जबकि बड़े मीडिया हाउस शहरी और राजनीतिक खबरों को प्राथमिकता देते हैं। गाँवों की खबरें अक्सर 'लो–प्रायोरिटी' पर रहती हैं। सत्ता या प्रभावशाली वर्ग के विरुद्ध रिपोर्टिंग करने वाले ग्रामीण पत्रकारों को धमकियाँ मिलना आम बात है। कई मामलों में मारपीट और हत्या तक की घटनाएँ हो चुकी हैं। ग्रामीण पत्रकारों को अपने समाचार सीधे सोशल मीडिया या यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर प्रसारित करने का मौका वर्तमान परिवेश में इंटरनेट सुविधा से सुलभ हुआ है। अब 'ब्लॉक लेवल' या 'पंचायत स्तर' की खबरें भी लोगों की रुचि का केंद्र बन रही हैं। यह ग्रामीण पत्रकारिता के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है।

राज्य और जिला स्तर पर पत्रकारिता का व्यावसायिक प्रशिक्षण देना आवश्यक है, ताकि वे तकनीकी और कानूनी दृष्टि से मजबूत बनें। सरकार और मीडिया संस्थानों को ग्रामीण पत्रकारिता के लिए अलग फंडिंग, प्रशिक्षण और सुरक्षा नीति बनानी चाहिए। बड़े अखबारों और चैनलों को ग्रामीण संवाददाताओं की खबरों को प्रमुखता देनी चाहिए। ऐसा करने से गाँवों की आवाज राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहुंच बनाने में सफल साबित होगा।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां पर 70 प्रतिशत आबादी गावों में निवास करती है। समृद्ध ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकास दर को बेहतर बनाने में मिल का पत्थर साबित होता रही है। ऐसे में ग्रामीणों की समस्या और उससे जुड़े समाचारों के संकलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने में हमारे लोकतंत्र के ग्रामीण प्रहरियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। साथ ही साथ संकट और चुनौतियां भी है जो एक कठिन मोड़ पर खड़ी है। एक ओर चुनौतियों का पहाड़ है, तो दूसरी ओर बदलाव और संभावनाओं की खुलती राह। अगर इस दिशा में सुनियोजित प्रयास हों, तो यही पत्रकारिता भारत के लोकतंत्र की जड़ों को और मजबूत बना सकती है। जरूरत इस बात की है कि आद्यौगिकीकरण और शहरीकरण के साथ–साथ ग्रामीण समाचारों को भी राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने और गांव में रहने वाले लोगों की मुखर आवाज बनाने की दिशा में कार्य करें, ताकि ग्राम स्वराज की अवधारणा सच साबित हो सके।

BJMC - 2004-05

राजकीय महोत्सवों में पारंपरिकता की अनुगूंज

प्रणय प्रबोध पाठक

हमारा प्यारा भारतवर्ष "अनेकता में एकता" की प्रेरणा देता है। विभिन्न राज्यों में अलग–अलग खान–पान, रीति–रिवाज, पुआ–पकवान और पहनावे देश–विदेश के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इनमें से एक राज्य हमारा "झारखंड" प्रदेश है। यह राज्य खुद में अनगिनत संस्कृतियों और परंपराओं को समेटे है। जिनकी झलकियां मुख्य रूप से राजकीय महोत्सवों और मेले में देखने को मिलती है।

झारखंड राज्य के पर्व–त्योहार

झारखंड प्रदेश आदिवासी बहुल राज्य है। जहां विभिन्न तरह के पर्व–त्योहार मनाए जाते हैं। इनमें देशाउली, जनी शिकार, फगुआ, चण्डी पर्व, माघ पर्व, टुसू, सोहराय, सरहूल समेत कई पर्व–त्योहार शामिल हैं। इन सभी त्योहारों में मुख्य रूप से महिलाएं और पुरुष झूमर समेत अन्य पारंपरिक नृत्य करते नजर आते हैं। ढोल–मांदर और पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुन पर हो रहे नृत्य झारखंडी संस्कृति से रूबरू कराते हैं। खासकर लाल पाड़ की साड़ी पहन महिलाएं और सफेद बनियान–धोती संग मुड़ेठा बांधे युवक ताल से ताल मिलाकर नृत्य करते नजर आते हैं। तीज–त्योहारों के मौके पर कोई खान–पान की क्या ही बात करें, क्योंकि झारभूमि तो खान–पान के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रही है। चाहे दाल भरे चावल वाले पीट्ठे की बात हो या फिर मड़ुआ की रोटी के साथ सरसो के साग की। गर्म तेल में तले धुस्के की बात हो या फिर उरद दाल के बर्रे के स्वाद की। बात एनरसे के मिठास की हो, या फिर मिट्टी की हांडी में बने किसी लजीज व्यंजन की। यहां के खान–पान में मानों प्रकृति की सुगंध हो।

महोत्सवों में झारखंडी संस्कृति की छटा

झारखंड राज्य में विभिन्न अवसरों पर केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से महोत्सवों का आयोजन किया जाता है। इनमें मुख्य रूप से श्रावणी महोत्सव, जनजातीय महोत्सव, आदिवासी महोत्सव, राजकीय जनजातीय हिजला मेला महोत्सव, इटखोरी महोत्सव आदि महत्वपूर्ण हैं। इन महोत्सवों में मेले का आयोजन होता है। यहां झारखंडी संस्कृति की झलक सहज देखने को मिल जाती है। खासकर सोहराय और कोहबर कला से बनी कलाकृतियां। इन कलाकृतियों का परिधानों में उपयोग, घर की साज–सज्जा करने वाले सामानों पर इन कलाकृतियों का प्रयोग। डोकरा आर्ट, वर्ली आर्ट, बांस की कारीगरी, सवई घास की कलाकृतियां समेत कई ऐसी कलाएं हैं, जिनका समावेश इन महोत्सवों में दिखता है। खासकर बात संगीत के साथ देने वाले वाद्य यंत्रों की हो, तो ढोल, नगाड़ा, मांदर, तुरही, सिंहा जैसे पौराणिक वाद्य यंत्र आसानी से देखने को मिल जाएंगे। कला की बात हो,

तो विलुप्त होती आदिवासी कठपुतली नृत्य "चादर–बदोनी" सहज देखने को मिल जाएगी, जिसकी प्रस्तुति विशेष रूप से दुमका के लोक कलाकार करते हैं। इसके अलावा संताल–परगना क्षेत्र में संताली लोक नृत्य, कोल्हान में छऊ लोक नृत्य, उत्तरी छोटानागपुर में खोरठा लोक नृत्य, दक्षिणी छोटानागपुर में हो, मुंडारी, पंचपरगनियां समेत अन्य लोक नृत्य सहज देखने को मिल जाएंगे।

पारंपरिक हथियारों की प्रदर्शनी

झारखंड की धरती से जुड़े लोगों का पौराणिक इतिहास रहा है। वन प्रदेश में निवास करने वाले लोगों का जीवन पूर्व में पूरी तरह से जल, जंगल और जमीन पर निर्भर रहा है। वन में निवास करने वाले लोगों का जीवन कठिनाईयों और चुनौतियों से भरपूर माना जाता है। इसके कारण हथियारों का निर्माण और जानवरों से खुद का बचाव जरूरी था। हालांकि आधुनिक झारखंड में इन हथियारों का प्रयोग कम हो गया है। लेकिन हथियारों की प्रदर्शनियां विभिन्न महोत्सवों और मेलों में लगायी जाती हैं। ताकि सभ्यता और संस्कृति को संरक्षित किया जा सके। झारखंड के पारंपरिक हथियारों की बात करें, तो मुख्य रूप से तीर–धनुष, बरछी, गंड़ासा, भाला, भुजाली, कुल्हाड़ी और फरसा आदि हैं।

कला, संस्कृति और समाज से सरकार का सरोकार

किसी भी राज्य की पहचान उसकी अलग कला, संस्कृति और समाज में निवास करने वाले लोगों से होती है। समाज में निवास करने वाले लोग ही जब अपनी कला, संस्कृति और सभ्यता को छोड़ जाएं, तो वह राज्य अपनी पहचान खो देगा। लेकिन झारखंड राज्य की कला और संस्कृति को केन्द्र एवं राज्य सरकार ने गति देने का काम किया है। लुप्त होती कलाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं को सरकारों ने उभारने का प्रयास किया है। समय–समय पर आयोजित त्योहारों और महोत्सवों में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर कला के साथ कलाकारों, संस्कृति के साथ संस्कारों और सभ्यताओं के साथ समाज को एकसूत्र में पिरोने का प्रयास किया है। बल्कि केन्द्र और राज्य सरकार ने इसके लिए विशेष मंत्रालय और विभाग की स्थापना भी की है। साथ ही सरकारें विभिन्न जनमाध्यमों के जरिए इनका प्रचार–प्रसार नियमित रूप से कर रही हैं।

परंपराओं को बचाएं, समाज को बढ़ाएं

सरकार के साथ–साथ सभी को परंपराओं को संरक्षित करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। क्योंकि हमारी कला, संस्कृति और सभ्यता अमूल्य धरोहर है। इसी से हमारे राज्य का मान, सम्मान और हम सभी राज्यवासियों का अभिमान जुड़ा है।

MJMC - 2016-18

कविता

प्रणय प्रबोध पाठक

जीवन चक्र

जीवनभर नित नव विहान है,
हर रोज नवीन संग्राम है।
कुछ खोना, कुछ पाना,
जीवन चक्र का परिणाम है।।

उगते सूर्य संग उग जाना,
ढलते सांझ संग सब समेट आना।
दो टुकड़े रोटी की तलाश में,
भरी दोपहरी में खुद को झोंक आना।।

चारदीवारी में खुद को कैद कर,
हर रोज नए सपने संजोना।
नित नए लोगों से मिलकर,
अपने–पराए का भेद करना।।

चलती पहिया की भांति,
तीन पहर बस चलते जाना।
थकान हो शरीर में जब,
एक पहर इसे दे जाना।।

जीवन के इस कौतूहल में,
शांति की तलाश जारी है।
खट्टे–मीठे और कड़वे अनुभव को,
बांटना–संजोना बाकी है ।।

यह जीवन मूल्यवान है,
ऐ इंसान, तू बड़ा महान है।।
सब जानकर भी अनजान है,
तू ही भूत, भविष्य और वर्तमान है।।

(MJMC 2016–18)

सुमिता सिन्हा

भूलने लगी हूँ

सही–सही तो
नही बता सकती
पर...
पेड़ अपनी एक पत्ती के गिरने के बाद,
जितना उसे भूलता है,
आकाश को अपने
टूटते एक तारे कि
जितनी याद आती है,
उतना ही मैं भी तुम्हें भूलने लगी हूँ...

फूल का पराग
भंवरे अपनी देह पर
लपेटे चले जाते,
और प्यासा अंजुरी भर
खाली करता नदी से।
फूल जितने पराग,
और जितना पानी नदी भूलती है,
ठीक उतना ही
मैं भी भूलने लगी हूँ तुम्हे

बारिश को
जितना याद रहा
किसी के मन को भीगा जाना,
और धरती को जितना याद रहा
बीजों का पेड़ बनना,
ठीक उतना ही मुझे याद रहा
तुम्हें भूल जाना

और,
कितना भूलना है याद नहीं,
पर मैं तुम्हें थोड़ा–थोड़ा
भूलने लगी हूँ...

(BJMC 1996-97)

रांची विश्वविद्यालय में पत्रकारिता पाठ्यक्रम की स्थापना – संस्मरण एवं सुझाव

चन्द्र किशोर

समाज के सुचारु संचालन के लिए जनता तक सूचना पहुँचाने, उसे कौशल और ज्ञान से लैस करने, सत्ता को जवाबदेह बनाने और सूचनाओं पर सक्षम अधिकारीयों/मंत्रालयों द्वारा निर्णय लेने को बढ़ावा देने के लिए सभ्य समाज में पत्रकारिता जगत ने खुद को परिवर्तन के एक सशक्त माधयम के रूप में स्थापित किया है जिसे राष्ट्र की विचारधारा को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका के लिए लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में मान्यता मिली है। एक पत्रकार अब केवल समाचार रिपोर्टिंग तक हीं सीमित नहीं है बल्कि डिजिटल युग में जटिल सूचनाओं के संग्रहण, विश्लेषण, विवेचना और सही समय पर उनका उपयोग करके देशहित में नैतिक निर्णय लेने के लिए सरकार को बाध्य करने की प्रभावी क्षमता से लैस है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण निर्णायक भूमिका निभाने से लेकर आज तक पत्रकारिता जगत भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में निरंतर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समाज को सही दिशा देने का एक प्रभावी और सशक्त माध्यम होने के कारण पत्रकारिता आज के युग में छात्रों का एक पसंदीदा विषय है।

पत्रकारिता के बढ़ते महत्व को देखते हुए रांची विश्वविद्यालय में वर्ष 1987 में स्नातकोत्तर विभाग में पत्रकारिता के पाठ्यक्रम की स्थापना की गई थी। इसके प्रथम निदेशक स्व० डॉ० बी० एन० त्रिपाठी थे जिनके कुशल नेतृत्व में छात्रों के फीस से संगृहीत अल्प धनराशि में शहर के मूर्धन्य पत्रकारों, रेडियो और दूरदर्शन के अधिकारियों, अधिवक्ताओं और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को फैकल्टी मेंबर के रूप में आमंत्रित करके उनकी योग्यता और अनुभव के माध्यम से से छात्रों को पत्रकारिता की शिक्षा प्रदान की जाती थी। 'रांची एक्सप्रेस' के संस्थापक संपादक और मूर्धन्य वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री श्री बलबीर दत्त जी का रांची विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग की स्थापना में महत्ती योगदान रहा है। रांची एक्सप्रेस में कनिष्ठ संपादक सह पत्रकार के रूप में मेरे कैरियर की शुरुआत उन्ही के निर्देशन में हुई थी। उनके अधीन काम करने का अनुभव मेरे जीवन के कुछ सुनहरे यादगार पलों में से एक है। पत्रकारिता विभाग को उन्होने अपनी योग्यता से बड़े जतन से सींचा है। हमारे प्रथम बैच के प्राध्यापकों में श्री बलबीर दत्त (संपादक, रांची एक्सप्रेस), श्री आर० एन० झा (टाइम्स ऑफ इंडिया), श्री चक्रवर्ती गणपति नावड़ (संपादक, आज), श्री बी० चटर्जी, श्री आर० के० सिंह, श्री राजेश श्रीवास्तव, श्री सुनील सिंह (संपादक, प्रभात खबर) श्री रामेश्वर तिवारी (पी० टी० आई०), अधिवक्ता श्री बी० एन राय (प्रेस लॉ), श्री एल० बी० पांडे, श्री चंद्रभूषण प्रसाद सिंह (रेडियो स्टेशन), श्री हेमंत सल्फेकर (दूरदर्शन) आदि प्रमुख थे। तब निदेशक महोदय की मदद के लिए दो कर्मचारी श्री पुर्णेन्दु शेखर तिवारी और श्री एन० के० ओझा, नियुक्त किए गए थे। पठन पाठन के कार्यक्रम और फैकल्टी मेंम्बर्स का चयन और अनुरोध कर उन्हें सम्मान पूर्वक छात्रों को पढ़ाने के लिए बुलाने और सभी लेखा जोखा, एडमिशन, पाठ्यक्रम की अवधि और लेक्चर्स की संख्या तय करने, छात्रों का रिकॉर्ड रखने, योजना बनाने और विश्वविद्यालय प्रशासन से तालमेल की जिम्मेदारी मुख्य रूप से श्री पुर्णेन्दु शेखर तिवारी जी के कंधों पर थी। एक स्टाफ तो साल भर में हीं छोड़ कर चले गए और इन

38 वर्षो में कई निदेशक बदले, परन्तु तिवारी जी ने संस्थान के आजतक सफलतापूर्वक संचालन की महत्ती जिम्मेदारी अपने मजबूत कंधों पर उठाये रखी। वित्तरहित संस्थान को सफलतापूर्वक इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए श्री पुर्णेन्दु शेखर तिवारी जी बधाई के पात्र हैं। इन फैकल्टी मेंबर्स के अलावा छात्रों के ज्ञान और मनोबल की वृद्धि के उद्देश्य से समय समय पर रांची के अन्य प्रबुद्ध लोगों को विविध विषयों पर व्याख्यान देने के लिए बुलाया जाता था। देश के वरिष्ठ स्तम्भ लेखक और संपादक श्री शंकर दयाल सिंह को भी हमारे सत्र में व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया था, जो छात्रों के लिए मनोबल को बढ़ाने वाला था। सूचना के प्रसार और सामाजिक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों की जानकारी के साथ साथ अखबार छापने में प्रयोग किये जाने वाले तकनीकी मशीनों के विकास की जानकारी के लिए हमें विभिन्न समाचार पत्र प्रकाशकों के प्रकाशन संस्थानों के भ्रमण पर ले जाया जाता था, जिनमे सीसीएल में प्रयोग किया जाने वाला ऑफसेट प्रिंटिंग मशीन के परिचालन की प्रक्रिया का अध्ययन भी शामिल था। आज भी पत्रकारिता के छात्रों के लिए इसकी प्रासंगिकता इसलिए है कि छपाई की तकनीक में लगातार सुधार यह सुनिश्चित करता है कि समाचार और नवीनतम जानकारी दुनिया भर के लोगों तक वे समय पर पहुंचा सकें। इसके अलावे निदेशक महोदय के प्रयास से हमारे सत्र के छात्रों को कुजू कोलियरी के शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया गया जहाँ हमें पत्रकारों के रूप में कोलियरी की समस्याओं को समझने और उसके लिए रिपोर्टिंग करने की ट्रेनिंग दी गई। वहां सभी छात्रों का पत्रकारों के रूप में अभूतपूर्व स्वागत हुआ जिससे सभी छात्रों का मनोबल काफी ऊंचा हुआ और यह हमारे शैक्षणिक भ्रमण का एक यादगार और महत्वपूर्ण अवसर बना।

हमारे 1987 के प्रथम बैच में कुल 51 सहपाठी थे जिसमे से कइयों ने पत्रकारिता, जनसम्पर्क, रेडियो स्टेशन, दूरदर्शन आदि में अपनी पहचान बनाई और कुछ ने अलग अलग क्षेत्रों में अपने रोजगार किये। लेकिन पत्रकारिता की पढाई ने सभी को नीतिगत मूल्यों, समाज के लिए सूचना के अधिकार की महत्ता और समाज में मूल्य आधारित परिवर्तन के लिए सजग रहने की चेतना दी है।

हमारे समय में मोबाइल फोन नहीं होता था इसलिए कई सहपाठियों से दोबारा संपर्क नहीं हो पाया परन्तु पत्रकारिता विभाग के कुछ प्रगतिशील सजग छात्रों के प्रयास से निर्मित और संचालित JOSARU ग्रुप की सहायता से आशा बंधी है कि प्रथम बैच के कुछ पूर्ववर्ती छात्र, जिनमें से सभी 60 साल की आयु पूर्ण करके सीनियर सिटीजन की भूमिका में आ चुके हैं, से पुनः संपर्क स्थापित हो पायेगा। कोरोना काल में पत्रकारिता जगत में अपनी सेवा देते रहने के दौरान हमारे दो परम प्रिय सहपाठी सतीश कुमार वर्मा (फोटो जर्नलिस्ट) और मणिकांत ठाकुर (दूरदर्शन) परम पिता परमेश्वर के पास चले गए जिन्हे विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शुभेक्षा है कि भावी पीढ़ी के पत्रकार देश के सजग प्रहरी कि तरह तैयार हों ताकि वे समय पर महत्वपूर्ण सूचनाएं जनता तक पहुँचाने की भूमिका निभा सकें, जिससे नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा हो सके और समाज में जनजीवन को प्रभावित करने वाली राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाएं, राजनितिक परिदृश्य, स्थानिक घटनाएं, वैज्ञानिक उपलब्धियां, इंजिनीरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में नवीन आविष्कार, सांस्कृतिक गतिविधयां, खेल जगत के समाचार आदि से नागरिकों को अवगत और सजग करने में अपनी भूमिका निभाएं। वस्तुनिष्ठ समसामयिक प्रस्तुति, विश्लेषण और प्राइम टाइम

कवरेज के माध्यम से, पत्रकार जनता को निर्णय लेने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाता हैं।

संविधान में निहित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांतों को कायम रखने, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की वकालत करने, सामाजिक असमानताओं और अन्याय को उजागर करने, हाशिए पर पड़े कमजोर तबके के समुदायों की दुर्दशा को उजागर करने, गरीबी, लैंगिक असमानता, जाति–आधारित भेदभाव और पर्यावरणीय चिंताओं जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालने, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, क्षेत्रीय उपलब्धियों और मानव हित की कहानियों की रिपोर्टिंग करने, समाज में सकारात्मक बदलाव और समावेशी विकास लाने, और इस प्रकार देश का मजबूत भविष्य का निर्माण करने के लिए सरकार के द्वारा पत्रकारों को संविधान की रक्षा करने वाली सेना का दर्जा दिया जाना चाहिए। अग्निवीरों की तरह यह आवश्यक है कि देश निर्माण और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए सरकार और विश्वविद्लाय प्रसाशन पत्रकारिता के समग्र एनसीआरटी टेक्निकल पाठ्यक्रम की शुरुआत करें और पत्रकारिता पाठ्यक्रम को समृद्ध कर इसे सामान्य तकनिकी शिक्षा में सर्वोपरि दर्जा दिया जाए।

रांची विश्वविद्यालय, झारखंड राज्य का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है और पत्रकारिता पाठ्यक्रम की स्थापना से रांची विश्वविद्यालय में मीडिया और संचार के क्षेत्र में शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा मिला है। लेकिन पत्रकारिता के क्षेत्र में सफल होने के लिए, छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान की ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव की भी आवश्यकता होती है जिसके लिए विश्वविद्यालय को पत्रकारिता विभाग को समुचित फण्ड देना चाहिए और विविध प्रकाशन संस्थानों, जनसम्पर्क के विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी विभागों में नियमित इंटर्नशिप की व्यवस्था करनी चाहिए। अपनी स्थापना के 38 वर्षों के बाद भी अभी तक विभाग को विश्विद्यालय से फण्ड का न मिलना और प्राध्यापकों और कर्मचारियों की नियमित नियुक्ति नहीं होना सोचनीय विषय है। समय की आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय प्रशासन इस ओर ध्यान दे और छात्रों के कैंपस सलेक्शन के लिए प्रयास प्रारम्भ करे जिससे झारखण्ड के प्रतिभावान छात्रों का भविष्य उज्जवल हो।

BJMC - 1987-88

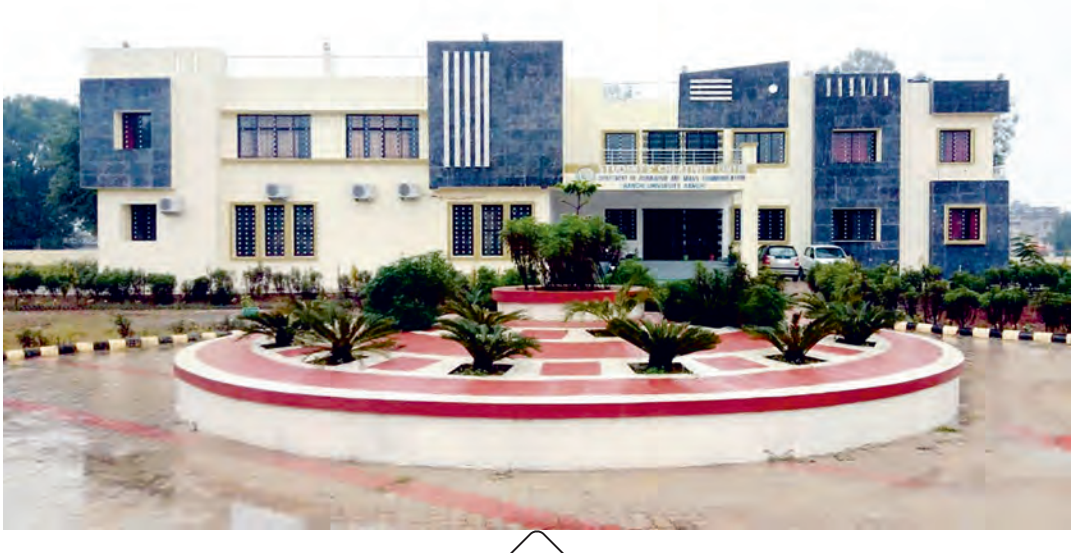

झारखंड में फिल्म निर्माण की अपार संभावनाएं

परवेज कुरैशी

झारखंड में फिल्म निर्माण की संभावनाएं तो बहुत है लेकिन चुनौतियां भी देखने को मिल रही है। इन चुनौतियों को झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार खत्म कर सकती है। सरकार इस पर यदि ध्यान दे तो झारखंड फिल्म उद्योग में तब्दील हो जायेगा और रोजगार के अवसर भी खुलेंगे, सरकार को राजस्व भी मिलेगा। बताते चले कि दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन 01 और 02 मार्च 2025 को किया गया था, लेकिन रांची जिला प्रशासन ने 02 मार्च को कार्यक्रम को रद्द करवा दिया। बल्कि जिला प्रशासन ने जिफ्फा के अध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष पर लालपुर थाने में एफआईआर दर्ज करवा दिया। कारण बताया गया था कि जिफ्फा के पदाधिकारियों ने जिला प्रशासन से अनुमति नहीं ली थी, सिर्फ आवेदन देकर छोड़ दिया था। क्योंकि जहां पर कार्यक्रम होना था, मोरहाबादी मैदान में, वहां पर कार्यक्रम शुल्क भी जमा करना होता है। जो जिफ्फा के सदस्यों ने नहीं किया था, खैर इस पर फिलहाल विराम लगाते हैं और आगे चर्चा करते हैं।

हसीन वादियों में शूटिंग :

झारखंड में ऊंचे–ऊंचे पहाड़, कल–कल करती टेढ़ी मेढ़ी नदियाँ, झरझर करते झरने, डैम, घने जंगल है, जहां पर फिल्म की शूटिंग आज से नहीं एकीकृत बिहार के जमाने से ही होती आ रही है। लेकिन जो पहचान झारखंड को मिलनी चाहिए थीं, उसके लिए आज भी झॉलीवुड के कलाकार संघर्ष करते नजर आ रहें हैं।

फिल्म नीति बोर्ड :

झारखंड गठन के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास ने एक अच्छी पॉलिसी लाई थी, फिल्म नीति बोर्ड का गठन करके। झारखंड के स्थानीय कलाकार, फिल्म मेकर, तकनीशियन, गीतकार, गायक, कोरियोग्राफर सभी इससे जुड़े होते हैं। होटल, रेस्टोरेंट, वाहन आदि भी इस यूनिट से जुड़ते हैं। इस बोर्ड के अनुसार झारखंड राज्य में स्थानीय फिल्मों का निर्माण होगा उसे सरकार 50% अनुदान देगी। यदि दूसरे राज्यों की फिल्म यहां 50 प्रतिशत से अधिक शूटिंग करेगी तभी, उसे 25% का अनुदान राज्य सरकार देगी।

फिल्मों को मिला अनुदान :

दुख की बात है कि बाहर से जितनी भी फिल्में आई उसे ही अनुदान दिया गया, क्योंकि फिल्म बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष हिंदी सिनेमा के मशहूर अभिनेता अनुपम खेर को बनाया गया था, तो इसलिए

यहां पर जो फिल्मों को अनुदान दिए गए थे, उसमें मुख्य रूप से हिंदी फिल्मों पर ही ज्यादा ध्यान दिया गया है। जिसमें हिंदी फिल्म बेगम जान, रांची डायरीज, अजब सिंह की गजब कहानी, डेथ इन गंज, पंच लेट, और पंजाबी की फिल्में डाकुआं दा मुंडा, रोबिन हुड और भोजपुरी की फिल्म काशी विश्वनाथ, नाचे नागिन गली गली को अनुदान की राशि देने की बात बतायी जाती है, लेकिन झारखंड की अगर फिल्मों की बात करें तो सिर्फ संथाली भाषा के एक फिल्म थी रोफा उस फिल्म को कुछ प्रतिशत का अनुदान दिया गया। जबकि झारखंड में कई स्थानीय भाषाओं में फिल्में एवं एल्बम बन रही है। खास का नागपुरी, खोरठा, संथाली, मुंडारी, हो, पंचपरगनिया आदि भाषाओं की फिल्में बनी है या बनाई जा रही है लेकिन 2015 फिल्म नीति बोर्ड के गठन के द्वारा 2024 तक जितने भी फिल्में बनी है, इसमें कितने को अनुदान दिया गया है यह जांच का विषय है। फिल्म से जुड़े कलाकार, निर्देशक बताते हैं कि एक भी फिल्म को अनुदान नहीं मिला है। दूसरे राज्यों की फिल्म को अनुदान मिले हैं, इसकी जांच सरकार को करानी चाहिए। हालांकि डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर मेघनाथ, श्री प्रकाश, बिजू टोप्पो, दीपक बारा आदि ने झारखंड के कई ज्वलंत मुद्दे पर डोकोमेंट्री फिल्में बनाई है, और उन फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्व मिला है और अवार्ड भी दिया गया है। कहने का तत्पार्य यह है कि वर्तमान में फिल्म नीति बोर्ड की कमेटी यह सोचने पर मजबूर करती है बोर्ड कि सक्रियता पहले जैसी नहीं है। फिल्म नीति बोर्ड के अध्यक्ष अनुपम खेर का कार्यकाल कबका खत्म हो चुका है, अब हिंदी सिनेमा और एकिकृत बिहार की भूमि में जन्मे धरती पुत्र शत्रुघ्न सिन्हा को झारखंड फिल्म नीति बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है, जिससे झारखंड के कलाकारों को काम और शुटिंग होने से स्थानीय लोगों को रोजगार और राज्य सरकार को राजस्व की प्राप्ति होगी।

अलग झारखंड की फिल्म :

झारखंड गठन होने से पहले भी यहां पर एकिकृत बिहार के समय से ही कई फिल्मों की शूटिंग हुई है। झारखंड गठन होने के बाद 2001, 2002 में संथाली, नागपुरी आदि भाषाओं का एल्बम का बाजार हुआ और फिर धीरे–धीरे फिल्मों का भी निर्माण शुरू हो गया। बताते चले कि, 15 नवंबर, 2000 के बाद जो फिल्मी आई मुख्य रूप से गुईया नंबर वन, उलगुलान एक क्रांति, हमर झारखंड, टूवर, आवारा तोरे प्यार, सुन सजना, नागपुर कर भूत ,मेहंदी रचाई ले लो रे, कर्मा, प्यार तो है गेलक, संथाली फिल्म चांदो लोखन,शगुन पेड़ा, इंजो आतु दिशुम से लेकर खोटा सिक्का, नायक रिवेंज ऑफ लव 2025 सहित लगभग एक सौ से अधिक फिल्मे हैं, जो विशुद्ध रूप से झारखण्डी सिनेमा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

एकीकृत बिहार के समय :

झारखंड एकीकृत बिहार के समय भोजपुरी फिल्म गंगा मैया तोहरे पीहरी चढ़ाइबो 1963 को याद किया जाता है। तो वहीं 1976 में, जो उस वक्त की प्रदर्शित फिल्म थी, नाच उठे संसार, एकीकृत बिहार में झारखंड के परिवेश में फिल्म को बनाई गई थी। जिसमें शशि कपूर और हेमा मालिनी द्वारा अभिनीत इस फिल्म को काफी सराहना भी मिली थी। ऋत्विक घटक जो हिंदी फिल्मों के एक महान फिल्म मेकर थे, उन्होंने 1952 के आसपास दो डॉक्यूमेंट्री फिल्म झारखंड में सूट की थी (एक स्रोत) एवं दूसरा था (उरांव) नामक फिल्म और वहीं इसके बाद मशहूर फिल्म मेकर सत्यजीत राय ने पलामू की धरती में आरण्य दिन रात्रि 1969 के आसपास बनाए थे। अस्सी की दशक में मृणाल सेन द्वारा निर्देशित मिथुन चक्रवर्ती द्वारा अभिनीत मृग्या है। इस फिल्म में झारखंड की छऊ नृत्य को पहली बार दिखाया गया। इसके बाद हिप हिप हुर्रे प्रकाश झा ने रांची के आसपास में शूटिंग किए। विनोद कुमार के निर्देशित में आक्रांत फिल्म का निर्माण हुआ, जो झारखंड के नेतरहाट और इसके आसपास के कई जगहों में शूटिंग की गई थी। 90 का दशक में धनंजय नाथ तिवारी ने सोना कर नागपुर फिल्म का निर्माण किया था। एकीकृत बिहार में, जो झारखंड में फिल्म अंतिम बार बनी, उसमें एक तो है रवि चौधरी की नागपुरी फिल्म प्रीत और दूसरी युगल किशोर मिश्रा, प्रवीण गांगुली द्वारा निर्देशित फिल्म सजना अनाड़ी।

सरकार करे पहल :

सरकार को चाहिए झारखंड फिल्म नीति बोर्ड को पारदर्शी बनाये, यहाँ की कला, संस्कृति, सभ्यता, नदी, जल, जंगल को बचाए रखने के लिए फिल्म की शूटिंग यहां पर शुरू कराए, सुरक्षा उपलब्ध कराये, ताकि निर्माता, निर्देशक, कलाकारों का आवागमन शुरू हो सके। स्थानीय कलाकारों को महत्व मिले। स्थानीय कलाकार को सरकार अपने अधीन आर्टिस्ट एसोसिएशन कार्ड निर्गत करें। फिल्म सीटी स्थापित किया जाए इससे यह होगा कि, न सिर्फ स्थानीय कलाकारों को रोजगार मिलेगा, बल्कि यहां के होटल ,रेस्टोरेंट, पर्यटन स्थलों को भी देश दुनिया में जाना जाएगा। सरकार को आमदनी प्राप्त होगी, राजस्वम इजाफा होगा और दूरदराज से लोग झारखंड आकर फिल्मों की शूटिंग करेंगे। हलांकि मेरे खबर लिखे जाने के बाद झारखंड के कलाकारों ने खेलकूद एवं कला संस्कृति मंत्री सुदिव्य सोनू से मुलाकात किये और अपनी झारखंड के कलाकारों की समस्याओं से अवगत कराया है।

BJMC - 2007-08

एकल उपयोग प्लास्टिक के नुकसान और संभावित समाधान

अविनाश कुमार

एकल उपयोग प्लास्टिक/single use plastic/प्लास्टिक की पन्नी/polythene carry bag हमारे दैनिक जरूरतों में कुछ ऐसा शामिल हो चुका है कि इसके बगैर चल पाना संभव ही नहीं लगता है। सुबह–सुबह पैकेट वाला दूध लेना हो, फल सब्जी लेना हो, पूजा के लिए फूल लेना हो तो एकल उपयोग प्लास्टिक का पैकेट सुगमता से उपलब्ध है। अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कई सारे लोग जो प्रातः भ्रमण पर निकलते हैं, नारियल पानी पीना पसंद करते हैं, और पीते कैसे हैं, प्लास्टिक के पाइप से! दूध का पैकेट भी तो प्लास्टिक का ही है। पैकेट से दूध निकालने के बाद पैकेट का तो कोई इस्तेमाल नहीं होता, वो कचरे में ही जाता है। ब्रेड का पैकेट भी प्लास्टिक का ही होता है, ब्रेड खा लेने के बाद उसके प्लास्टिक के पैकेट को भी तो हम कचरे में ही डालते हैं। घरों, होटलों में पार्टी हो, घर के बाहर पिकनिक हो, दफ्तरों में मीटिंग हो तो खाने के प्लेट, कटोरे, गिलास, चम्मच सामान्यतः प्लास्टिक के ही इस्तेमाल होते हैं। तो इसमें अस्वाभाविक क्या है, इस पर इतनी बात करने की क्या जरुरत है ?

बरसात के मौसम में शहरों में जल जमाव से होने वाली परेशानी हर साल बढ़ती ही जा रही है। वैसे तो यह शहर में रहने वाले सभी लोगों को परेशान करती है लेकिन बुर्जुगों, महिलाओं और बच्चों के लिए यह परिस्थिति ज्यादा कष्टप्रद है। इस परिस्थिति के लिए एकल उपयोग प्लास्टिक जिम्मेदार है। जिस धड़ल्ले से हम एकल उपयोग प्लास्टिक के पैकेट को इस्तेमाल के बाद फेंक देते हैं वही नालियों के जाम होने और जल जमाव का बड़ा कारण है।

शहर में कई जानवर जो अपने खाने के लिए खुले में फेके हुए कचरों पर आश्रित होते हैं, एकल–उपयोग प्लास्टिक निगलने से उनकी मौत हो जाती है। गाय, कुत्ते और दूसरे जीव–जंतु अक्सर

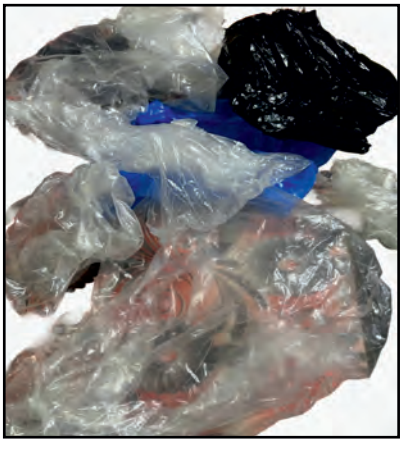

प्लास्टिक को भोजन समझ कर खा लेते हैं। इससे उनके आंतों में रुकावट, चोट लग सकती है और अंततः उनकी मौत हो सकती है।

स्थापित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका नेचर में प्रकाशित एक लेख के अनुसार विश्व के कुल प्लास्टिक कचरे के उत्पादन में भारत का हिस्सा 20% है। भारत द्वारा उत्पादित कुल प्लास्टिक कचरे में एकल उपयोग प्लास्टिक का प्रतिशत 43% है। वो भी तब, जब एकल उपयोग प्लास्टिक का इस्तेमाल वर्ष 2022 से सरकार द्वारा लागू कानून के तहत प्रतिबंधित है। तो क्या समाधान हो सकता है, एकल उपयोग प्लास्टिक से होने वाले नुकसान को रोकने का ?

समाधान हमारे नियंत्रण में ही है। यदि हम एकल उपयोग प्लास्टिक से हाने वाले नुकसान के बारे में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता फैलाएं, लोगों को प्रोत्साहित करें कि वो एकल उपयोग प्लास्टिक का इस्तेमाल स्वतः कम करें तो इससे होने वाले नुकसान को कम करना संभव है।

अगली बार जब कोई दुकानदार आपको प्लास्टिक के पैकेट में कोई सामान दे तो आप मना कर दें , यही नहीं उसे भी समझाएं कि एकल उपयोग प्लास्टिक के इस्तेमाल का क्या नुकसान है। एक और बात, कई एकल उपयोग प्लास्टिक का इस्तेमाल रोकना बहुत संभव नहीं है जैसे कि दूध का पैकेट, ब्रेड का पैकेट या अन्य प्लास्टिक पैक खाद्य सामग्री; ऐसी स्थिति में यह बहुत जरूरी है कि इस तरह के प्लास्टिक कचरे को अलग से इकट्ठा किया जाए जिससे कि इसके निष्पादन में आसानी हो। इस मुहीम में बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावशाली हो सकते हैं। बच्चों को अगर एकल उपयोग प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूक किया गया तो न सिर्फ वो स्वयं इसका इस्तेमाल करना बंद करेंगे, बल्कि अपने अभिभावकों और पड़ोसियों को भी ऐसा करने से रोकेंगे। इस तरह एक ऐसी पीढ़ी जागरूक हो जाएगी जो भविष्य में एकल उपयोग प्लास्टिक के इस्तेमाल की सम्भावना को बहुत हद तक कम कर देगी।

कविता

रात की कालिमा कभी नहीं मिलती है सुबह की लालिमा से,
फिर भी एक अजब सा रिश्ता है दोनों का,
एक का जाना उतना ही नियत है जितना दूसरे का आना,
एक कराता है आकुल उसके जाने के इंतजार में
और दूसरा कराता है दीदार उम्मीदों से,

एक के आगोश में सूझ नहीं पड़ता और दूसरा खड़ा होता है
बाहें फैलाये अपनेपन का एहसास लिए,
क्षितिज में दूर कहीं मद्धम सी रौशनी दिख रही है,
किसी के जाने का समय हो चला है तो किसी के आने का,
जा रही है फिर से कालिमा नींद पूरी कर,
सुस्वागतम लालिमा नव प्रण के साथ।

अविनाश कुमार
BJMC 1996-97

भ्रष्टाचार का विरोध, हर नागरिक का कर्त्तव्य

भाई गोकुल चन्द

भ्रष्टाचार आज भारत की एक गंभीर समस्या है, जो न केवल शासन व्यवस्था को प्रभावित करता है, बल्कि आम नागरिक के जीवन को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। यह समस्या सरकारी तंत्र, निजी क्षेत्र, शिक्षा, स्वास्थ्य और यहां तक कि न्यायिक प्रणाली तक फैली हुई है। हालांकि सरकार और समाज की ओर से कई प्रयास किए गए हैं, फिर भी यह समस्या समाप्त होने के बजाये दिन प्रति दिन बढ़ रही है। इस लेख में हम चर्चा करेंगे कि भारत में भ्रष्टाचार पर किस प्रकार प्रभावी रूप से अंकुश लगाया जा सकता है।

1. **सख्त और पारदर्शी कानून व्यवस्था** : भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए कडे कानूनों की आवश्यकता है। लोकपाल और लोकायुक्त जैसे संस्थानों को अधिक अधिकार और स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। साथ ही, भ्रष्टाचार के मामलों में समयबद्ध जांच और सुनवाई सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि दोषियों को जल्द सजा मिले।

2. **डिजिटल तकनीक का उपयोग** : ई–गवनेंस (ई–शासन) प्रणाली से भ्रष्टाचार में कमी लाना संभव है। जब सेवाएं जैसे कि राशन कार्ड, करो का भुगतान, वाहन निबंधन, बिजली कनेक्शन, संपति निबंधन, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, बिजली बिल आदि ऑनलाइन उपलब्ध होंगी, तो बिचौलियों की भूमिका कम होगी और रिश्वत व भ्रष्टाचार की संभावना घटेगी।

3. **जागरूकता और नैतिक शिक्षा** : लोगों को यह समझाना जरूरी है वक भ्रष्टाचार केवल पैसे का लेन–देन नहीं, बल्कि नैतिक पतन भी है। विद्यालयों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहिए ताकि बचपन से ही ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की भावना विकसित हो।

4. **सुरक्षित व्हिसलब्लोअर तंत्र** : जो लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं, उन्हें कानूनी सुरक्षा मिलनी चाहिए। 'व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट' को मजबूती से लागू किया जाना चाहिए ताकि लोग बिना डर के भ्रष्टाचार की जानकारी साझा कर शिकायत कर सकें।

5. **स्वतंत्र और जिम्मेदार मीडिया** : मीडिया को सरकार से स्वतंत्र और निष्पक्ष रहकर भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करना चाहिए। डिजिटल और सोशल मीडिया के जरिए आम जनता भी भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठा सकती है। इसके लिए उसे सुरक्षा ही गारंटी दी जानी चाहिए।

6. **राजनीतिक सुधार** : राजनीति में भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी हैं। चुनाव में पारदर्शिता, राजनीतिक दलों की फंडिंग का सार्वजनिक विवरण और आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों पर प्रतिबंध जैसे उपाय आवश्यक हैं।

7. **सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध कमिटी का गठन** : सभी सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध शिकायतों के लिये एक समिति गठित की जानी चाहिए जो अपने कार्यालय के भ्रष्टाचार सम्बन्धी शिकायतों पर संज्ञान लेकर कार्रवाही करे।

निष्कर्ष :

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना एक लंबी और सतत् प्रक्रिया है। इसके लिए केवल सरकार की नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की भागीदारी आवश्यक है। जब हर नागरिक अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेगा और भ्रष्टाचार को स्वीकार नहीं करेगा, तभी भारत एक सशक्त, पारदर्शी और विकसित राष्ट्र बन सकेगा।

BJMC - 1990-91

अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में साख बनाये रखने की चुनौती

पंकज कुमार पाठक

इस लेख की शुरूआत अगर ऐसे की जाए, भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इस शुरूआत से लेख कम निबंध ज्यादा लगने लगेगा। देश में मौजूदा पत्रकारिता की तुलना दुनिया भर से करनी हो, तो और कहा भी क्या जाए। अगर किसी विदेशी पत्रिका या वेबसाइट के लिए इस विषय पर लिखा जाता तो शुरूआत ऐसे ही होती लेकिन यह लेख अपने घर में अपने साथियों, वरिष्ठ पत्रकारों के बीच पढ़ा जाना है फिर बात खुलकर होगी। पत्रकारिता हमें यह सिखाती है कि कोई बात कैसे कहनी है, कितनी कहनी है, किस भाषा में किस स्वर में कहनी है। आपकी भाषा, आपके शब्द तय होते हैं कि लिखा किसके लिए जा रहा है, और उसका उद्देश्य क्या है। अंतराष्ट्रीय मीडिया में भारत की स्थिति को समझने के लिए हमें किसी एक न्यूज चैनल, अखबार या न्यूज वेबसाइट की छवि को निकाल कर रखना होगा। हम इस पूरे भारत के परिपेक्ष में देखेंगे क्योंकि अक्सर मीडिया शब्द सुनते ही किसी खास का चेहरा सामने आने लगता है।

इस देश के विकास को हम जीडीपी से मापते हैं, आंकड़े समझाते हैं कि हम कहां थें, कहां हैं, और कहां जा रहे हैं। पत्रकारिता के तमाम दावों और उसकी मौजूदा स्थिति को अगर आंकड़े से समझें तो World Press Freedom Index (विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक) से समझ सकते हैं। कई लोगों ने पहले भी इस संबंध में सुना पढ़ा होगा लेकिन जो साथी पत्रकारिता में नए हैं उनके लिए बता दूं कि विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक हर साल अंतरराष्ट्रीय संगठन "Reporters Without Borders" (RSF) द्वारा जारी किया जाता है। इसका उद्देश्य यह आकलन करना होता है कि दुनिया के अलग–अलग देशों में पत्रकार कितनी स्वतंत्रता के साथ काम कर पा रहे हैं। इसमें तमाम तरह के दबाव, पत्रकारों की सुरक्षा जैसे कई अहम पहलुओं पर रेटिंग होती है।

अब आते हैं रेटिंग पर तो भारत को 2025 में 180 देशों की सूची में 151वाँ स्थान मिला। आप इस आंकड़े से आंकलन कर सकते हैं कि मौजूदा स्थिति में भारत के मीडिया की अंतराष्ट्रीय स्तर पर स्थिति क्या है। वैसे आंकड़े का खेल अगर आपको भी आता हो और इसे सकारात्मक रूप से पेश करना हो तो

हम ये कह सकते हैं कि भारत ने पिछली बार यानि 2024 की तुलना में 8 देशों को पीछे छोड़ा है। 2024 में भारत को 159 स्थान मिला था जबकि इस बार 151 है। अगर तुलना करें तो भारत का प्रदर्शन पिछली बार से सुधरा है।

ये तो हो गई अंतरराष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों की बात हालांकि इन आंकड़ों को भी आसानी से नकारा जा सकता है, यह कहते हुए कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया भारतीय मीडिया और यहां के राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर आलोचनात्मक रहा है। इसके पीछे अंतरराष्ट्रीय राजनीति है। ऐसे लोग और संस्था है जो भारत को विकसित होते नहीं देखना चाहती और मोदी विरोधी है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया में छपी कई रिपोर्ट को ऐसे ही नकारा गया है। हम अगर भारतीय मीडिया को अंतराष्ट्रीय मीडिया के परिपेक्ष से समझें तो हम इसे नकार नहीं सकते। अगर इस रिपोर्ट को विस्तार से पढ़ा जाए तो आसानी से समझा जा सकता है कि पत्रकारिता की दिशा तय करने वाले पत्रकार नहीं मालिक है। ये मालिक कौन है, RSF रिपोर्ट इस पर फोकस करती है। रिपोर्ट बताती है कि मीडिया राजनीतिक व आर्थिक शक्तियों के नियंत्रण में है। देश के कई बड़े कॉरपोरेट हाउस इस पेशे में आये। इस रिपोर्ट में भारत के साथ–साथ जिन देशों का जिक्र है उनमें लेबनान, आर्मेनिया, बुल्गारिया जैसे देश शामिल है।

अगर देश में पत्रकारिता की स्थिति को आसानी से समझना हो तो हम कैसे समझें। किसी बड़े उदाहरण की जरूरत नहीं है। आप झारखंड के किसी भी बड़े अखबार का सफर देखिए और आंकलन कीजिए। देश में मौजूदा पत्रकारिता की स्थिति लगभग यही है। मैं किसी अखबार का नाम नहीं लिखना चाहता क्योंकि नाराजगी का डर है। आप सोचिए, मैं एक् स्वतंत्र लेखक होते हुए भी किसी अखबार का नाम नहीं लिख रहा, जबकि यह नाराजगी ज्यादा दिनों की नहीं होगी। आप एक अखबार से कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वो किसी बड़े राजनेता, बड़ी कंपनी के खिलाफ बगैर रणनीति के खबरें लिख लेगा।

इस बात को और विस्तार से समझिए। इस देश में कोई भी समाचार पत्र, टीवी या न्यू मीडिया चलता कैसे है? किसी ना किसी को उसमें निवेश करना पड़ता है। इस पेशे में निवेश कौन करेगा। क्या इस पेशे से लाभ कमाना आसान है। बिल्कुल नहीं, हमने पत्रकारिता कि जब शुरूआत कि उसी वक्त पढ़ाया समझाया गया कि पत्रकारिता पेशा नहीं जिम्मेदारी है। मुफ्त में इस जिम्मेदारी को निभायेगा कौन? क्या आज के दौर में आप किसी ऐसे पत्रकार की कल्पना कर पा रहे हैं जो एक खादी के कुर्ते में दिन काट रहा हो। पत्रकारिता बदली है। विज्ञापन राजस्व के बड़े हिस्से पर टेक जायंट्स जैसे गूगल, फेसबुक, अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनिया हैं। अगर मौजूदा दौर की समस्या समझ पाएंगे तो पत्रकारिता की स्थिति भी समझ पाएंगे।

भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध जैसे हालात हुए। भारतीय और पाकिस्तानी मीडिया ने इसे कवर किया। दोनों के कवरेज को लेकर सवाल उठे। कई ब्रेकिंग न्यूज ब्रेक हो गए। मैं उन खबरों की हेडलाइन पर नहीं जाऊंगा लेकिन न्यूज चैनलों की विश्वसनियता तो खतरे में आ गई। इसका असर क्या हुआ, क्या हमने उन चैनलों को देखना बंद कर दिया जिन्होंने फेक न्यूज फैलाई, गलत खबर दिखाई। अगर भारतीय मीडिया अपना काम पूरी निष्पक्षता से करती तो अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को सुधारने के लिए एक विशेष टीम भेजनी नहीं पड़ती। यह काम भारतीय मीडिया पूरी जिम्मेदारी के साथ

आसानी से कर सकती थी। यह एक मौका था जब भारतीय मीडिया अपनी छवि सुधार सकती थी लेकिन ब्रेकिंग न्यूज की जगह सनसनी परोसने की होड़ में पत्रकारिता का मूल भाव कहीं पीछे रह गये।

हम पाकिस्तानी, बांग्लादेशी, चीन की मीडिया से खुद का आंकलन नहीं कर सकते। भारत दुनिया का सबसे मजबूत पत्रकारिता वाला देश बन सकता है। सवाल है कैसे! इसका सबसे सरल और सहज जवाब है, समस्या को समस्या मानना होगा। नकारने से बेहतर है कि हम समझें कि मौजूदा दौर की पत्रकारिता की दिशा क्या है। इसका एक बड़ा हल तो मुझे सोशल मीडिया लगता है। कई बड़े मीडिया हाउस की गलत खबरों को कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से सोशल मीडिया पर फैक्ट चेक कर सकता है। सोशल मीडिया एक मजबूत टूल के रूप में उभरा है। हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपनी समझ, अपनी जानकारी के आधार पर सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। गलत खबर चलाने वाले अखबार, टीवी चैनल और न्यू मीडिया को ना सिर्फ देखना और पढ़ना बंद करें बल्कि खुलकर इस विषय में सोशल मीडिया पर भी लिखें।

BJMC - 2011-12

डिजिटलाइजेशन से सशक्त होता पारंपरिक मीडिया

प्रियंका तिवारी

डिजिटल मीडिया आने के बाद आज हमारे समाज में सोशल मीडिया और पारंपरिक मीडिया की भूमिका और कार्यशैली को लेकर विचार विमर्श होने लगे हैं। इसके फायदे और नुकसान पर चर्चाएं हो रही है। पारंपरिक मीडिया को जहां चौथा स्तंभ कहा जाता है तो वहीं सोशल मीडिया के पक्षकार ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर विलियम एच डटन ने इसे लोकतंत्र का पांचवां स्तंभ की संज्ञा दी है। उनका तर्क है कि सरकार को डिजिटल मीडिया ने पहले के मुकाबले ज्यादा जवाबदेही और पारदर्शी बनाया है। लोगों को पत्रकार बनाया है। जिससे हमारा लोकतंत्र और मजबूत हुआ, उसके साथ ही पारंपरिक मीडिया को भी विस्तार दिया। उसके सामग्री को विस्तार दिया, आज पारंपरिक मीडिया चलाने वाले संस्थान यूट्यूब, फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम के माध्यम से अपने प्रोग्राम का प्रचार प्रसार कर सकते हैं। डिजिटल मीडिया के आने से पारंपरिक मीडिया में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं।. डिजिटल मीडिया ने जनसंचार के परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन, और अन्य डिजिटल तकनीकों की वृद्धि ने मीडिया की अवधारणा को नया रूप दिया है और इसके परिणामस्वरूप जनसंचार के तरीकों, साधनों और दर्शकों के साथ संवाद के तरीके में गहरा परिवर्तन आया है।

डिजिटल मीडिया का आगमन ना केवल सूचना प्रसारण के तरीकों को बदल रहा है बल्कि यह जनसंचार उद्योग के व्यवसाय मॉडल, सामग्री निर्माण, और वितरण रणनीतियों को भी पुनः परिभाषित कर रहा है। पहले, जहां समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन जैसे पारंपरिक माध्यमों ने प्रमुख भूमिका निभाई वहीं अब डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सूचना के प्रवाह को अधिक त्वरित और सुलभ बना दिया है। डिजिटल मीडिया के जरिए ही अरब स्प्रिंग, ब्लैक एंड लाइव्स, डमम ज्वव जैसे कैंपेन चलाए गए।

आज डिजिटल मीडिया ने सूचना के वितरण में नवाचारों को जन्म दिया है, जैसे कि सोशल मीडिया के जरिए तात्कालिक अपडेट, इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग, और डिजिटल विज्ञापन के नए तरीके, इन नवाचारों ने मीडिया के व्यापारिक दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है, जिसमें डेटा एनालिटिक्स और लक्षित विज्ञापन की तकनीकें प्रमुख हैं। डिजिटल मीडिया आने से पारंपरिक मीडिया को कई मायनों में फायदा पहुंचाया है। जिसमें सूचना का त्वरित वितरण, प्रवेश और पहुंच में सुधार, लक्षित विज्ञापन और डेटा एनालिटिक्स, सामग्री निर्माण और वितरण में विविधता, पाठक और दर्शकों के साथ इंटरेक्टिविटी, कम लागत और लागत–प्रभावी समाधान, आसान विश्लेषण और रिपोर्टिंग शामिल है।

हालांकि ऐसा नहीं है कि डिजिटल मीडिया के आने से पारंपरिक मीडिया को चुनौतियां नहीं मिल रही है.... इसके आने से कई समस्याएं भी उभर कर सामने आई है। जिससे खबरों की विश्वसनीयता को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। आज फेक न्यूज की बाढ़ आ गई है, जिसकी चपेट में इलेक्ट्रानिक मीडिया भी आ चुकी है। डेटा सुरक्षा और गोपनीयता, विज्ञापनदाताओं की चुनौतियां, सामग्री की गुणवत्ता की

समस्या, संविधानिक और कानूनी मुद्दे शामिल है। डिजिटल मीडिया में गेट कीपिंग थ्योरी को नजरअंदाज किया जाता है, जिसे पारम्परिक मीडिया में हम सम्पादकीय नियंत्रण कहते हैं। आज सोशल मीडिया में कोई भी कैसा भी कंटेंट डाल सकता है। कई बार ये कंटेंट समाज, सरकार और देश के लिए नुकसानदायक साबित होता है।

डिजिटल मीडिया ने कई नई संभावनाएं भी पैदा की हैं, जो न केवल सूचना प्रसारण के तरीकों को पुनर्निर्मित कर रही हैं, बल्कि व्यवसाय के अवसरों और दर्शकों के साथ बातचीत के तरीकों को भी बदल रही हैं, जैसे कि फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन जैसे प्लेटफार्म्स ने दर्शकों के साथ सीधा संवाद स्थापित करने के नए तरीके प्रदान किए हैं, इन प्लेटफार्म्स पर उपयोगकर्ता टिप्पणियां, प्रतिक्रियाएं, और साझा करने की सुविधाएं मीडिया के साथ अधिक सक्रिय और इंटरेक्टिव संबंध स्थापित करती हैं, इसके साथ ही लाइव स्ट्रीमिंग और रियल–टाइम इंटरेक्शन के जरिये दर्शकों को घटनाओं और समाचारों को वास्तविक समय में देखने और सहभागिता करने की सुविधा देती हैं। डिजिटल मीडिया में वीडियो कंटेंट की लोकप्रियता बढ़ रही है, जिसमें व्लॉग्स, डॉक्यूमेंट्रीज, और शॉर्ट वीडियो शामिल हैं। इसके अलावा, पॉडकास्ट्स ने ऑडियो कंटेंट के माध्यम से गहराई से विचार–विमर्श और चर्चा की सुविधा प्रदान की है।

मौजूदा समय में टेलीविजन पर भी पॉडकास्ट ऑन एयर होने लगे हैं, पहले जो खबरें अखबारों के जरिए अगले दिन पाठकों तक पहुंच पाती थीं। उसका डिजिटल फॉर्मेट ईपेपर के रूप में आ गया,जो तुरंत पढ़ने को मिल जाता है। वहीं खबरें अब वेबसाइट पर तुंरत पढ़ने को मिल जाती है। आज टेलीविजन, रेडियों और अखबार चलाने वाली संस्था अपने दर्शकों, पाठकों, श्रोताओं से सीधा जुड़ रही है। फैन फॉलोइंग का निर्माण कर रही है, राजस्व के नए रास्ते तलाश रही है। 24x7 उपलब्धता, कहीं भी कभी भी रह रही है। नई तकनीक जिसमें AI है, उसका प्रयोग किया जा रहा है। आज कई टेलीविजन चैनल AI एंकर के जरिए नए–नए प्रोग्राम का निर्माण कर रही है....कई चैनल AI के जरिए वाइस ओवर, कॉमेडी फिल्म, वीडियो, डॉक्यूमेंट्री निर्माण कर रही है। जिससे कंटेंट की डिमांड बढ़ी है, टीवी, रेडियो, अखबार की एक सीमित क्षेत्र है। दायरा सीमित है, हालांकि ये सच है कि डिजिटल मीडिया की कुछ चीजें नकारात्मक भी सामने आई है। जिसको लेकर हमारे समाज और सरकार को ध्यान देने की जरूरत है।

MJMC - 2016-18

मीडिया में इन्फ्लुएंसर का प्रभाव कहाँ तक ?

शशी भूषण कुमार

आज के दौर में इन्फ्लुएंसर युवाओं के बीच में मानो गुरु या फिर उनके जिन्दगी के किसी भी समस्याओं का जैसे हल बन गया हो, जबकि मीडिया शब्द उस खम्बे की तरह है, जहाँ जनमानस को सुरक्षा और हक की लड़ाई में एक सारथी के तौर पर मदद करता है! मीडिया सिर्फ पेशा नहीं बल्कि एक जिम्मेवारी का नाम है, लेकिन वर्तमान डिजिटल युग में मीडिया की परिभाषा तेजी से बदल रही है। पहले मीडिया का मतलब अखबार, रेडियो, टेलीविजन और पत्रिकाएं हुआ करता था। आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के विस्तार के साथ–साथ इन्फ्लुएंसर भी ''मीडिया'' का नया रूप बन गया हैं। अब बड़ी संख्या में लोग इन्फ्लुएंसर को ही मीडिया मानने लगे हैं, क्योंकि वह सीधे जनता से जुड़ते हैं, विचार साझा करते हैं और समाचार जैसी जानकारी भी प्रदान करते हैं।

तो सबसे पहले यह समझना होगा की आखिर इन्फ्लुएंसर होते कौन है और इनकी कार्यप्रणाली क्या है ? इन्फ्लुएंसर वे लोग होते हैं, जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स – जैसे यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर, फेसबुक या अन्य सोशल प्लेटफॉर्म पर सक्रिय रहते हैं और उनके लाखों फॉलोअर्स होते हैं। ये फॉलोअर्स इनकी बातों पर विश्वास करते हैं, इन्हें फॉलो करते हैं और इनके द्वारा बताए गए उत्पादों या विचारों को अपनाते हैं। ये इन्फ्लुएंसर फैशन, फिटनेस, राजनीति, शिक्षा, मनोरंजन और समाज के अनेक क्षेत्रों में सक्रिय रहते हैं।

अब बात ये है की आखिर क्यों लोग इन्फ्लुएंसर को भी मीडिया समझने लगे हैं? इसके उतर में कई बिंदु हमारे सामने उभर कर आते हैं जिसमें मुख्य रूप से –

1. **सीधी पहुँच** : इन्फ्लुएंसर बिना किसी संपादकीय फिल्टर या संस्था के सीधे जनता से जुड़ते हैं और उनकी बात तुरंत लाखों लोगों तक पहुँचती है।
2. **विश्वास और जुड़ाव** : पारंपरिक मीडिया अक्सर एकतरफा संवाद करता है, जबकि इन्फ्लुएंसर दोतरफा संवाद करते हैं – वे अपनी बात रखते हैं और तुरंत चैटबौट या कमेंट सेक्शन में प्रतिक्रिया भी लेते हैं। इससे दर्शकों में उनके प्रति अपनापन और विश्वास बढ़ता है।
3. **तत्कालिकता और सक्रियता** : जहां पारंपरिक मीडिया में खबरों के लिए प्रक्रिया होती है, वहीं इन्फ्लुएंसर किसी भी विषय पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं – चाहे वह कोई सामाजिक मुद्दा हो या राष्ट्रीय घटना।
4. **वैयक्तिक शैली** : इन्फ्लुएंसर खबरों को अपने अंदाज में प्रस्तुत करते हैं – आसान भाषा, ह्यूमर, भावनात्मक जुड़ाव और व्यक्तिगत अनुभवों से यह उन्हें लोगों के और करीब लाता है।

हालाँकि इसका प्रभाव क्या है यह समझना बेहद जरूरी है ?

वैसे इस बदलाव का एक पक्ष यह है कि इन्फ्लुएंसर ने आम लोगों को मीडिया की ताकत दी है।

अब सिर्फ पत्रकार ही सूचना का स्रोत नहीं हैं, कोई भी व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से बड़े स्तर पर जानकारी साझा कर सकता है।

वैसे तो नाबालिग और किशोरों पर सोशल मीडिया के इन्फ्लुएंसर का गहरा असर पड़ता है पर आज के दौर में आप जब देखेंगे तो हर 5 में से 3 लोग युवा पीढ़ी आम व्यक्ति की तुलना में इन्फ्लुएंसर पर ज्यादा यकीन कर बैठते है, लेकिन दूसरा पहलू यह भी समझना जरुरी है कि इन्फ्लुएंसर की जानकारी हमेशा तथ्यात्मक या निष्पक्ष नहीं होती। वे अकसर बिना पुष्टि किए खबरें शेयर करते हैं, ब्रांड प्रमोशन के लिए भ्रामक बातें करते हैं और कभी–कभी गलत जानकारी भी फैला देते हैं। इससे गलत धारणाएं बन सकती हैं और अफवाहें फैल सकती हैं।

आज के दौर में इन्फ्लुएंसर को मीडिया का नया चेहरा माना जाने लगा है इसमें कोई दो राय नहीं है और वे जनमत बनाने में भी सक्षम हैं, लेकिन उनके पास वह जिम्मेदारी नहीं होती जो एक पत्रकार या मीडिया संस्थान के पास होती है। ऐसे में जरूरी है कि हम इन्फ्लुएंसर की बातों को सोच–समझकर अपनाएं, उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाएं और पत्रकारिता व मीडिया की असली भूमिका को नजरअंदाज न करें। इन्फ्लुएंसर मीडिया हो सकते हैं, लेकिन वे मीडिया का विकल्प नहीं हो सकते।

MJMC - 2014-16

मां–बाप

फैजान खान

ना जाने इस दुनिया में कितनी ही शायरी मां पर लिखीं गईं, लेकिन जितनी कम जगह मिली किताबों में, दस्तावेजों में, कविताओं में, शेरों में, कवियों की पंक्तियों में, वो है बाप।

एक छोटा सा शब्द लेकिन बच्चे की पूरी कायनात अपने अंदर समेटे हुए, जब मां अपने पेट में बच्चे को 9 महीने रखती है तो बाप उसे 9 महीने अपने दिमाग में रखता है। अक्सर बच्चे बड़े होकर शिकायत करते है कि बाप थोड़ा कठोर दिल का होता है बच्चों को मारता है, डांटता है, चीखता है चिल्लाता है,लेकिन उसकी ये मार ये सीख देती है कि मैं इसलिए मारता हूँ ताकि दुनिया तुझे न मारे, तुझे वो सम्मान मिले जो तुझे मिलना चाहिए, जो मुझे न मिला हो। माना बाप सूरज की तरह सख्त, गर्म जरूर होता है लेकिन यकीन करो जब वो नहीं होता है तो मानो जिंदगी की शाम ढल जाती है। इसलिए अगर मां के कदमों के नीचे जन्नत है तो बाप उसी जन्नत का दरवाजा है ,..इसलिए भगवान ने भी इनके कदमों तले जन्नत रख दी है और नाम दिया मां–बाप।

BJMC - 2011-12

मीडिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस – फायदा या नुकसान

कनक राज पाठक

मीडिया एक ऐसे परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एआई जहाँ मीडिया के कामकाज को सुव्यवस्थित करने और दक्षता बढ़ाने की क्षमता रखता है, वहीं प्रतिदिन यह कई नई चुनौतियाँ भी पेश कर रहा है। मीडिया जैसे बौद्धिक जगत के लिए एआई एक ऐसी शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो धीरे–धीरे उनका गला घोंटते हुए आजीविका पर खतरा उत्पन्न कर सकता है। इसके पीछे कई ठोस कारण हैं, जो पत्रकारों और संपादकों के लिए एआई नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है।

शोध लेखन, संपादन जैसे पत्रकारीय कार्यों को एआई अब धीरे–धीरे अपने नियंत्रण में ले रहा है या यूं कहें कि मीडिया प्रकाशन जैसे कार्यों को पूरी तरह से बदलने का भी खतरा पैदा कर रहा है। सवाल यह उठता है कि पाठकों को जब सारी जानकारी एआई के माध्यम से मिल ही जाएगी तो उन्हें पत्रकारों, मीडिया समूहों या प्रकाशकों से जुड़ने की आवश्यकता क्यों होगी।

मीडिया घरानों में पत्रकारों की छंटनी इसलिए नहीं हो रही है कि उनका स्थान एआई ले रहा है लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि न्यूज रूम में एआई की मौजूदगी पत्रकारीय कर्म में लगे लोगों की आवश्यकता को कम कर रहा है।

मीडिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता

एआई मीडिया संगठनों के लिए रिपोर्ट तैयार करने, डेटा संकलन जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों में सहयोग प्रदान कर रहा है। जो कई तरह से फायदेमंद साबित हो रहा है, जिससे वे अधिक प्रभावी ढंग से अपना काम कर पा रहे हैं।

पलक झपकते रिपोर्ट तैयार

एआई सॉफ्टवेयर के माध्यम से पलक झपकते ही समाचार रिपोर्ट तैयार कर सकता है, खासकर उन विषयों पर जहाँ डेटा–संचालित जानकारी की आवश्यकता होती है, जैसे वित्तीय परिणाम, खेल स्कोर, मौसम रिपोर्ट और चुनाव अपडेट। यह पत्रकारों को दोहराव वाले कार्यों से मुक्त करता है, जिससे वे अधिक गहन और खोजी पत्रकारिता पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

डेटा विश्लेषण और ट्रेंड पहचानने में मदद

मीडिया संगठन बड़ी मात्रा में डेटा (जैसे उपभोक्ता व्यवहार, सोशल मीडिया ट्रेंड, सर्वेक्षण डेटा) का विश्लेषण करने के लिए एआई का उपयोग कर रहे हैं। एआई इन डेटावेस में छिपे ट्रेंड, पैटर्न और रुझानों की पहचान कर सकता है, जिससे पत्रकारों को नए तथ्यों के स्रोत जानने और दर्शकों की पसंद को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

पसंद के आधार पर कंटेंट की उपलब्धता

एआई एल्गोरिदम दर्शकों की पिछली गतिविधियों और पसंद के आधार पर व्यक्तिगत समाचार

फीड और सामग्री प्रदान कर सकते हैं। इससे पाठक और दर्शक अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं, क्योंकि उन्हें वह सामग्री मिलती है जो उनकी रुचियों से मेल खाती है।

रियल टाइम में ब्रेकिंग न्यूज और न्यूज ट्रेंड की पहचान

एआई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन स्रोतों पर उभरते हुए रुझानों, ब्रेकिंग न्यूज घटनाओं और महत्वपूर्ण घटनाओं का तुरंत पता लगा सकता है। यह मीडिया आउटलेट्स को महत्वपूर्ण घटनाओं पर तेजी से प्रतिक्रिया देने और समय पर रिपोर्टिंग करने में सक्षम बनाता है।

फैक्ट न्यूज और फेक न्यूज का सामना

गलत सूचना और डीपफेक के बढ़ते खतरे के साथ, एआई तथ्य–जांच प्रक्रियाओं में सहायता कर सकता है। यह बड़े डेटाबेस में जानकारी को क्रॉस–चेक कर सकता है और संभावित रूप से गलत दावों या मीडिया हेरफेर का पता लगा सकता है, जिससे मीडिया की विश्वसनीयता बनाए रखने में मदद मिलती है।

कंटेंट के निर्माण, संयोजन और वितरण में मदद

एआई विभिन्न प्लेटफार्मों (वेबसाइट, सोशल मीडिया, मोबाइल ऐप) के लिए शीर्षक, मेटा विवरणों और सामग्री लेआउट में मदद कर सकता है। यह तथ्य को सही दर्शकों तक सही समय पर पहुंचाने के लिए सर्वोत्तम वितरण चौनलों की पहचान भी कर सकता है।

संपादन और प्रूफरीडिंग

एआई संचालित उपकरण व्याकरण, वर्तन की त्रुटियों की पहचान कर सकते हैं, जिससे संपादन प्रक्रिया तेज और अधिक कुशल हो जाती है। यह पत्रकारिता सामग्री की समग्र गुणवत्ता में सुधार करता है।

मीडिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चुनौतियां

यह सच है कि एआई के इस्तेमाल से बौद्धिक जगत को आसानी हुई है, यह भी सच है कि बौद्धिक और मीडिया जगत में एआई का भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा है लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि एआई के कई फायदों के बावजूद, यह मीडिया उद्योग के लिए कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी पेश कर रहा है, जिसकी चर्चा आवश्यक है।

गलत सूचना और डीपफेक का प्रसार

एआई का सबसे बड़ा खतरा फर्जी सामग्री के निर्माण की इसकी क्षमता है। एआई आधारित डीपफेक वीडियो और ऑडियो इतने यथार्थवादी हो सकते हैं कि आम जनता के लिए सत्य और मनगढ़ंत के बीच अंतर कर पाना लगभग असंभव हो जाता है। यह मीडिया की विश्वसनीयता को गंभीर रूप से कमजोर करता है और गलत सूचना के तेजी से प्रसार को बढ़ावा देता है।

मानवीय स्पर्श और मौलिकता का अभाव

पत्रकारिता केवल समाचार और तथ्यों को प्रस्तुत करने का काम नहीं करता है बल्कि यह तथ्यों को बताने, संदर्भ प्रदान करने और मानवीय अनुभवकों और स्पर्श को समझते हुए विवेकपूर्ण तरीके से काम करता है, लेकिन एआई ऐसा नहीं कर सकता है। एआई डेटा–संचालित रिपोर्ट लिख सकता है, इसमें मानवीय सहानुभूति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, गहन आलोचनात्मक सोच और मौलिकता का अभाव होता है।

रोजगार का संकट और कौशल में बदलाव

एआई पत्रकारिता जैसे बौध्दिक कार्यों को खुद से संचालित कर सकता है, जिससे इस क्षेत्र की

कुछ नौकरियों के लिए खतरा पैदा हो सकता है। मीडिया पेशेवरों को अब एआई उपकरणों के साथ काम करने और डेटा विश्लेषण, एआई प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग और तकनीकी साक्षरता जैसे नए कौशल सीखने की आवश्यकता होगी। जो संगठन और व्यक्ति इन परिवर्तनों को नहीं अपनाएंगे, वे पीछे रह सकते हैं।

नैतिक दुविधाएं और एल्गोरिथम पूर्वाग्रह

एआई एल्गोरिदम उन डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं जिन पर वे बनाए जाते हैं। यदि प्रशिक्षण डेटा में अंतर्निहित पूर्वाग्रह (जैसे लिंग, नस्ल, या राजनीतिक पूर्वाग्रह) हैं, तो एआई द्वारा उत्पन्न या विश्लेषण की गई सामग्री में भी ये पूर्वाग्रह परिलक्षित हो सकते हैं। यह मीडिया की निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता को चुनौती देता है और नैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता पर जोर देता है।

कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा के मुद्दे

जब एआई बड़ी मात्रा में मौजूदा मीडिया सामग्री पर प्रशिक्षित होता है, तो यह सवाल उठता है कि एआई द्वारा सृजित सामग्री का कॉपीराइट किसका है। क्या यह मूल सामग्री के निर्माताओं के बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन करता है? यह मीडिया कंपनियों और सामग्री निर्माताओं के लिए अपनी सामग्री के मूल्य को बनाए रखने में एक बड़ी चुनौती है।

विश्वसनीयता और पारदर्शिता का संकट

जैसे–जैसे एआई जनित सामग्री अधिक प्रचलित होती जाएगी, पाठकों और दर्शकों के लिए यह पहचानना मुश्किल हो जाएगा कि सामग्री मानव द्वारा लिखी गई है या एआई द्वारा। पारदर्शिता की कमी से मीडिया पर सार्वजनिक विश्वास में गिरावट आ सकती है, क्योंकि लोग सामग्री के स्रोत और उसकी सटीकता पर संदेह कर सकते हैं।

तकनीकी निर्भरता और लागत

मीडिया संगठन एआई आधारित प्रौद्योगिकियों पर अधिक निर्भर हो सकते हैं, जिससे तकनीकी गड़बड़ियों या सिस्टम विफलताओं के जोखिम बढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एआई उपकरणों और विशेषज्ञता को अपनाना और बनाए रखना, विशेष रूप से छोटे और स्थानीय मीडिया आउटलेट्स के लिए, महंगा हो सकता है।

निष्कर्ष : निःसंदेह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मीडिया जगत के लिए एक गेम–चेंजर रूप में साबित हो रहा है। यह दक्षता, सटीकता और व्यक्तिगत जुड़ाव बढ़ाने की अपार संभावनाएँ प्रदान करता है। लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि यह हमारे समक्ष नैतिक, रोजगार और विश्वसनीयता से संबंधित महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी पेश कर रहा है। मीडिया संगठनों को एआई को एक उपकरण के रूप में देखना चाहिए जो मानवीय पत्रकारिता को सशक्त बनाता है, न कि उसे प्रतिस्थापित करता है। एआई साक्षरता को बढ़ावा देना, मजबूत नैतिक दिशानिर्देश स्थापित करना, पारदर्शिता सुनिश्चित करना और मानव–केंद्रित तथ्यों और मूल्यों को बनाए रखना इस बदलते मीडिया परिदृश्य में सफल होने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

MJMC - 2009-11

कविता

केशव कश्यप

आँखों को यकीन दिलाना पड़ता है

''आँखो को यकीन दिलाना पड़ता है,
कुछ करने के लिए शहर जाना पड़ता है,
यार सब पीछे रह जाते हैं,
सपनों को पकड़ कर घर की
देहलीज के पार जाना पड़ता है,

सरल सहज रहना आसान नहीं है,
जमाना झूठ बोलता है,
हाथ मिलाके सर हिलाना आसान नहीं है,
आंगन खाली है कोई है ही नहीं,
बुजुर्ग का होना घर में जरूरी होता है,

अंतिम समय की डोर थामे
युग को विश्राम होना था,
जाना सबका तय था,
पर अलविदा ऐसा नहीं कहना था,

वक्त ने बताया कि
रुका नहीं हुआ कभी किसी के लिए,
बचपन को मगर रुक जाना चाहिए
कुछ और वक्त के लिए।

BJMC 2011–12

कविता

मीरा किशोर

लेखनी की चुप्पी

लेखनी कहीं रुक सी गई है,
जीवन के थपेड़े कुछ यूँ पड़े हैं,
जैसे मौसम बदल जाए अचानक,
और शब्द बादलों में खो जाएं।

कोरे कागज पर बहुत कुछ है जो उभारना है,
भावनाएँ हैं, पीड़ा है, आशाएँ हैं,
पर स्याही जैसे सूख गई हो,
ठीक उसी तरह,
जैसे देर तक रखी चाक पर मिट्टी
अपना रूप भूल जाए।

मन करता है सब कुछ छोड़ चल दूँ,
कहीं दूर...
जहाँ न कोई पुकारे, न कोई रोके,
जहाँ सिर्फ मैं होऊँ,
मेरी डायरी हो,
और स्याही से भरी मेरी कलम।

कोई पहाड़ी शाम हो शायद,
या किसी सुनसान समुद्र की तटरेखा,
जहाँ लहरों की आवाज हो
और मेरे भीतर का सन्नाटा धीरे–धीरे
शब्दों में ढलने लगे।

कभी लगता है –
कहीं मैं खुद ही तो नहीं हूँ
अपनी लेखनी की सबसे बड़ी रुकावट?
जिन्हें कहना था,
वे जज्बात शायद भीतर ही किसी कोने में
घुट–घुटकर नींद में चले गए हैं।

पर जानती हूँ,
चुप्पी भी एक भाषा है,
और मौन की भी एक कविता होती है।

तो बस अब चलना है मुझे,
एकांत के उस ओर,
जहाँ फिर से बह सके मेरी स्याही,
जहाँ फिर से मेरी कलम
मेरी आत्मा की आवाज बन सके।

जहाँ थके हुए सपनों को
फिर से उड़ने की वजह मिल जाए,
और लेखनी...
फिर से जी उठे।

BJMC - 1991-92

कविता

डायन

अजय कुमार

उन्मादी भीड़ को
पता नहीं है
क्यों .... कोई ....
एक जीर्ण शीर्ण काया पर
कहर बरपा रहा है ?

सिर मुंडन की नयी परिभाषा गढ़कर
बेबस मंगरी बुधनी जितनी पर
कलंक का श्रृंगार सजा रहा है
बस सुन रखा है इससे... उससे....
पता नहीं ...किस....किससे ?

वह खा गई है
रामू का भैंसा, कालुआ का बाप
दीनू का मुर्गा, सुगिया की जान
और न जाने .....
क्या ? क्या ? खा गई है
मंगरी डायन ?

भीड़ के पागलपन पर
सदियों से बेखौफ खड़ा
मौसम के हर वार से लड़ा
हर दौर को करीब से पढ़ाने वाला
बूढ़ा पीपल
खुद से बंधे थर्थराती देह को देख कर
काँप जाता है

आदमी के बुद्धि विवेक पर
तरस खाता है
अस्तित्व की कसौटी पर
स्वयं को
आदमी से श्रेष्ठ पाता है
सोचता है .....
क्या ?
मंगरी सचमुच में है
डायन ?
हाँ .... तो .....
भूख के अजगर को निगलकर
क्यों नहीं बचा ली
पति और बेटे का
प्राण ?
कैसे ?

अस्मत लूटकर
बेखौफ घुम रहा है
आदमी के भेष में शैतान ?
क्यों नहीं चीर कर खा लेती है ?
वहशी दरिन्दे का कलेजा
और .....
बचा लेती है
मासूम बिटिया की
मुस्कान

या ?
चौराहे पर की उसकी
दो धुर जमीन
और
मुहाने का पक्का मकान ने....
मंगरी को बना दिया है
डायन ?

BJMC - 1996-97

कविता

अनुप्रिया शशि तिर्की

अपनी कहानी तुम स्वयं कहना

सर्द महीनों की उस सुबह में तड़के मुंह अंधेरे ही,
दिल में उत्साह भरे हमने यात्रा शुरू की,
उद्देश्य था, कि ढूंढ सकें विकास संचार के पहलू नए,
इच्छा हुई कि चलें उन वादियों में, जहां उगते सूरज की छटा बहे,

क्योंकि दूर शहर की भगमभाग में ये मौके मिलते हमें कभी कभार,
अगले ही क्षण दिखा हमें कोहरे को चीरता सूरज की बहार,
स्वर्ग सी अनुभूति लिए हम बढ़ चले साथ साथ,
ठंडी हवाओं की छुअन से कांप रहे थे हमारे हाथ पांव,

वहीं देखा था नन्ही सी जान, तुम्हें हमने पहली बार,
तुम्हारी मासूमियत में थी,
शांत पहाड़ी प्रदेश के घने जंगलों में बसे,
छोटे छोटे गांवों की अनकही कहानियां हजार,

खुरदरी बॉक्साइट की कंकड़ बिछी पगडंडियों पर,
तुम्हारे नंगे पांवों की चंचलता,
हड्डी भेदी वातावरण की नमी को,
सिर्फ अपनी स्कूल की वर्दी से मात देती तुम्हारी कर्मठता,

मानों उस भोर ने जिंदगी के नए मायने हमें सिखाए,
हम भी बचपन की यादों में कुछ लम्हे फिर दोहराए,
नन्ही परी! तुम जैसी जिद हमने न देखी थी कभी,
न जी पाए वैसे दिन ,जो तुम्हारी हिम्मत सी हो सजी,

तुम अकेले निकलती हो स्कूल की उस डगर पर,
कई खेत, पहाड़, घाटियां पार कर,
जब इस साहस को मिल जाए कलम और कागज की ताकत,
तो तुम बनोगी आवाज हर कहानी की जो अभी है केवल तुम तक,

तुम्हारी कहानी तुम्हें ही कहनी होगी प्यारी,
क्योंकि कल कोई कहेगा – तुम नहीं हो मुख्यधारा की सवारी,
तो तुम मुस्कुरा कर पूछना – क्या होती है ये मुख्यधारा?
और बताना – तुम्हारे मायने में क्या हैं मुख्यधारा,
मुख्यधारा – जहां हो सब जिंदा,
खुश और प्रकृति से जुड़ा,

कभी वो कहेंगे –
"तुम्हारे पुरखों ने रोका विकास,
नहीं होने दिया गांवों का विकास, हमारे हिसाब के अनुसार",
तुम फिर उसी निश्छल मुस्कान के साथ पूछना – क्या होता है यह विकास?
और बताना – तुम्हारे मायने में क्या है विकास,
ऐसा विकास – जिसमें प्रकृति से भी हो न्यायपूर्ण व्यवहार,

जब लोग कहें तुम हो पिछड़े, गरीब, लाचार,
तुम बताना – कि तुम्हारे गांव ने सहेजा,
प्रकृति की इज्जत, गीतों की विरासत,
और सादगी की असल सुंदरता बार–बार,
प्रकृति से ली साझेदारी की रीतें,
ना की कभी दोहन की अंधी प्रीतें,

ये हवा, ये पानी है शुद्ध और निशुल्क मिला,
फिर अधिक की चाह में प्रकृति का गर्भ चीरना कैसा ये सिलसिला?

तुम्हारी आंखों में संतोष, साथ ही एक आह्वान था हमने देखा,
मानों कह रही हो –
'आते रहो मेरे गांवों की ओर,
आंखे सेक जाओ वादियों से,
जिसे आबाद रखा है,
विकास की अलग परिभाषा समझने वालों ने,

लेकिन कीमत न लगाओ हमारे जीवन का,
किसी जानवर के जीवन मूल्यों से भी कम,
हमें उजाड़ो नहीं कभी फील्ड फायरिंग रेंज,
तो कभी खनिज खनन के नाम पर,

प्यारी बच्ची!
तुम बहुत पढ़ जाना,
ताकि तुम खुद बन सको आवाज,
अपने गांव, अपने लोगों, अपनी जमीन की,

विकास संचार के लंबे कसीदे जब पढ़े जाएं,
तुम्हारी विकास कथा – तुम्हारी कलम से गाई जाए!!

MJMC - 2019-21

कविता

अधूरी कविता

निवेदिता मिश्र

उसने जब जन्म लिया
घट चुकी थी बहुत सारी घटनाएँ,

युद्धबंदी थकने लगे थे
सर पीटकर उन काली दीवारों पर
कई बच्चे नागासाकी के कारण
जन्म के बाद भी रहे अजन्मे
इतिहास समझकर महात्वाकांक्षा और परिणाम
समझने की कोशिश हो रही थी,

अच्छा ये था
हम आजाद थे
कितने बच्चों का नाम आजाद रखा जाने लगा था
भगत नाम को भी रख रहे थे
और छिप कर ढूंढ रहे थे धर्मयुग में नेता जी का पता
कोई बहुत बड़ा बन चुका था
कोई रंक ही रह गया था,

सब किताबों में लिखा था
गीता प्रेस शिक्षाप्रद धार्मिक किताबों का विक्रेता था
स्कूल अस्पताल बिजली पानी
पुल सड़कें बन रही थी
सूख चुके थे आँसू जो बहे थे टूटने पर
कुछ अच्छा हो रहा था
आपूर्ति और मांग के बीच नेता चमक रहे थे,

अब वो बूढा हो गया है
और बातें बदल गयी है
अब पढ़ने की आदत कम
समझाने की आदत बढ़ रही है
रूप बदल कर घटनायें है और कराहता समय है
जिसके हाथ पैर को जकड़ रखा है
उन्माद नें
जाति नें
ढीठ समय की कविता अभी अधूरी है।।

BJMC 1996–97

डिजिटल दुनिया, सोशल मीडिया और मानव पहचान संकट

प्रभात कुमार सिंह

आज की डिजिटल दुनिया, विशेष रूप से सोशल मीडिया, ने हमारे जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इसने हमें वैश्विक स्तर पर जोड़ा है, सूचनाओं तक त्वरित पहुंच प्रदान की है, और अभिव्यक्ति के नए माध्यम खोले हैं। हालांकि, इसके साथ ही, इसने मानव पहचान के लिए गंभीर चुनौतियां भी खड़ी की हैं।

सोशल मीडिया ने हमें एक आभासी दुनिया में डुबो दिया है, जहां हम लगातार अपनी ऑनलाइन छवि को प्रस्तुत करने और बनाए रखने के लिए दबाव महसूस करते हैं। हम अपनी सफलताओं, खुशियों और आदर्श जीवन को दर्शाने के लिए फिल्टर और संपादित छवियों का उपयोग करते हैं। यह निरंतर प्रदर्शन, वास्तविक जीवन और आभासी जीवन के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देता है, जिससे हम अपनी वास्तविक पहचान से दूर हो जाते हैं।

सोशल मीडिया पर, हम दूसरों की तुलना में लगातार अपनी तुलना करते हैं। हम उनके आदर्श जीवन, सफलताओं और दिखावे से प्रभावित होते हैं, जिससे हमारी आत्म–छवि नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। हम अपनी कमियों और अपर्याप्तताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे आत्म–सम्मान में कमी आती है और पहचान का संकट पैदा होता है।

सोशल मीडिया ने हमें तत्काल संतुष्टि और सत्यापन की संस्कृति में धकेल दिया है। हम अपनी पोस्ट पर लाइक्स, कमेंट्स और शेयर की संख्या से अपनी कीमत को मापते हैं। यह सत्यापन की खोज, हमारी भावनाओं और पहचान को बाहरी स्रोतों पर निर्भर करती है, जिससे हम अपनी आंतरिक स्थिरता खो देते हैं।

सोशल मीडिया ने हमें झूठी पहचान बनाने के लिए भी प्रेरित किया है। हम अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए नकली प्रोफाइल और ऑनलाइन व्यक्तित्व बनाते हैं। यह हमें अपनी वास्तविक भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने से रोकता है, जिससे हम अपनी प्रामाणिकता खो देते हैं। डिजिटल दुनिया ने हमें निरंतर सूचनाओं और उत्तेजनाओं की बाढ़ में डुबो दिया है। हम लगातार सोशल मीडिया फीड्स, समाचार अपडेट और ऑनलाइन वीडियो से घिरे रहते हैं। यह निरंतर उत्तेजना, हमारी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को कम करती है, जिससे हम अपनी आंतरिक शांति और स्थिरता खो देते हैं।

इस पहचान संकट का सामना करने के लिए, हमें डिजिटल दुनिया और सोशल मीडिया के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें अपनी ऑनलाइन छवि को वास्तविक जीवन से अलग करना होगा और अपनी वास्तविक पहचान को महत्व देना होगा। हमें दूसरों की तुलना में अपनी तुलना करना बंद करना होगा और अपनी आंतरिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना होगा। हमें अपनी भावनाओं और विचारों को प्रामाणिक रूप से व्यक्त करना होगा और अपनी ऑनलाइन गतिविधियों को सीमित करना होगा।

हमें डिजिटल साक्षरता और आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करने की आवश्यकता है। हमें यह समझना होगा कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली जानकारी हमेशा सटीक या वास्तविक नहीं होती है। हमें अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति सचेत रहना होगा और अपनी गोपनीयता और सुरक्षा की रक्षा करनी होगी।

निष्कर्ष :

डिजिटल दुनिया और सोशल मीडिया ने मानव पहचान के लिए गंभीर चुनौतियां खड़ी की हैं। हमें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें अपनी वास्तविक पहचान को महत्व देना होगा, अपनी आंतरिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना होगा, और अपनी ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति सचेत रहना होगा। तभी हम डिजिटल युग में अपनी पहचान को बनाए रख सकते हैं और एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकते हैं।

BJMC - 2007-08

◆◆◆

कविता

जीवन का राग

उज्जवल कुमार

नृत्य की दुनिया में खो जाना,
अभिनय की गहराई में डूब जाना,
भावनाओं का ज्वार–भाटा,
शरीर की भाषा में कहना कहानियाँ

नृत्य के माध्यम से होती आत्मा की
अभिव्यक्ति,
भावनाओं का प्रदर्शन, हृदय की गहराई,
अभिनय की कला में खो जाना,
नृत्य की दुनिया में है सच्चाई।

नृत्य और अभिनय का संगम,
कला की दुनिया में है नया आयाम,
भावनाओं का प्रदर्शन,
नृत्य की बोली में है प्रेम कथन।

MJMC - 2013-15

कविता

सुमित रोहित

डिजिटल डगर पर सभ्यता की चाल

सोशल मीडिया की चमक में,
गांव भी अब जगमगाने लगे।
मोबाइल फोन हाथों में थामे,
बच्चे भी सपने सजाने लगे।।

मिटती जा रही सभ्यता यहां,
संस्कृति पर संकट गहराने लगा।
लाइक और शेयर की होड़ में,
युवाओं का पथ डगमगाने लगा।।

सीख और चेतावनियों के बीच,
मँझधार में जीवन समाने लगा।
कहीं विकास की पहुंची किरण,
कहीं तमस घर बनाने लगा।।

चला था डिजिटल अध्याय लिखने,
कागज का अस्तित्व खोने लगा।
करने लगें टाइप लोग यहां,
लेखन कौशल पर ग्रहण लगा।।

तब, अब और तब में फंसकर,
इंसान तन्हाइयों में सिमटने लगा।
वर्चुअल मोड ऑन जरूर हुआ,
रिश्तों को यूं हीं गंवाने लगा।।

चलो बनाएं एक ऐसा मंच,
बची रहें जड़ें, तकनीक के संग।
संरक्षित हो परंपराएं जहां ,
चलें सहचर बन सबके संग।।

MJMC - 2014-16

द्वापर युग से कलयुग तक ट्रांसजेंडर्स की चमकती पहचान

स्वाति सिंह (किकी)

द्वापर युग से कलयुग तक ट्रांसजेंडर की चमकती पहचान हमारे समाज में एक ऐसा विशेष और नाजुक वर्ग है जो हमारी हर खुशियों में अपनी तालियों की थाप से रौनक लाता है। हमारे नवजात बच्चे को निस्वार्थ और निश्चल भाव से भरपूर आशीर्वाद देते हैं। स्त्री एवं पुरुषों में समानता की बातें तो युग युगांतरो से चली आ रही है बाकी समस्याओं की तरह लोग इन्हीं भी सिर्फ बराबरी का अधिकार देने की बातें करते हैं मगर अधिकार देते नहीं। मैं बात कर रही हूं हमारे समाज के थर्ड जेंडर की। कहने को या फिर यह कहूं कि सिर्फ दिखाने को हमारी सरकार, देश और प्रिय संविधान ने किन्नरों को थर्ड जेंडर का दर्जा तो दे दिया।

लेकिन आज भी स्कूल, कॉलेजों एवं सरकारी दफ्तरों या फिर खुद को सामान्य कहने और समझने वाले लोगों के मुहल्लों में नजरे दौड़ाई जाए तो वहां आपको जेंडर नदारद ही नजर आएंगे। भले ही इन्हें आज हमारे कानून ने समानता का दर्जा दे दिया हो, लेकिन हमारी मानसिक रूप से पीड़ित जनता आज भी इन्हें स्वीकारने को तैयार नहीं है। किन्नरों की पूरी जिंदगी दूसरों के गलत खेलों का परिणाम भुगतते हुए निकल जाती है। सबसे पहले तो भगवान इनके साथ ऐसा घिनौना खेल खेलता है कि भावनाएं, चरित्र एवं सबसे अधिक इंसानियत होने के बावजूद भी यह अधूरे और असामान्य ही रह जाते हैं। दूसरी तरफ उनके खुद के सगे माता–पिता जो इन्हें धिक्कार कर एक दयनीय जीवन यापन के लिए छोड़ जाते हैं और बाकी रही सही कसर यह समाज पूरी कर देता है।

आज तमाम सरकारी योजनाएं एवं आदेशों के बावजूद भी किन्नरों की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आया। जो थोड़ा भी बदलाव है वह इन्होंने खुद के बलबूते पर किया है। मगर इतिहास गवाह है जब भी किन्नर अपने स्वाभिमान के लिए जंग के मैदान पर उतरे हैं, उन्होंने बड़े–बड़े शूरमाओं को धूल चटा दी है। महाभारत की अंबा का पुनर्जन्म शिखंडी के रूप में हुआ। उसने भीष्म पितामह को तीरों की शैया पर सोने के लिए मजबूर कर दिया। वहीं दूसरी तरफ अर्जुन ने बृहनलैला का रूप धरकर अपने अज्ञातवास को पूरा किया। आज मैं आपको भारत के उन महान ट्रांसजेंडर से मिलवाने जा रही हूं जिन्होंने परिवार वालों के द्वारा ठुकराए जाने के बाद भी खुद के दम पर पूरे समाज से लड़कर उसको स्थापित किया। उसने अपनी एक पहचान कायम की।

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी का जन्म 13 दिसंबर 1978 में महाराष्ट्र के ठाणे में हुआ। यह ट्रांसजेंडर समाज के लिए कार्य करने वाली आधिकारिक कार्यकर्ता, बॉलीवुड अभिनेत्री, भरतनाट्यम नृतिका, कोरियोग्राफर और एक प्रेरक प्रवक्ता है। वह किन्नर अखाडे की आचार्य महामंडलेश्वर भी है। वह संयुक्त राष्ट्र में एशिया प्रांत का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली ट्रांसजेंडर है। वर्ष 2008 में उन्होंने विधानसभा में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा के बारे में बात की ।लोगों को उनके प्रति अधिक मानवीय होना चाहिए। उन्हें इंसानों के रूप में हमारा सम्मान करना चाहिए और ट्रांसजेंडर के रूप में हमारे अधिकारों पर भी विचार

करना चाहिए। वह 2011 में इंडियन टेलीविजन के लोकप्रिय शो बिग बॉस में एक प्रतियोगी के रूप में आ चुकी है। इसके साथ ही वह कौन बनेगा करोड़पति एवं 'राज पिछले जन्म' का में भी शिरकत कर चुकी है।

शबनम बानो जिसे सभी प्यार से शबनम मौसी के नाम से जानते हैं। यह भारत की पहली ट्रांसजेंडर विधायक हैं। इनका जन्म 1955 में हुआ। शबनम मौसी के पिता एक पुलिस अधीक्षक थे। वह नहीं चाहते थे कि ऐसी संतान के कारण समाज में उनकी मान प्रतिष्ठा या सम्मान में कोई कमी आए इसलिए उन्होंने अपनी इस संतान का त्याग कर दिया। शबनम मौसी मध्य प्रदेश राज्य के शहडोल अनूपपुर जिले के सोहागपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनी गई। वह 1998 से 2003 तक मध्य प्रदेश राज्य के विधानसभा के लिए निर्वाचित सदस्य रही। वर्ष 2003 में उन्होंने मध्यप्रदेश में 'जीती जीताई' नामक अपनी स्वयं की राजनीतिक पार्टी की स्थापना की। जिसका शाब्दिक अर्थ है राजनीति जो पहले से ही जीती है। पार्टी ने 18 पृष्ठ का चुनाव घोषणा पत्र भी जारी किया। जिसमें यह दावा किया गया कि यह मुख्यधारा अलग क्यों है ? वर्ष 2005 में शबनम बानो की जिंदगी की संघर्ष की कहानी पर शबनम मौसी के नाम से एक फिल्म भी बन चुकी है। जिसमें मुख्य किरदार अभिनेता आशुतोष राणा ने निभाया है। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

मानवी बंदोपाध्याय का जन्म पश्चिम बंगाल के नैहाटी की एक शिक्षित परिवार में हुआ। वह भारत की पहली पीएचडी प्रोफेसर हैं जो एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के रूप में अपने अस्तित्व को स्वीकार करती है। मानवी ने विवेकानंद महाविद्यालय में बंगाली की एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया था। उन्होंने 2006 में अपनी पीएचडी पूरी करने के बाद पितृसत्ता और तीसरे लिंग के संबंध में जटिल धारणाओं के खिलाफ एक दशक के संघर्ष के बाद 7 जून 2015 को कृष्ण नगर महिला कॉलेज के प्रिंसिपल के रूप में कार्यभार संभाला।

पद्मिनी प्रकाश का जन्म तमिलनाडु के एक रूढ़िवादी परिवार में हुआ था। पद्मिनी एक ट्रांसजेंडर है इस सच्चाई को उनका परिवार स्वीकार नहीं कर पा रहा था। जिस कारण केवल 13 साल की छोटी सी उम्र में उन्होंने घर छोड़ दिया। पद्मिनी घर से तो खुदकुशी करने निकली थी लेकिन उनकी तकदीर को कुछ और ही मंजूर था। समाज के कुछ भले लोगों ने उन्हें बचाया और पढ़ाया लिखाया। उन्होंने अपनी पढ़ाई किसी तरह पूरी की और कॉमर्स में बैचलर डिग्री लेने के लिए गई। लेकिन दूसरे ही साल उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी क्योंकि वहां भी लोग उनके जेंडर को लेकर तंज कसते थे। पद्मिनी को आगे की पढ़ाई करने के लिए उनके पति नागराज प्रकाश ने प्रेरित किया। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा सबसे पहले उन्हें तमिल न्यूज चौनल लोटस ने अपने यहां एंकरिंग के लिए रखा और पहला न्यूज बुलेटिन 15 अगस्त 2014 को प्रसारित हुआ। इस तरह पद्मिनी भारत की पहली ट्रांसजेंडर न्यूज एंकर बन गई।

MJMC - 2022 - 2024

भारतीय ज्ञान परंपरा : अमूल्य धरोधर

डॉ. रूपक राग

भारत, एक ऐसा देश जिसकी जड़ें हजारों वर्षों के समृद्ध ज्ञान और संस्कृति में निहित हैं, आज विश्व पटल पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारी प्राचीन ज्ञान प्रणाली, जिसमें आयुर्वेद, योग, खगोल विज्ञान, गणित, और दर्शन जैसे विषय शामिल हैं, न केवल हमारे अतीत का गौरव है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक अमूल्य धरोहर है।

आज, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट, और सामाजिक असमानता जैसी जटिल चुनौतियों का सामना कर रही है, भारतीय ज्ञान प्रणाली एक नई रोशनी प्रदान कर सकती है। आयुर्वेद, जो प्राकृतिक उपचार और समग्र स्वास्थ्य पर जोर देता है, आधुनिक चिकित्सा के साथ मिलकर एक अधिक संतुलित और प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। योग और ध्यान, जो मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं, तनावपूर्ण जीवनशैली में शांति और स्थिरता ला सकते हैं।

खगोल विज्ञान और गणित में हमारे पूर्वजों का योगदान आज भी वैज्ञानिकों को प्रेरित करता है। शून्य और दशमलव प्रणाली की खोज, त्रिकोणमिति और बीजगणित के सिद्धांत, और ग्रहों की गति की गणना, ये सभी भारतीय ज्ञान के अद्वितीय उदाहरण हैं। आज, जब हम डेटा विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में जी रहे हैं, इन मूलभूत सिद्धांतों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में, उपनिषदों, भगवद्गीता, और बौद्ध दर्शन जैसे ग्रंथों ने मानव जीवन के गहरे प्रश्नों पर विचार किया है। वे हमें जीवन के उद्देश्य, नैतिकता, और आत्म–साक्षात्कार के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। आज, जब समाज भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के जाल में फंस रहा है, इन दार्शनिक सिद्धांतों की आवश्यकता और भी अधिक महसूस होती है।

हालांकि, हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारी ज्ञान प्रणाली को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करने और लागू करने की आवश्यकता है। हमें अपनी प्राचीन ज्ञान परंपराओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करना होगा। हमें अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना होगा ताकि हम अपनी ज्ञान प्रणाली के लाभों को आधुनिक दुनिया तक पहुंचा सकें।

शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करना एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। छात्रों को न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत और दार्शनिक परंपराओं के बारे में भी शिक्षित करना चाहिए। इससे हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकते हैं जो अपनी जड़ों से जुड़ी हो और साथ ही आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो।

सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, और नागरिक समाज को मिलकर काम करना होगा ताकि भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक नई दिशा दी जा सके। हमें अनुसंधान केंद्रों, विश्वविद्यालयों, और सांस्कृतिक संस्थानों को समर्थन देना होगा ताकि वे हमारी ज्ञान परंपराओं को संरक्षित और बढ़ावा दे सकें।

भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल हमारी पहचान का हिस्सा है, बल्कि यह मानवता के लिए एक अमूल्य उपहार भी है। हमें इसे संरक्षित करना चाहिए, इसे आधुनिक संदर्भ में लागू करना चाहिए, और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना चाहिए। यह न केवल हमारे देश को, बल्कि पूरी दुनिया को एक बेहतर भविष्य की ओर ले जा सकता है।

ई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समावेश

भारत की नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा में

एकीकृत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति न केवल हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का प्रयास करती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि हमारे छात्र अपनी जड़ों से जुड़े रहें और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार हों।

एनईपी 2020 का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह छात्रों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसमें बहु–विषयक शिक्षा पर जोर दिया गया है, जिससे छात्र विज्ञान, कला, और मानविकी के साथ–साथ भारतीय ज्ञान प्रणालियों का भी अध्ययन कर सकते हैं। इस नीति के तहत, आयुर्वेद, योग, खगोल विज्ञान, गणित, और दर्शन जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। छात्रों को न केवल इन विषयों के सैद्धांतिक पहलुओं के बारे में पढ़ाया जाएगा, बल्कि उन्हें व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाएगा। उदाहरण के लिए, वे आयुर्वेद के सिद्धांतों को समझने के लिए हर्बल गार्डन का दौरा कर सकते हैं, या योग और ध्यान के लाभों का अनुभव करने के लिए नियमित कक्षाएं ले सकते हैं।

एनईपी 2020 में स्थानीय भाषाओं और ज्ञान परंपराओं को भी महत्व दिया गया है। छात्रों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, और उन्हें अपने क्षेत्र की स्थानीय ज्ञान परंपराओं के बारे में भी पढ़ाया जाएगा। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करेगा, बल्कि छात्रों को अपने समुदाय और पर्यावरण के बारे में अधिक जागरूक भी बनाएगा।

इस नीति के तहत, शिक्षकों को भी भारतीय ज्ञान प्रणालियों के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्हें यह सिखाया जाएगा कि कैसे इन विषयों को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत किया जाए और छात्रों को एक समग्र शिक्षा प्रदान की जाए।

एनईपी 2020 का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है जो न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करे, बल्कि छात्रों को नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक जागरूकता के साथ सशक्त बनाए। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा में शामिल करके एक संतुलित और समावेशी शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करती है, जो छात्रों को एक बेहतर भविष्य के लिए तैयार करेगी।

भारतीय ज्ञान परंपरा में है वैश्विक चुनौतियों का समाधान

यह नीति भारतीय ज्ञान के समावेश को एक अवसर के रूप में देखती है, जो भारत को वैश्विक शिक्षा जगत में एक अद्वितीय स्थान प्रदान कर सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करके, हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकते हैं जो न केवल तकनीकी रूप से सक्षम हो, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध हो।

भारत की समृद्ध प्राचीन ज्ञान प्रणाली, जिसमें आयुर्वेद, योग, खगोल विज्ञान, गणित और दर्शन जैसे विषय शामिल हैं, आज की वैश्विक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नई शिक्षा नीति 2020 इस ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह नीति न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करती है, बल्कि छात्रों को उनकी जड़ों से जोड़कर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करती है। आयुर्वेद और योग जैसे विषयों को आधुनिक चिकित्सा के साथ मिलाकर समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जा सकता है, जबकि गणित और खगोल विज्ञान के प्राचीन सिद्धांत आज के तकनीकी युग में भी प्रासंगिक हैं। दर्शन और अध्यात्म के ज्ञान से जीवन के उद्देश्य और नैतिक मूल्यों को समझा जा सकता है। एनईपी 2020 का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है जो ज्ञान और कौशल के साथ–साथ सांस्कृतिक जागरूकता और नैतिक मूल्यों को भी बढ़ावा दे। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समावेश न केवल हमारी पहचान को मजबूत करता है, बल्कि मानवता के लिए भी एक बेहतर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है।

MJMC - 2009-11

स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन

'जोसेफ पुलित्जर ने कहा था कि किसी देश के लोकतंत्र की मजबूती देखनी हो तो पहले वहां की पत्रकारिता के स्तर को देखना चाहिये। उनका कहना था कि किसी देश का लोकतंत्र और वहां की पत्रकारिता एक साथ उठते और गिरते हैं।

वर्तमान युग में मीडिया और जनसंचार माध्यमों का विस्तार तेजी से हो रहा वास्तव में सभी विकासशील देशों में भारतीय मास कम्युनिकेशन और पत्रकारिता अत्यंत प्रगतिवादी है। विश्व के किसी भी मीडिया के सर्वोत्तम कार्यकलापों की चर्चा हो तो अपने देश की मीडिया का उदाहरण दिया जाता है। आज प्रिंट मीडिया के साथ–साथ वेब पत्रकारिता, रेडियो और टेलीविजन चैनलों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। संचार क्षेत्र में नित नये विकास क्रम ने पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में उच्चतर शिक्षा की जरूरतें उत्पन्न की है और पत्रकारिता एवं जनसंचार में विधिवत् शिक्षा की आवश्यकता महसूस होती रही है।

इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु 1987 में स्थापित पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में विद्यार्थियों के शिक्षण प्रशिक्षण के लिये निरन्तर प्रयासरत् हैं। विभाग ने सदैव आधुनिक पत्रकारिता के लिये स्वयं को अपडेट किया है, यहां प्राध्यापकों के अतिरिक्त उपलब्ध प्रतिष्ठित पत्रकारों एवं विषय विशेषज्ञों की सेवायें ली जाती हैं। विद्यार्थियों के उपयोग के लिये कम्प्युटर लैब की सुविधा उपलब्ध है। परिसर में वाई–फाई इंटरनेट के साथ ही विद्यार्थियों के समुचित प्रशिक्षण के लिये वीडियो–स्टूडियो उपलब्ध है, जहाँ वे समाचार पत्र–पत्रिका, वीडियो रिकॉर्डिंग, वीडियो एडिटिंग का प्रायोगिक अनुभव प्राप्त करते हैं। विभाग में एक समृद्ध पुस्तकालय भी है जहां विद्यार्थियों के जरूरत की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

हमारे पाठ्यक्रम

1. MAMC : MASTER OF ARTS IN MASS COMMUNICATION

   स्नातकोत्तर कला जनसंचार सीबीसीएस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष (चार सेमेस्टरों में विभाजित) है।

अर्हता : विद्यार्थी जो किसी भी विषय में प्रतिष्ठा (ग्रेजुएशन) सहित उत्तीर्णता प्राप्त की है, या 10+2+3 का पाठ्यक्रम कम से कम 45 प्रतिशत अंक सहित पूरा किया है, नामांकन की अर्हता रखते हैं।

शुल्क

सामान्य वर्ग के लिये रू 17000 प्रति सेमेस्टर

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिये रू. 15000 प्रति सेमेस्टर

नामांकन शुल्क रू. 2000 (एक बार सिर्फ पहले सेमेस्टर में)

2. M.A. IN FILM STUDIES AND PRODUCTION

स्नातकोत्तर कला जनसंचार सीबीसीएस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष (चार सेमेस्टरों में विभाजित) है।

अर्हता : विद्यार्थी जो किसी भी विषय में प्रतिष्ठा (ग्रेजुएशन)सहित उत्तीर्णता प्राप्त की है, या 10+2+3 का पाठ्यक्रम कम से कम 45 प्रतिशत अंक सहित पूरा किया है, वे नामांकन की अर्हता रखते हैं।

शुल्क

सामान्य वर्ग के लिये रू 15000 प्रति सेमेस्टर

अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के लिये रू. 13000 प्रति सेमेस्टर

नामांकन शुल्क रू. 2000 (एक बार सिर्फ पहले सेमेस्टर में)

3. BJMC : Bachelor (B.A. Hons.) in Journalism and Mass Communication

पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष (छह सेमेस्टरों में विभाजित) है।

अर्हता : विद्यार्थी जो किसी भी विषय में 10+2 या इंटरमीडिएट का पाठ्यक्रम कम से कम 45 प्रतिशत अंक सहित पूरा किया है, वे नामांकन की अर्हता रखते हैं।

शुल्क

सामान्य वर्ग के लिये रू 12000 प्रति सेमेस्टर

अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के लिये रू. 10000 प्रति सेमेस्टर

नामांकन शुल्क रू. 2000 (एक बार सिर्फ पहले सेमेस्टर में)

नामांकन विधि

चांसलर पोर्टल झारखंड https://jharkhanduniversities.nic.in से रांची विश्वविद्यालय (RU) के मास कम्युनिकेशन विभाग के लिये ऑनलाइन आवेदन करें। प्रवेश हेतु विद्यार्थियों की मौखिकी का प्रावधान है। मौखिकी में सफल विद्यार्थी ही नामांकन के योग्य माने जायेंगे। मौखिकी में समसामयिक संदर्भों से संबंद्ध प्रश्न पूछे जायेंगे।

आरक्षण : राँची विश्वविद्यालय द्वारा विहित परिनियमों के निर्वाह का प्रावधान है।

पढ़ाई का माध्यम : हिन्दी तथा अंग्रेजी।

विशेष जानकारी के लिये हमारे वेबसाईट www.djmcru.org.in को देख सकते हैं।

चंद्रशेखर आजाद दुर्गा पूजा समिति के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रांची के **मेन रोड स्थित चंद्रशेखर आजाद चौंक** पर भव्य दुर्गा पूजा का आयोजन किया जा रहा हैं, जिसमे इस वर्ष का थीम हैं

जीवन एक यात्रा है –
जीवन का हर क्षण माँ का ही रूप है
कभी कोमलता में, कभी विसर्जन में

रमेश सिंह (अध्यक्ष)

चंद्रशेखर आजाद दुर्गा पूजा समिति

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

झारखण्ड आदिवासी महोत्सव

2025

जहां वाणी संगीत और चलना है नृत्य

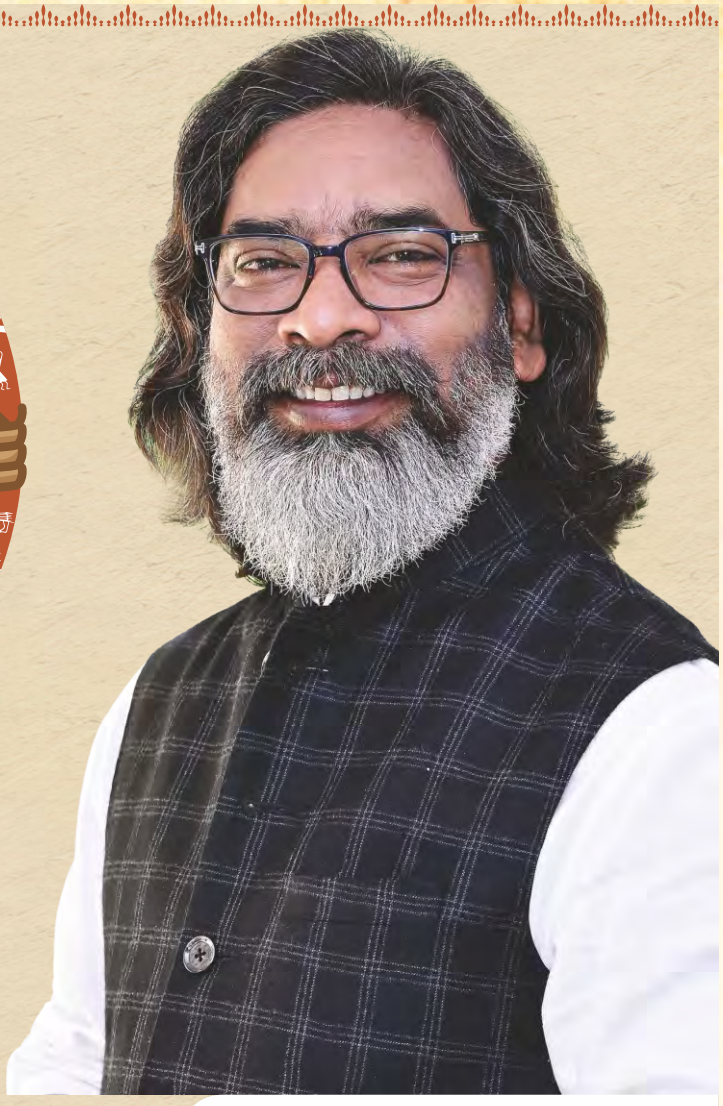

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

गौरवशाली
आदिवासी संस्कृति, प्रकृति, जीवन दर्शन
की झलकियां

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

Printed by : presssubhash@gmail.com # 0651-3175849